प्रस्तावना

प्रगट हो कि नारायण की कृप
वैद्यक ग्रन्थ वृहद्रसराज महोदधिके
चार अधिकार (१ वातादि दोष तथ
२ रसायन, ३ रोगा कर्षण, ४ पाक
इसी प्रकार इस दूसरे भाग में च
लिखे हैं, तहां-

१-पहले जड़ी बूटी प्रकाश नामक अधि
प्रकार की प्रसिद्ध जड़ी बूटियोंके द्वार
चिकित्सा वर्णन की है।

२-दूसरे स्त्री रोग चिकित्सा नामक अधिका
के गुप्त रोगोंकी चिकित्सा यथाप्रकाश व

३-तीसरे बाल रोग चिकित्सा नामक अ
बालकों के प्रसिद्ध रोगोंकी चिकित्सा वर्ण

४-चौथे कोकसार नामक अधिकारमें स्त्री पु
लक्षण तथा सुख पूर्वक जीवन व्यतीत
निमित्त संयोग आदि कुछ आवश्यक ब
वर्णन किया है॥

॥ शुभमित्यलम् ॥

सज्जनों का कृपापात्रः-

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ

बृहद्रसराज महोदधि के दूसरे भाग की अनुक्रमणिका।

विषय	पृष्ठ

पुस्तक मिलने का पता—

लाला श्यामलाल हीरालाल

श्याम काशी प्रेस मथुरा।

॥ श्रीः ॥

बृहत्

रसराज महोदधि

दूसरा भाग।

॥ मंगलाचरण ॥

दोहा
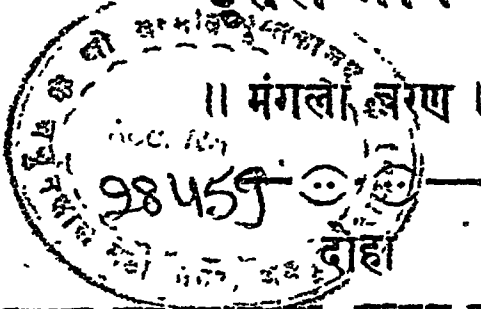
नारायण गुरु ध्याय उर, सन्तन पद शिर नाय।
दूसर भाग सुधारियह, लिखत सुअवसर पाय॥१॥
श्री रसराज महोदधि, ग्रन्थ वृहद अभिराम।
सीताराम यथामति, सुमरि हृदय घनश्याम॥२॥
भाग दूसरे में समझि, लिखत चार अधिकार।
बूटी जडी प्रकाश शुभ, है पहला अधिकार॥३॥
पुनि दूसर अधिकार में, नारी रोग प्रकाश।
बाल रोग तीसर लिखत, बहुरि कोक कृतसार॥४॥

अथ जडी बूटी प्रकाश ॥१॥

जगन्नियन्ता परमात्मा ने इस संसार में ऐसे उत्तम पदार्थ उत्पन्न किये हैं, जिनसे प्राणियों के

जीवन में बड़ी भारी सहायता मिलती है, कोई वस्तु ऐसी नहीं जो काम में न आवे, जड़ जीवों में वृक्षों से सर्वदा सबका उपकार होता रहता है, वृक्ष मात्र सब औषधियां हैं, यदि वृक्ष नहीं, तो प्राणियों का प्राणबचना दुर्लभ होजाय, औषधियों में अनेक जड़ी बूटी ऐसी हैं, कि तत्तकाल अपना गुण दिखाती हैं, प्राचीन समय में जड़ी बूटीयों से ही सैकड़ों प्राणियों की रक्षा होती रही, गांवों में जहां डाक्टर लोग नहीं पहुँचते वहां अबभी जड़ी बूटियों से ही रोग शान्त हो जाते हैं, धातुओं के फूंकने और धातुओं के संशोधन में जड़ी बूटियों से ही काम लिया जाता है, विना जड़ी बूटियों के रसायन क्रिया की सिद्धि नहीं होती है, । बूटी और जड़ी चिकित्सा का पूर्ण अंग हैं, चिकित्सा तीन प्रकार की है ।

'सादैवी प्रथमा सुसं स्कृतरसैर्या निर्मिता सद्रसैः ।
चुर्ण स्नेह कषाय लेह रचिता स्यान्मानवी मध्यमा॥
शस्त्र च्छेदनलास्य लच्मणकृता चाग धमासाऽसुरी
त्यायुर्वेद हस्यमतेदाखिलं तिस्र श्चिकित्सामताः ।

अर्थ—रसपद्धति में लिखा है कि चिकित्सा तीन प्रकार की होती है, १ देवी, २ मानवी, ३ आसुरी, देवी चिकित्सा वह है जो जड़ी बूटीयों से धातुओं को भली भाँति फूंक कर रस बनाये जाते हैं, उस रसों के द्वारा जो चिकित्सा की जाती है वह उत्तमा चिकित्सा है; पहली चिकित्सा दैवी है, इसी को देवताओं की चिकित्सा कहते हैं,। दूसरी मानवी (मनुष्यों की) चिकित्सा वह है जो चूर्ण, तेल, काढ़ा, अवलेह (चटनी) द्वारा की जाती है, यह चिकित्सा मध्यमा कही गई है, और तीसरी आसुरी चिकित्सा वह है जो क्षार और शस्त्र क्रिया (चीर फाड) द्वारा की जाती है जिसको जर्राही कहते हैं, यह चिकित्सा अधमा कही गई है।

एक समय महर्षि अत्रिजीकी धर्मपत्नी और महात्मा दत्तात्रेयजी की माता अनुसुइयाजी से नर्मदा से भेट हुई, नर्मदा परम विद्यावती थी उसका पति कौशिक ऋषि कुष्ठी था, नर्मदा ने अनुसुइया के चरण छूकर प्रणाम किया और बोली कि हे महादेवी ! तुम्हारे दर्शन से हमको सुख प्राप्त हुआ, केवल इतना दुःख है कि हमारे स्वामी का

रोग अच्छा नहीं होता, अनुसुइया बोली यह तुम क्या कहती हो ? नर्मदा ने उत्तर दिया माता ! यह सत्य है, । अनुसुइया ने कहा बेटी सुन ! पतिव्रता स्त्री के पति को कभी दुःखी अथवा क्लेशित नहीं होना चाहिये, तुम आपही उसकी वैद्य हो, जहां तुम उसके खाने पीने और शुद्ध वायु का प्रबन्ध रखती हो, साथ ही उसकी बिचार शक्ति को भी निर्मल बनाती जाओ, तुम्हारे सत्संग के प्रताप से वह कंचन हो जायगा, हे नर्मदा ! जितना लाभ मनुष्य को शुभ संकल्प से पहुंचता है, उतना औषधि भी नहीं पहुँचा सकती, सुनो ! आज मैं तुमसे एक गुप्त बात कहती हूं, औषधि तीन प्रकार की होती है, एक शुद्ध संकल्प अर्थात्

१ मनुष्य यह समझने लगे कि मैं अच्छा हूं, अच्छा हो रहा हूं, अथवा अच्छा हो जाउंगा, दूसरा प्राणी उसके बिचार को निर्मल करके अपनी संकल्प शक्ति से सहायता करता है, तो थोड़े दिनों के पश्चात् महारोगी भी अच्छा हो जाताहै,

---

१ प्रायः आरोग्य पुरुष अपने को रोगी समझ कर औषिध सेवन करते करते सच्चे रोगी बनजाते हैं, उन वहमियों का संकल्प ठीक नहीं होता, ।

यह देवताओं की चिकित्सा है, और प्राणियों के लिये बहुत ही उपयोगी है जिनका मन शुद्ध व पवित्र है, योगी इसे भली प्रकार जानते हैं, । दूसरे जडी बूटी की औषधियां अर्थात् वैद्य लोग रोग को देख भाल कर जडी बूटी देकर भला चंगा करते हैं, यह मनुष्यों की चिकित्सा है, ।

तीसरे मांस हड्डी मल,मूत्र रुधिर मदिरा आदिको औषधि बना कर खिलाना पिलाना यह राक्षसों की चिकित्सा है, यह तीनों चिकित्सायें अपने २ स्थान पर उपयोगी हैं. परन्तु पहली चिकित्सा उत्तमा और दूसरी मध्यमा है, हे नर्मदा ! तुम मेरी शिक्षा के अनुसार उसकी चिकित्सा करो,परमात्मा की कृपा से कौशिक भलाचंगा हो जावेगा. नर्मदा ने फिर अनुसुइया के चरण छुये और वह कौशिक को भी उसके दर्शन के लिये ले आई, अनुसुइया ने कौशिक को भी वही भेद बताया, थोडे ही दिनों के पश्चात कौशिक को निरोग करने में नर्मदा को कृत कार्यता प्राप्त हुई और वह सुख व आनन्द पूर्वक जीवन व्यतीत करने लगी, ।

महादेवी अनुसुइयाजी के बचनानुसार दव

ताओं की चिकित्सा तो बिरलेही सन्त महात्माओं के द्वारा होती है ।

परन्तु जड़ी बूटियों के द्वारा मनुष्यों की चिकित्सा होना दुर्लभ नहीं है, कठिनता यह है कि जड़ीबूटियों का पहिचानना, उनके गुणागुण जान कर काम में लाने वाले लोगों की कमी है, यद्यपि अनेक ग्रन्थों में जड़ी बूटियों के पहिचानने और गुणा गुण जानने के लिये उपदेश लिखे हैं तथापि 'बिनागुड के पुआ नहीं होते, इस कहा: वत के अनुसार गुरु के द्वारा बूटियों के पाहिचानने की परम आवश्यकता है, पाहिचानने बिना गुणा गुण ज्ञान की सफलता प्राप्त नहीं होती, । बहुत सी बूटियां ऐसी हैं कि प्रायः लोग पहिचानते नहैं परन्तु उनका गुण नहीं जानते यहां उन बूटियों का गुण लिखेंगे जिनको प्रायः लोग पहिचानते हैं परन्तु गुण नहीं जानते, क्योंकि अनेक बूटियों के चित्र (स्वरूप) बूटी प्रचार पुस्तक में छपे हैं, इस कारण संक्षेप रीति से प्रसिद्ध २ कुछ बूटियों का गुण,और उनके द्वारा कुछही चिकित्सा का प्रकार यहां हम वर्णन करतेहैं, ।

प्राचीन समय में साधारण और अत्यन्त उप-

योगी औषधियों के वृक्ष घर घर में लगाये जाते थे अब केवल शोभा के लिये कहीं कहीं कुछ गमले लगाये जाते हैं, इस देश में घर २ भांति भांति के पौधे लगाने की बहुत पुरानी प्रथा है, वे पौधे केवल शोभा ही के लिये नहीं लगाये जाते थे किन्तु बडे बडे रोगों पर अमूल्य औषधियों का काम देते थे जिन में होकर आने वाली वायु से घर में उत्पन्न होने वाले अनेक रोगों का नाश होता था जिनके पत्तों में गुण भरे हुए हैं, जिनकी जडसे अनेक रोगों का नाश होता है, जिन के फूलों में मनुष्य की अनेक पीडाओं को क्षण में दूर करने की शक्ति है ऐसे पौधों के लगाने की प्राचीन प्रथा नष्ट हो जाने से ही हमारे घर में अनेक व्याधियों ने डेरा जमाया है जिसके कारण हमारी आरोग्यता में तब से अब तक आकाश पाताल का अन्तर होगयाहै, ।

अनेक वैद्यक सम्बन्धी बातों को आवश्यक जान कर हमारे पूर्वजनों ने धर्म बतला कर सब को उस पर आरूढ किया है इससे भी बडा भारी उपकार होता है, जैसे तुलसी का वृक्ष है, उसकी

पूजा करना उसके नीचे दीपक जलाना बतलाया है यह उसके गुणों का आदर है।

१ तुलसी।

तुलसी के वृक्ष में वायु शुद्ध होने तथा अनेक गुण होने से ही हमारे पूर्वजों ने तुलसी का इतना गौरव रक्खा है इसी कारण हमारे यहां तुलसी वृक्ष लगाने के लिये बहुत ऊँचा चबूतरा बनाया जाता है, तात्पर्य इस का यही है कि पूजा करते समय और परिक्रमा देते समय तुलसी का स्वास्थ रक्षक वायु शरीर के भीतर जावे,।

तुलसी की रसायनिक परीक्षा करनेसे मालूम हुआ है कि उस में एक प्रकार का तेल है. जो वायु में उड सकता है इस तेल में कई विचित्र गुण हैं, तुलसी में मसे डांस मारने की विचित्र शक्ति है, तुलसी वृक्ष की हवा लगने से ही मसे डांस मरजाते हैं,।

तुलसी के प्रभाव से बिष की ज्वाला से मरण तुल्य होजाने वाला भी जी उठता है,।

'तुलसी शुक्ल कृष्णाच गुणे स्तुल्याप्रकीर्तिता,

तुलसी सफेद हो अथवा काली परन्तु गुणों में एक समान कही गई है,तुलसी कफ खाँसी, श्वास

धात बिकार कृमिरोग, मूत्र रोग, कुष्ठ, विष दोष, गुल्म, रुधिर विकार, हिचकी, ज्वर, बमन, मूत्रकृच्छ (सुजाक) पार्श्व शूल, निउमोनियां, मैलेरिया (शरत्कालीन ज्वर) सरदी से उत्पन्न अनेक रोग, श्लेष्मा (जुकाम) प्रदर, इन रोगों को दूर करै है, तुलसीकफ को निकालै है, मैलेरिया को दूर करै है, रक्त शोधक है, पाचक है, मूत्र कारक है, दीपन है पित्त जनक है वमन कारक है दाह निवारक और विष नाशक है, ।

श्लेष्मा आदि रोगों को दूर करने में तुलसी की शक्ति अमोघ है, । शीत ज्वर होने पर तुलसी के पत्तों का रस कुछ लवण के साथ पीस गरम कर सेवन करने से अन्य औषधि की आवश्यंकता नहीं रहती, ज्वर निवारण के लिये तुलसी एक महोपकारी औषधि है, विषैले जन्तुओं के दंश का कष्ट निवारण करने में तुलसी अति लाभदायक है, बिच्छू काला भौंरा आदि के डंक मारने से उत्पन्न हुई वेदना को दूर करने के लिये तुलसी के पत्तों का रस और लवण अमोघ औषधि है, ।

मृगी और हिस्टीरिया रोग में भी तुलसी दलका रस और सेंधा लवण प्रधान औषधि है, । अधिक गरमी में और धूप में बहुत घूमने से जो

वेदना उत्पन्न होती है उसको शान्त करने के लिये तुलसी उत्कृष्ट औषधि है,। तुलसी की मंजरी कारस और सेंधा नमक नाक में प्रवेश कराने से तुरन्त अचेतनता दूर होजाती है,। तुलसी की मंजरी और गरम जल अजीर्ण रोग के लिये बहुत लाभदायक है, सर्दी हो जाने पर तुलसी और अदरख सवेरे शाम सेवन करने से सरदी शान्त हो जाती है,।

बालक के कानमें पीडा होतो तुलसी का रस ३० बूंद, कपास के कच्चे फल का रस २० बूंद, लहसन का रस ३० बूंद, शहत ३० बूंद मिला कर कान में दो तीन बूंद डालै, शहत नहो तोभी कुछ हानि नहीं,।

एक बंगालिन के नाक से बड़ी दुर्गन्धि निकलती थी उसके मुँह के समीप मुँह नहीं किया जाता था, बाबू बंगाली ने अपनी स्त्री के इस रोग को दूर करने के लिये तीन वर्ष तक डाक्टरों और वैद्यों की अनेक औषधियां कीं, परन्तु रोग शान्त नहीं हुआ, तव चिकित्सा कराने के लिये दम्पतीने कलकत्ते जाना स्थिर किया,। कलकत्ते जारहे थे, मार्ग में वृष्टि होने लगी इससे एक बढ़ई

के घर पर ठहर गए, बढ़ई की बूढी माताने कल कत्ते जाने का कारण पूछा,बाबू ने कारण सुनाया. सुनतेही बुढिया ने कहा कि बाबू! दो तीन दिन में तुम्हारी स्त्री का रोग खोदूंगी, बुड्ढी ने काली तुलसी का रस और सेंधा नमक पीसकर ताँबे के अर्धे में गरम करके नाक में चार पांच बूंद डाल दिया, दो घंटे उपरान्त फिर डाला, इसी प्रकार बारवार नाक में औपधि प्रवेश कराइ, जब औपधि का असर हुआ कि स्त्री की नाक से अति दुर्गन्धि मय कडा कडा जमा हुआ श्लेष्मा देखते देखते गिर पडा, श्लेष्मा गिरते ही नाक पतली होगई दूसरे दिन खांसी भी बन्द होगई, माथे का दर्द जाता रहा, श्लेष्मा के रुक जाने से नाक में जो घाव होगये थे वे भी आराम होगये चार दिनमें बंगालिन का नासिका रोग दूर होगया, ।

शिरपीडा को दूर करने के लिये तुलसी के सूखे पत्तों का नाश लेना चाहिये, ।

दाद खाज को खोने के लिये तुलसीकेपत्तों का रस लगाना चाहिये, ।

बालक के पेट में कीडे हों तो तुलसी के पत्तों का रस गरम करके पिलाना चाहिये, ।

गले में पीडा हो तो तुलसी के पत्तों का रस शहत मिलाकर चटाना चाहिये,।

पेट में पीडा हो तो तुलसी के पत्तों का रस और अदरख बराबरले गरम कर पिलावे, यदि सदैव इसका सेवन करावै तो बालक के पेट में कोई रोग कभी नहीं होवै,।

खांसी आती हो तो तुलसी की मंजरी अदरख के रस में पीसकर शहतमें मिलाकर चाटै,।

बच्चों का पेट फूल जाता हो तो तुलसी दलका रस गुनगुना कर पिलावै तो दस्त साफहो।

कान में पीडा हो तो तुलसीदल का रस गुन गुना कर कान में डालना चाहिये,।

सांप के विष को शान्त करनेके लिये तुलसी की जड का रस लगाना और पीना चाहिये,।

कफ की अधिकता हो तो तुलसी के पत्ते का रस बडी इलायची के दाने पीस कर शहत के साथ चाटने से कफ निकल जाता है,।

सब प्रकार के ज्वर में तुलसीदल और काली मिर्च खावै, अथवा दोनों को पीस कर गुनगुना कर पीवै, तो सब प्रकार के ज्वर शान्त होते हैं,

काली तुलसी का रस शरीर पर लगाने से मच्छर नहीं काटते; ।

तुलसी के पत्तों की दूध में चाय बनाकर पीने से शीत ज्वर में बहुत लाभ होता है, ।

पीनस रोग में वन तुलसी के बीजों का हुलास सूंघने से नासिका के कीडे निकल पडते हैं, ।

इसी प्रकार तुलसी वृक्ष में अनेक गुण हैं, जो विस्तार के कारण यहाँ लिखे नहीं जासकते, ।

वृक्षों में जीवन शक्ति और संवेदन शक्ति तथा श्रवण शक्ति (सुनने की सामर्थ्य) भी है, यह पढकर लोगों को आश्चर्य होगा और नई रोशनी वाले तो तुरन्त ही कह बैठेंगे कि वृक्ष जडजीव हैं उन में चैतन्य जीवों की सी शक्तियां नहीं हैं यह असम्भव है, (ऐसा नहीं हो सकता) परन्तु आंखों देखी बात सुनियै कि हमारे नौधा बाग में एक आम का पुराना बृक्ष था उस में पांच वर्षसे फल नहीं आते थें तब यह सलाह ठहरी कि इस साल यह ब्रक्ष काट डाला जाय एक नौकर ने जाकर दूसरे दिन उसको काटना चाहा फिर कुछ सोच विचार कर हमारे पुरुपाने उस नौकर से कहा कि अच्छा इस साल इस ब्रक्ष को रहने दो, पारसाल इसको

काटलेंगे, दूसरे वर्ष उस वृक्ष में बौर देख पड़ा तो उस वृक्ष को रहने दिया, उस में इतने फल आये, कि जिससे चित्त प्रसन्न हो गया वह पुराना वृक्ष अबतक है, तीसरी साल उसमें भलीभांति बौर आकर फल लगते हैं, इस दृष्टान्त से बुद्धिमान जन समझलेंगे कि वृक्षों में कैसी दैवी शक्ति है, ।

तुलसी वृक्ष का अद्भुत गुण—

जिला चौबीस परगने के किसी गांव में एक उड़िया माली ने बगीचे में पड़ा हुआ एक आम खालिया जान पड़ताहै कि उस आमको किसी सांप वा बिषखपेर ने जहरीला कर दिया था, आम खाकर थोड़ी ही देर में वह मूर्च्छित हो गया, जब तक डाक्टर आवै तब तक उसकी नाड़ी बन्द होगई चेतन शक्ति नष्ट होगई, नाभि के पास कुछ धुकधुकी हो रही थी, डाक्टर का तो कुछ वशनहीं चला; किन्तु विष चिकित्सा हृदय भूषण भट्टाचार्य ने तुलसी का आधपाव रस निकाल उसके शरीर भर में मालिश की; और नाभि व मुँह में जितना भरा जा सका उतना भर दिया, थोड़ी देरबाद रोगी हिला और मुंह का रस पीने का प्रयत्न करने लगा दो घंटे में वह उठकर बैठगया और कहने लगा कि

शरीर में ज्वाला फुँकरही है, वह जलन भी थोडी देर में नष्ट होगई, तुलसी के इसी गुण के कारण महर्पियों ने इस की पूजा की विधि चलाई और प्रत्येक ग्रहस्थ को अपने घरमें लगाने की आज्ञादी, तो भी सैकडों घर तुलसी के वृक्ष से शून्य हैं यह बडे खेदकी बात है. ।

२ नीम--

नीम के वृक्षों में भी अनेक गुणहैं सब प्रकार के ज्वरों को नष्ट करने और व्रणको अच्छा करने के लिये नीम से बढकर दूसरी औषधि नहीं, नींम वृक्ष पर की गुर्च सब प्रकार के ज्वरों को नष्ट करती है, देववाणी में यह कहावत प्रसिद्ध है कि "गुडूची ज्वर निवारयति,, मित्तोय ज्वर को दूर करै है, नींम का पंचांग (मूल० शाखा० पत्र० फूल० फल) समयानुसार लेकर प्रतिदिन सेवन करने से कभी ज्वर नहीं सताता है ।

नीम की निबौली की मींगी उससें दूनी मिश्री प्रातः समय बासी जल से बिना कुछ खाये खावै, अथवा नीम की मोटी जड लेके उसमें छेद करै और उस छेदमें हींग धरै और नींम के चूर से बन्द कर कपड मिट्टी करै फिर दस सेर कंडों रख

कर फूक देवै शीतल होने पर निकाले और पीस कर रख छोडै, उसमें से आधरत्ती प्रमाण लेके पान में रख कर अर्धांग रोगी को देवै तो पन्द्रह दिन में अर्द्धांग रोगी अच्छा हो जाता है,।

नीम की साफ पत्ती ले के असली अथवा सरसों के तेल में जलाकर पीस लेवै, और कुछ मोम मिलाकर मल्हम बनालेवै, यह मल्हम घाव भरने घाव को अच्छा करने के लिये परम औपधि रूप है,। निबौली की मींगी कपूर, रसौत इनको बराबर लेके पीस लेवै और मस्सापर लगावै, तो खुजली आदि दोष दूर होकर बवासीर रोग जाता है,। नीमके जलसे स्नान और पत्ती घी में जलाय वह घी हमारी (ताऊन प्लेग) की औपधि है,।

नीम की पत्ती का रस शहत में मिलाकर पीने से पेट के कीडे नष्ट होजाते हैं,।

पक्कोवा यदि वापचको निम्बः सर्व व्रणेहितः ।

पका हो अथवा कच्चा नीम सब प्रकार के व्रणों (घावों) में हितकारी है, जर्राहों की जीविका में नीम वृक्ष से पूरी सहायता होती है, यदि नीम का अर्क सेवन किया जाय तो सब प्रकार का रुधिर विकार शान्तहो जाय,कभी फोडा फुंसी नहीं निकाले,।

३ पीपल—पीपल वृक्ष में भी अनेक गुण है, वृक्षों में पीपल वृक्ष सब से प्रधान है, सूर्य नारायण को जितना जल पीपल वृक्ष से प्राप्त होता है उतना जल दूसरे वृक्ष से नहीं प्राप्त होता, पीपल वृक्ष बहुत गीला होता है क्योंकि पृथ्वी में से जल का अधिक अंश पीपल वृक्ष में जाता है, इसीसे पीपल को देव वृक्ष कहते हैं, जैसे शुभ गुणों के कारण पृथ्वी का देवता ब्राह्मण है, इसी प्रकार अपने शुभ गुणों के कारण वृक्षों का देवता पीपल है, पूर्व समय में देवता लोग सोमरस को पीपलके पात्र में भरकर पीते थे, ।

पीपल वृक्ष की लकड़ी का प्याला बनाकर उसमें रात को जल भरदे और प्रातः काल पीवै अथवा थोड़ी देर दूध भरकर पीवै तो मस्तिष्क (मग्ज) में तरावट आती है, और वीर्य पुष्ट होता है, चर्म रोग दूर हो जाता है; । पीपल के फल और गोंद में पुत्रोत्पादनी शक्ति रहती है, पक्षी इसे बहुत खाते हैं, पक्षियों को भी इसके खाने से काम शक्ति जाग उठती है. पीपल के गोंद को छाया में सुखाकर पीस लेवै इस आटे का हलुआ

बनाकर खाने से शरीर में बहुत बल बढ़ता है, स्त्रियों के प्रदर रोग में यह हलुआ बड़ा लाभ दायक है, कमर का दर्द दूर हो जाताहै और मुँह के छाले इससे जाते रहते हैं, पीपल के फल के चूर्ण में बराबर मिश्री मिला दूध के साथ फांकने से अथवा शहत के साथ चाटने से भी हलुए के समान गुण होते हैं।

छोटे छोटे बालकों और गर्भवती स्त्रियों को यह अधिक गुण कारी होता है। पीपल के कोमल पत्तों की फुनगियों को औटाकर उसके काढ़ा में मिश्री की चासनी करै और उस चासनी में सीजी हुई फुनगियां डालकर उनका मुरब्बा बनावै इस मुरब्बे से वीर्य पुष्ट होता है, वंग, लोह और स्वर्ण भस्म से भी अधिक बल इसमें जानना चाहिये,।

पीपल वृक्ष की छाल घिसकर फोड़ा पर और पीपल का दूध बरतोड़ (जो बाल उखड़ जाने पर फोड़ा हो जाता है उस) पर लगाने से वह फोड़ा अच्छा हो जाता है, पीपल वृक्ष के सूखे वक्कल जलाय पानी में बुझाय उस पानी को छान कर पिलाने से उलटी बन्द होती है, पीपल में अन्य भी अनेक गुण हैं,।

४ अपामार्ग—इसको, ओंगा, चिर्चिरा, लट जीरा, और आंदा झारा भी कहते हैं, यह दोप्रकार का होता है १ लाल, २ सफेद, दोनौं का गुण एक समान है, ओंगा की दातून प्रतिदिन करने और ब्रह्मचर्य रहने से वचन की सिद्धि होती है, ।

खांसी और श्वास हो—तो लाल ओंगा की राख जलमें घोलकर छानै फिर उसको कडाही में भर कर चूल्हे पर चढादेवें जब पानी जलजाय तब उतार लेवै जो खार कडाही में रहजाय उसको निकास कर रखछोडै, यदि खांसी सूखी हो तो पान में रखकर देवै, और यदि खांसी तरहोतौ चार रत्ती प्रमाण लेके शहत के साथ देवै, एवं श्वांस रोग में भी चार रत्ती भर लेके शहत के साथ चाटने को देवै, चाटते ही रुका हुआ कफ निकलने लगता है

बीछू का विष शान्त—करने के लिये ओंगा की जड पीसकर लेप करै, अथवा जडको पीसकर सूंघे, वा पानी में मिलाकर पीवै, ।

भस्मक रोग—में भी ओंगा की जडको पीस कर अथवा बीजों की खीर बनाकर खाना चाहिये, ।

सफेद ओंगा की जडको पीसकर हाथ में चुपडने से मुंह में से रुधिर का गिरना बन्द होता

है, तथा सफेद ओंगा की जड को उबाल कर पीने से गर्भ रहता है. ।

ओंगा के बीजों की खीर खाने से भूख नहीं लगती शक्ति भी बनी रहती है एवं ओंगा की जड को पीसकर अथवा घिसकर स्तनों में लगाने से स्त्री के दूध उतरता है, । ओंगा की जड बीछू काटे हुए मनुष्य के हाथ में देने से बीछू का विष शान्त हो जाताहै, यह बाग की खाई में अधिक मिलता है, बरसात और सरदी के दिनों में यह बहुत जगहों में होता है, एक हाथ ऊंचा इसका वृक्ष होता है, इसकी राख में शखिया फूंकी जाती है, इसकी जडकी राख खाने और लगाने से कंठ माला रोग जाता रहता है । इसकी जड गर्भवती के पांव पर पीस कर लेप करेतो बालक जल्दी उत्पन्न होताहै,।

एवं ओंगा के बीज चिलम पर रख कर पीने से दमा रोग जाता रहता है, ओंगा की लकडी की राख खाने से भी दमारोग शान्त होता है, । आंख दुखती हो तो ओंगा के पत्तों का अर्क कान में डाले; । तथा ओंगा के पत्तों की टिकिया बवासीर पर बांधे, । एवं ओंगा के पत्तों का अर्क नासूर को पूरता है, । बवासीर की शान्ति के लिये ओंगा

की पत्ती का अर्क पान करना चाहिये, ओंगा में अन्य भी अनेक गुण हैं,।

५ हरण—आमके समान हरड का वृक्ष भी बडा होता है हरड को सब ही लोग पहिचानते हैं; हरड के जितने नाम संस्कृत में हैं, वे सब सार्थक हैं जैसे सब रोगों को हरने वाली होने से इसका नाम हरीत की है, रोग के भय को दूर करने से अभया है, पथ्य रूप होने से इसका नाम पथ्या है,। काया (देह)को बुढापे से बचाने के कारण का यस्था है,। अमृत समान गुणवाली होने से अमृता है, हिमालय पर्वत में इसकी उत्पत्ति है इससे इस का नाम हैमवती है,। व्यथा को हरने से इसका नाम अव्यथा है,। एवं पन्द्रहो नाम सार्थक हैं किसी नाम से औषधि के गुण किसी से उत्पत्ति, किसी से स्वरूप जाना जाता है, इसका फल डेढ इंच लंबा होता है, इसकी छाल सूखकर खडी पांच रेखा हो जाती हैं; बडी हरड तेल में दो तोले से पांच तोले तक होती है, और बीच की कि जिस को हरी कहते हैं सो आधे तोले से एक तोले तक होती है, त्रिफला में यही लेना चाहिये,।

तीसरी छोटी (जंगी) हर्र दशरत्ती से साढ़े तीन माशे तक की होती है, यह साधारण जुलाब में ली जाती है, कोई २ साढ़े तीन माशे से सात माशे तक की होती है, । हरड के भीतर लंबा बीज निकलता है, हरड जितनी नवीन होती है उतनी ही अधिक गुणकारी होती है, हरड के फल की छाल सब प्रयोगों में लेना चाहिये हरड की सात जाति हैं, १ विजया २ पूतना , ३ रोहिणी, ४ अमृता, ५ अभया, ६ जीवनी, ७ चेतकी, इनमें विजिया तोंबी के समान गोल होता है और विन्ध्याचल पर उत्पन्न होती है, ।

पूतना हिमालय पर्वत पर उत्पन्न होती है. यह पतली और रेखा वाली होती है इसमें बीज बड़े होते हैं, । रोहिणी सिन्धु देश में उत्पन्न होती और गोल होती है, । अमृता किष्किन्धा के समीप पंपा में उत्पन्न होती है यह मोटी और रेखा वाली होती है इसकी गुठली छोटी होती है गूदा बहुत होती है, अभया भी पंपा में उपजती है यहभी पांच रेखा वाली होती है, । जीवन्ती सौराष्ट्र देश में उत्पन्न होती है और सुवर्ण के समान पीली होती है, । चेतकी हिमालय पर्वत पर उपजती है और तीन रेखावाली

होती है, । सब हरों में विजया नाम वाली हर्र श्रेष्ठ होने के कारण सब रोगों में देनी चाहिये, पूतना हरड़ लेप में श्रेष्ठ होती है । रोहिणी हरड घाव को भरलाती है, । अमृता हड जुलाब आदि में श्रेष्ठ होती है,। अभया हरड नेत्र रोग को अच्छा करती है, । जीवन्ती सब रोगों को हरती है, । चेतकी हरड चूर्ण में लेनी चाहिये, । चेतकी हरड दोप्रकार की होतीहै सपेद और काली, इनमें सपेद छै अंगुल लम्बी होती है और काली एक अंगुल लंबी होतीहै कोई हरड देखने से, कोई छूने से, कोई सूंघने से कोई खानें सें दस्त लाती है इस प्रकार इसमें चार प्रकार की भेदन शक्ति है, मनुष्य पशु पक्षी आदि कोई भी चेत की हरड के वृक्ष की छाया में जाकर खडा होवै उसको दस्त आने लगते हैं, जबतक चेतकी हड को हाथ में लिये रहे तबतक दस्त आते हैं, चेत की के वृक्ष काबुल में सुने जाते हैं, ।

प्यासे, सुकुमार, दुबले, औषधी से द्वेष करने वालों को सुख पूर्वक जुलाब लेने के लिये चेतकी हड बहुत अच्छी है, इन सातो जाति की हरडों में विजया हरड प्रधान है, यह सर्वत्र मिलती है, और सब रोगों में इसका देना अच्छा है, हडकी मज्जा

में मधुरता. स्नायु में अम्लता, पर्दे में चिक्कणता, छिलके में कडुआपन, और अस्थि में कपैला पन होता है,। हडर्नई, चिकनी, गोल, भारी, जल में डालने पर डूब जाने वाली अच्छी होती है जो हरड एक ही स्थान में उपजती है वह भी अच्छी होती है, चबाकर खाई हुई हरड जठराग्नि को प्रबल करती है,।

पिसी हुई हरड खाने से मलको शोधन करती है,। तली हुई हरड खाने से संग्रहणी दूर हो जाती है,। भुनी हुई हरड त्रिदोष को हरती है, और बुद्धिबल व इन्द्रियों को प्रकाश करने वाली होती है,। इसमें मीठा, कटु और कपैला रस पित्त को हरने वाला है,।

खट्टा रस वातको हरता है, गुण के साथ सेवन की हुई हरड सर्व रोग नाशक है, घी के साथ सेवन की हुई हरड वात बिकार को शान्त करती है,।

लवण के साथ सेवन की हुई हरड कफ को दूर करती है,। शक्कर के साथ सेवन की हुई हरड पित्त को शान्त करती है, । जो मनुष्य मार्ग चलने से थका हो, दुबला हो, बलहीन हो, रूक्ष प्रकृति वाला हो, धातु रोगी हो, जिसका पित्त

प्रबल हो, लंघन करने से जिसका शरीर क्षीण हो गया हो जिसका रुधिर निकाला गया हो, और गर्भवती स्त्री, इनको हरड नहीं खाना चाहिये, ज्वर रोगी को पीली हरड नहीं खाना चाहिये, ।

हरड बसन्तऋतु में शहत के साथ, । ग्रीष्म ऋतु में गुडके साथ, ।

वर्षा ऋतु में सेंधा लवण के साथ, । शरद ऋतु में मिश्री के साथ, ।

हेमन्त ऋतु में सोंठ के साथ,। शिशिर ऋतु में पीपरि के साथ सेवन करनी चाहिये ।

हरड खाने की विधि पहले भाग में लिखी गई है, । ' भुक्ते पथ्याऽभुक्ते पथ्या भुक्ता भुक्ते पथ्या पथ्या । जीर्णे, पथ्याऽजीर्णे पथ्य जीर्ण जीर्णे पथ्या पथ्या, ॥ १ ॥

अर्थ—भोजन करने उपरान्त हर्र पथ्य है, भोजन करने से पहले भी अवषेष अन्न को पचाने के कारण पथ्य है, और खाया न खाया अर्थात् भोजन करते ही वमन हो जानें पर उत्पन्न दोष को शान्त करने के लिये भी पथ्य है, तथा जीर्ण में (अन्न पचजाने पर) पथ्य है, अजीर्ण (अन्न

न पचा हो उस) में भी पथ्य है, एवं कुछ पचा हो और कुछ न पचा हो तो भी हर्र पथ्य है,॥ १॥

तथा—'पथ्या पथ्यम पथ्ये पथ्ये जीर्णे पथ्यम जीर्णे पथ्यम् । भुक्ते पथ्यम भुक्ते पथ्यं पुनरपिपथ्या पथ्ये पथ्यम् ॥ २ ॥

अर्थ—अपथ्य भोजन करने पर हर्र खाना पथ्य (हितकारी) है, और भोजन करने परभी हर्र खाना पथ्य है, अन्न पचने पर हर्र पथ्य है अजीर्ण में भी हर्र पथ्य है, भोजन किये उपरान्त हर्र पथ्य है, बिना भोजन किये भी हर्र पथ्य है, तथा कुछ पथ्य और कुछ अपथ्य भोजन करने पर भी हर्र पथ्य है, ॥ २ ॥

हरड घिस, कर आँख पर लेप करै तो दुखती आंख अच्छी हो जाती है, ।

६ बहेडा—बहेडे का वृक्ष भी बडा होता है यह सर्वत्र उत्पन्न होता है ऊंची भूमि पर इसके वृक्ष प्रायः देखने में आते हैं, महुवा के पत्ते के समान इसके पत्ते होते हैं, इसके फल की छाल सब प्रयोगोंमें लेनी चाहिये इसकी मात्रादो माशेकी है. इसकी गुठली की मींगी उन्माद करती है, बहेडा नेत्रों को गुण करता है, खांसी को हरताहै,

बालों को बढाता है, कृमरोग और स्वरदोष को हरता है, इसका अवगुण शहत के शर्बत से जाता है, बहेडे में भी अनेक गुणहैं, ।

७ आमला--आँवले का वृक्ष भी बडा होता है प्रायः पथरी भूमिपर यह वृक्ष उत्पन्न होता है, आंवले से निरन्तर शिर मलाजाय तो बाल सफेद नहीं होते, आमले का सेवन करे तो जरावस्था (बुढापा) नहीं सताता है, । आमले का मुरब्बा चांदी का वर्क लगाकर प्रातः समय खाय अथवा आंवले की सिकंजवीन वा चटनी आदि खायतो पित्त जनित दाह शान्त हो जाता है, आमले से कफकी भी शान्ति होवै है, आमले में अनेक गुणहैं इसके पत्तों की राख खांसी को हरतीहै, ।

८ गुर्च—गुर्च को गिलोय भी कहते हैं यह नीम वृक्ष पर जो होती है वह बहुत अच्छी होती है, गुर्च का काढा सेंधा लवण और काली मिर्च मिलाकर पीने से ज्वर रोग शान्त हो जाता है, गुर्च तीन माशे, इलायची दो रत्ती, बंशलोचन चार रत्ती मिश्री ६ माशा मिलाकर पीसै उसके खाने से दोनों प्रकार की ववासीर शान्त होजातीहै, इसी प्रकार गिलोय में अनेक गुण हैं, ।

९ अदरख—अदरख कास श्वास (खांसी और दमा) तथा मन्दाग्नि रोग को शान्त करती है, एक सेर अच्छी अदरख लेके छीलै फिर पीस कर उसकी लुगदी बनावै और हल्दी दश तोला पीस घी में भून उसमें मिलावै और पुराना गुड़ एक सेर उस में मिलावै और रख छोड़े इस में से दो पैसे भर प्रति दिन खाय तो खांसी दमा मन्दाग्नि रोग शान्त हो जाता है अदरख में अन्य भी अनेक गुण हैं, ।

१० सोंठ—अदरख की सोंठ बनती है, सोंठ में सेंधा लवण मिलाय टिकिया बनाय घीमें तल कर खाने से बादी से उत्पन्न रोग शान्त हो जाताहै सोंठ में चौगुना गुड़ मिलाकर खाने से बादी और अजीर्ण रोग शान्त होता है, ।

११ गुलाब—गुलाब का फूल लाल-सफेद और पीला भी होता है, गुलाब के फूलों से गुल कन्द बनता है, गुलकन्द को जलके साथ पीवै तो दाह और गरमी शान्त होवै है, गुलाबजल और गोपीचन्दन मस्तक पर लगाने से नकसीर बन्द हो जाती है,चैती गुलाब का अतर सूंघने से मस्तक पीडा शान्त हो जाती है, गुलाब जल में कुछ

फटकरी छोडदे उससे आंख धोवै तो दुखती आंखकी पीडा कमती हो जाती है, गुलाबजल से आंख धोवै तो आंखकी गर्मी जाती रहती है, गुलाबजल पीने से हृदय शीतल हो जाता है, ॥

१२ सेवती--सेवती का गुलकन्द जलके साथ पीने अथवा सेवती का अतर सूंघने से दाह, गरमी और मस्तक पीडा शान्त होती है, सेवती के फूल १ तोला, काली मिर्च सात, सफेद इलायची के दाना चार रत्ती, मिश्री एक तोला इनको घोटकर पीवै तो गरमी से मस्तक पीडा होती हो तो शान्त होवै, ॥

१३ मोंगरा—मोंगरे का अतर सूंघने से शिर तर रहता है. मोंगरा की पत्ती पीस घी में मिलाय गरमकर फुडिया पर बांधने से फुडिया अच्छी होजाती है, मोंगरा की पत्ती दो तोला गूगल तीन माशा, पीस [१]टिकिया बनाय डेढ तोला घी मेंजलाकर उस घी में मोम मिलाकर मल्हम बना लेवै इस से कैसा भी फोडा हो लगाने से अच्छा होजाता है,

१४ चमेली—चमेली का अतर सूंघने से मस्तककी गरमी और दाह शान्त होवै है. चमेली

१ यह टिकिया घी में जलाकर निकाल डाले ।

के फूल सूंघने से गरमीसे दुखता हुआ शिर अच्छा हो जाता है. चमेली की पत्ती उबाल कर कुल्ली करने से मुखमें के छाला दूर हो जाते हैं, चमेली के पत्ते एक तोला, इलायची के दाना छै माशा, काली मिर्च सात, मिश्री छै माशा इनको घोटकर पीने से छाला अच्छे हो जाते हैं, चमेली के पत्तों की टिकिया घी में छौंककर आंख पर बांधने से नेत्र रोग अच्छा हो जाताहै, तथा चमेली के पत्तों का अर्क पीने से मूत्र रोग दूर होजाता है. ॥

१५ बेर—बेर खाने से प्यास शान्त होती है, बेर के सत्तू पेचिश (दस्त मुर्रा) को दूर करै है, बेर के पत्ते औटाकर उस पानी से पांव धोने से शिर पीडा शांत होती है, फोता (अन्ड कोश) सूजे हों तो बेर बृक्ष की छाल पीसकर फोतों पर लेप करै तो सूजन दूर होती है बेर की पत्ती तीन तोला, मिश्री एक तोला, इलायची तीन, इनको घोटकर पीवै और बेर की पत्ती पीस जलमें मिलाय झाग उठाय पांव के तलुये पर लगाने से तलुओं की जलन जाती रहती है,बेर की गुठली की मींगी पानी में पीसकर पीने से मस्तक रोग दूर होजाता है, ये गुण देशी बेर के हैं, झरबेरी के बेर भूख को शान्त करते हैं, इसकी लकडी की राख लगाने से

मुहांसा अच्छा होजाता है. इसके गोंद से कुल्ला करै तो दांतोंका खून गिरना बन्द होताहै,जलजाने पर इसके पत्ते मीठे तेल में पीसकर लगावै ; इसके कोयलों का धुवां पीना उपदंश (गर्मी) रोग को हित है, इसकी गुठलियोंकी राख दस्तोंकी औषधिहै,

१६ मछेछी—मछेछी तालाव के समीप होती है, इसका फूल मछली की आंख के समान होता है इससे संस्कृत में इसका नाम मत्स्याक्षी है बंगाल गुजरात और मराठी भाषा में इसका नाम मत्स्याक्षी है, इसके फूलमें मछली की सी गन्ध आती है, इससे इसका नाम मत्स्यगन्धा है, इसका फूल छोटी सा छत्ता के समान होता है, पत्ता भी बहुत छोटा वारीक होता है, इसकी शाखा पतली स्याही लिये हरी होती है , दूसरे प्रकार की मछेछी लंबी बेलदार होती है, यह हलकी, ठंडी, कसैली, कड्डुवी, मधुर, पाक में चरपरी होती है, यह कफ, पित्त, कोढ और रुधिर विकार को दूर करती है, इन रोगों में तोलाभर इसका अर्क पीना चाहिये, यह अच्छी साफ मछेछी पीसकर गर्मी के घाव पर लेप करै तो घाव अच्छा हो जाता है, घाव किसी प्रकार का

हो इसकी पत्ती पीपकर लेप करने से घाव की जलन दूर होजाती है. फोडा फूटता न हो तो फूट जाता है; मछेछी और शकर एक एक तोला भर आध पाव जलमें पीसकर पीने से फिरंग रोग दूर होजाता है, तथा मछेछी सवा पैसे भर, शकर डेढ़-पैसेभर तीन पाव जलमें पीसकर उपदंश (गर्मी) की जलन शान्त हो जाती है, मछेछी का अर्क पीने से पेट के कीडे मरजाते हैं इसके पीने से बवा-सीर रोग भी शान्त होजाता है, ॥

१७ कंजा—कंजा को करंजुआ भी कहतेहैं, यह लतिका जंगल में भी होती है इसमें कांटे होते हैं. फुलवाडी की रक्षाके लिये किनारे किनारे इसको लगाते हैं, इसके पत्ते सिरसे के पत्ते के समान डाली के आमने सामने लगे रहते हैं, इसके फल कचौरी के तुल्य होते हैं कांटों में यह फल लद जाते हैं उनफलों में चार पांच दाने कौडी के बरा, बर निकलते हैं उन्हीं को कंजा और करंजक कहते हैं, इसका छिलका ऊपर से राख के रंग का सा होता है, भीतर से सफेद गिरी निकलती है, यह गरम, चरपरा, योनिदोषों को दूर करने वाला होता है, कंजा के पत्ते मल भेदक, पित्तकारक,

कफ, वात, बवासीर कृमि और शोथ (सूजन) को नष्ट करने वाले होते हैं, । कंजा की पत्ती दो पैसे भर काली मिर्च पांच, आधपाव जलके साथ पीने से हड्डी, विषम ज्वर, वात, कफ शान्त हो जाता है। कंज की जड पीसकर लगाने से फोडा अच्छा हो जाता है, । कंजा की जड छै माशा छटांक भर जलमें पीसकर पीने से खरवट अच्छी हो जाती है, । कंजा की जड एक तोला कुछ जलमें पीसकर लगाने से बेवाई रोग दूर होजाता है, । कंजा के बीज की गूदी और ढाक के बीज कीगूदी दश दश तोला जल के साथ पीस एक एक रत्ती भर की गोली बनाय सबेरे एक गोली खाकर एक छटाक गंगाजल पीवै फिर एक छटाकभर कंजा की पत्ती चबाले तो वादी बवासीर अच्छी होजातीहै,। कंजा की जड सवा तोला आधपाव जलके साथ पीसकर पीनेसे उदावर्त, अफरा, गोला और शूल रोग नाश होजाता है, । तथा कंजा की जड, नीम की छाल, संभालू की छाल बराबर बराबर लेके जल में पीस लेप करै तो घाव के पीलू और कीडे दूर हो जाते हैं, । कंजा की कोपल और नीम की कोपल एक एक तोला भर लेके आधपाव जलमें

पीस सातदिन पीने से थोड़े दिनों का उपदेश (गर्मी) रोग शान्त हो जाता है, । कंजा की गूदी जलमें घिस चार बूंद शीत ज्वर आने से पहले नाक में टपकाने से ज्वर नहीं आता है, ॥

१८ रीठा—रीठा का रंग काला होता है, यह छोटी सुपारी के बराबर होता है, इसकी मींगी दमा को शान्त करती है, इसकी मींगी का लेप शिर पीड़ाको शान्त करता है, इसका काढ़ा पिलाने से बालक का डिब्बा रोग अच्छा होता हैं, मींगी को भिगोकर चबाने से वमन शान्त होवै है, इस, का छिलका पानी में मिलाकर पिलाने से मृगी रोग शान्त होजाता है, ॥

१६ गोरख पान—गोरख पान का छत्ता एक बिलस्त लम्बा होता है, इसका पत्ता लंबा छोटा फूल सफेद खाने से थूकने पर लाल, इसकी डंडी पर बीज लगते हैं, इसका स्वाद फीका हीकदार होता है यह रेतीली और कर्डी भूमि पर ज्वार के खेत आदि में उपजता है, गरमी और बरसात में उत्पन्न होता है, हथियार का घाव इसके लगाने से जल्दी भर जाता है, सब प्रकार के घाव इस से अच्छे हो जाते हैं, इसकी ठंढाई चाय के तुल्य गुण

करती है, बवासीर, गर्मी, सुजाक इसकी ठंढाई पीने से दूर होजाती है, बालकों के शिर में जो फोडा फुंसी हों तो उस पर लगाने से दूर हो जावै है, मसान रोग इस से जाता रहता है, इसकी लुगदी में शीशा फूंका जाता है, ।

२० लटोकरी—इसको जल धनियां कहते हैं, इसका छत्ता एक बिलस्त ऊंचा भूमिपर बिछा हुआ होता है, पत्ता हरे, फूल बहुत छोटा पीले रंग का होता है, नदी तट पर सरदी और गरमी के दिनों में होता है, हरी घुंडी से फूल से फल बहुत छोटा सूंघने पर आंख नाक से आंसू निकल पडते हैं, चखने में भी तीक्ष्ण होता है इसके खाने से बहुत पसीना निकलता है, भुजा पर इसको बांधे तो प्लेग नहीं आता, कलाई पर बांधने से ज्वर नहीं आता, इसका अर्क दाद पर लगाने से अच्छा हो जाता है, अर्क लगाने से तुंदी करता है, इसमें बहुत सी धातुयें फूंकी जाती हैं, ।

२१ इमली—इमली का वृक्ष ऊंचा और बडा होता है इसकी पत्ती छोटी होती है इमली के फूल गुच्छों में लगे रहते हैं फूलों का रंग पीला होता है उनमें लाल रंग का छींटा झलकता है,

यह सभी स्थानों में होते है, इसकी फलियां टेढी और लंबी लंबी होती हैं इनको चिया और कटारा कहते हैं, इनके कडे छिलके को अलग करने पर भीतर से गूदा निकलता है, इमली दो प्रकार की होती है एक प्रकार के गूदे का रंग लाल, दूसरे प्रकार का गूदा सादे रंग का होता है, मराठी में इसे चिंच, गुजराती में आंवली, बंगला में तेंतुल कहते हैं, कच्ची इमली भारी, खट्टी, पित्त कफ, कारक, रुधिर विकार वर्द्धक, वात नाशक, पक्की इमली गरम, रूखी, दस्तावर, अग्नि भड़ी प्रकाशक होवै है, । इमली की दातून करने से दांत पुष्ट होते हैं, इमली की पत्ती दो तोला पावभर पानी में उबाल कर पीने से यह काढा जुकाम और सर्दी को दूर करता है, । तथा इमली की पत्ती दो पैसे भर लाहौरी नमक दो माशा जल पावभर मिला कर पीने से पेचिस अच्छी होजाती है, इमली की पत्तियों का रस कांख में लगाने से पसीना की दुर्गन्धि दूर हो जाती है, । खांसी हो तो इमली की पत्तियों के काढा में हींग और सेंधा नमक मिलाकर पीवै, । भिलावा उछल आया हो तो इमली की पत्तियों के रस में हल्दी मिलाकर लगाने से

अच्छा होजाता है, । कांच निकल आती हो तो इमली की मींगी का आटा एक तोला में गायका दही मिलाकर खाना चाहिये, । इमली के बीज पानी में पीस औटाकर लप करै तो फोडा फूट जाता है. । इमली की कोंपल कोमल हो तो उसके खाने से लूं नहीं सताती, इमली की छाल औटाकर उस पानी से कुल्ली करै तो जीभ के छाले दूरहो जाते हैं, । इमली के बीजकी मींगी पानी में पीसै जहां बीछू ने डंक मारा हो वहां पर गाढा लेप करै जहर मोहरे के समान यह लेप विष को खींच लेता है, । अरुचि हो तो पक्की इमली तीन तोला, शक्कर पांच तोला आधपाव पानी में पीसकर पीवै, । प्रमेह हो तो इमली के बीजों की मींगी की मैदा तीन माशा, मिश्री दो माशा पीस मिलाकर सवेरे फांकै और ऊपर से पावसर गायका दूध पीवै प्रमेह रोग दूर होजाता है, तथा इमली तीन तोला, काली मिर्च एक माशा, मिश्री एक तोला इनको पावभर जल में पीसकर पीवै, तो पित्त ज्वर, मलज्वर, नष्ट होवै. इससे उलटी भी बन्द होजाती है, पावभर पक्की इमली को सेर भर जलमें मलकर छानै और उसमें आधसेर कन्द मिलाकर चाशनी करै यह डेढ तोला

नित्य पीवे तो उलटी शान्त हो जावे, । पक्की इमली छीलकर जलमें औटावे और जलके साथ ही मलल फिर इसमें दरा बनाकर छोडदे और मसाला नमक डालदे, यह बर शीतल और गुण, कारी होते हैं, । पक्की इमली पानी में भिगोय लौंग, मिर्च, सेंधा और कपूर मिलावे इसको पना कहते हैं यह रोचक, पित्त कफ वर्धक, वात नाशक और जेठराग्नि को बढाने वाला होता है, । सूखी इमली के एक माशे भर बीज को पानी में भिगोय मलकर छान लवै फिर इस छाने हुये दो तोले पानी में तीन रत्ती अफीम पांच रत्ती फटकरी मिलाकर एक लोहे के पात्रमें आंच देकर पकावे गाढा हो जानेपर आंख के चारों ओर लेप करै तो आंख की लाली सातवें दिन दूर होजाती है, । तथा इमली की पत्तियों का अर्क फूलके कटोरे में नीमके सोटे से खरल करै सोंटे के नीचे तांवे का पैसा लगा हो, फिर चालीस वार बालक वाली माता के दूध में खरल करके लगावै तो मोतिया बिंद रोग जाता रहता है, इमली के फलों का हलुआ तिल्ली को शांत करता है, बीज वीर्य को रोकते हैं,

२२ सीताफल—सीताफल को गंगाफल,

लौका और कद्दू भी कहते हैं, इसके बीजों का तेल शिर में डालने से जुवें मर जाते हैं, शिरपर मलकर लगाने से गंज रोग जाता रहता है, इसके पत्ते पीसकर लगाने से कीडे मर जाते हैं, इसके पत्ते एक छटांक भर घोटकर पीने से नशा उतर जाता है, इसका फल गरमी और दाह को शान्त करता है, यह बादी और ठंढा होता है,। बालक के मूत्र न उतरता हो तो इसके फल का डंठल घिसकर नाभि पर लगानेसे मूत्र उतरता है,।

२३—आरंड-अरंड बृक्ष को अंडी का वृक्ष भी कहते हैं, इसके फल को रंडा भी कहते हैं आरंडा वृक्ष बहुत बडा नहीं होता।निर्मल होता है, इसको यूनानी में "बेद अंजीर" कहते हैं, इसका फल कांटेदार होता है, मींगी सफेद तेल युक्त होतीहै। इस का प्रभाव गरम खुश्क है. यह रद्दी मवाद को गला देता है, पेट को नरम करता है, दस्त लाता है, पक्षा घात, जलन्धर और गठिया रोग को गुण करता है.। आरंड की कच्ची ककडी पांच तोला लेके पीसै फिर उसमें एक माशा नमक मिलाय अनार वा जामुन का सिरका एक तोला डाल कर पीवै, अथवा आरंडे की ककडी मिश्री व नमक के साथ खाय तो दाह शान्त हो, गरमी दूरहो, पेटकी

बादी जाती रहे और गुल्मरोग नाशहो जावै, ।

२४ अमरूद—इसी को विही और जर्दक भी कहते हैं, इसका वृक्ष मझोला होता है गृहस्थ लोगों के घरों में भी होता है, बगीचों में बहुत वृक्ष इसके होते हैं कच्चा अमरूद तोड़ते हैं उसको पीस मिश्री मिलाय खाने से दस्त बन्द होते हैं, अमरूद का आग में गुलगुला कर नमक के साथ खाय तो खांसी शान्त होती है, इसका मीठा फल वज्रका रक होता है, ।

२५ नीबू—नीबू दो प्रकार का होता है १ कागजी २ मीठा—कागजी नीबू जलन और प्यास को बुझाता है, सेंधा काली मिर्च को काटी हुई कागजी पर डालकर फदकावै और चूसै, तो ज्वर को शान्त करता है, कागजी नीबू रुधिर विकार को खोता है, कीड़े मकोड़ों के विष को दूर करता है, विष को हटाता है, । दो नीबू लेके एक में रत्ती भर चूना और कच्ची खांड भरै और दूसरे में काली मिर्च काला नमक पीसकर भरै पहला चूना खांड वाला नीबू चूस फिर नमक मिर्च वाला चूसे। तथा नीबू की सिकंजबीन में पादीना का अर्क डाल कर पीवै तो पित्त से उत्पन्न दाह और वमन

शान्त हो जाता है, । मीठा नीबू गरम और प्यास को शान्त करता है रुधिर की तीव्रता को रोकना है, मेदे को बलदायक होता है नीबू में अन्य भी अनेक गुण हैं, ।

२६ नारंगी—नारंगी को सबही जानते हैं,। इसके छिलकाके तेल को झाईं (मुलछाया) रोग पर मलने से रोग शान्त हो जाता है, और इसस झाजन भी अच्छा हो जाता है, नारंगी का अर्क चार तोला मिश्री एक तोला, इलायची सफेद तीन पीस कर मिलावें और पीवै, अथवा नारंगी के अर्क में काली मिर्च नमक पीस मिला कर पीवै तो पित्त जनित दाह शान्त हो जाता है, ।

२७ मेढा सींगी—संस्कृत में इसको मेषशृंगी कहते हैं, इसके वृक्ष चार हाथ से सात हाथ तक ऊंचे होते हैं इसके पत्ते चार पांच अंगुल लंबे गोल और हरे होते हैं फूल पीले, फल मेढे के सींग के समान होते हैं इसकी जड अंगुली सी लम्बी स्वाद में कडुवी और क्षार युक्त होती है, । इस की छाल भूरे रंग की स्वाद में कडुवी और क्षार की सदृश लगती है, । इसकी जड और छाल को जल के साथ घिसकर लगाने से गांठ, सूजन, सांप बीछू

आदि का विष शान्त होवै है, । इसके पत्ते और छाल के चूर्ण को दश गुणे जल में औटावै तीन उफान आने पर छान लेवै, दो तोला प्रमाण रोगी को पिलावै, तो ज्वर और कफ की शान्ति होवै है। इसकी जड पीसकर लेप करने से तीर और कांटा निकलता है, । तथा इसकी जड पीस कर खाने से गर्भ रहता है, । यह तांबा और शंखिया फूंकने में काम आवै है, ।

२८ अनार—अनार दो प्रकार का होता है, १ खट्टा २ मीठा, इसकी मात्रा दो तोला तक है, इसका छिलका संग्रहणी, दस्त, ऐंठन, और बवासीर तथा कांच निकलने की औषधियों में काम आता है, अनार के छिलके का दो तोला अर्क निकाल उसमें सेंधा नमक मिलाकर गरम करै और पीवै अथवा अनार का अर्क सेंधा नमक वा शकर मिलाकर पीवै तो खांसी और श्वास रोग जाता रहता है; मीठे अनार को खाने से रुधिर बढता है, खट्टे अनार के छिलके का अर्क चूसने से खांसी दूर होती है, ।

२९ बेल—बेल का वृक्ष बड़ा होता है यह प्रसिद्ध वृक्ष है, बेल वृक्ष के पत्तों का काढा दमा

को दूर करता है, जड का वफारा बाई को खोता है जड और छाल का जुशादा जनून को दूर करता है, बेल फल को भूनकर खाने से संग्रहणी रोग दूर होता है, । बेल के पके फल की गूदी तीन तोला, मिश्री एक तोला, इलायची के दाना चार रत्ती, काली मिर्च सात, इनको घोट कर पीने से खूनी बवासीर शान्त हो जाती है, । बेल का मुरब्बा अथवा बेल की सिकंजबीन खाने से दस्त बन्द होजातेहैं, खटाई, तेल, गुड, हींग, बादी और गरम वस्तु न खाय, ।

३० शहतूत—शहतूत का वृक्ष भी बडा होता है, यह हरे और काले दो रंग के होते हैं शहतूत के पत्ते चबाने से मुंह के छाले अच्छे हो जाते हैं, इसके पत्तों की लुगदी में मैनासिल फूँका जाता है, शहतूत के कोमल पत्ते पीस कर और गेहूं की भुसी उबाल कर बांधने से गांठ वाला फोडा अच्छा हो जाता है, । शहतूत का अर्क पीने अथवा शहतून खाने से उपदेश (आतशक) रोग शान्त हो जाता है, ।

३१ कचनार—कचनार की फलियों की तरकारी होती है, यह शीतल और खुश्क है, ।

दस्तों को वन्द करती. पेट को गुंग करती. और रुधिर विकार को दूर करती है, । इसकी छाल में सूंगा और चांदी फूकी जाती है, । इसके पत्तों की गुँजिया खाने से स्त्रियों का रज सम्बन्धी अधिक रुधिर निकलना रुक जाता है, । इसका वफारा बवासीर को शान्त करता है इसकी छाल का लेप जलन्धर रोग को अच्छा करता है, कचनार की पत्ती वा छाल तीन तोला, फटकरी एक तोला, सफेद कत्था तीन तोला इनको जल के साथ औटा कर कुल्ली करै तो गरमी से पड़े हुये मुंह के छाले अच्छे हो जाते हैं, । इस की छाल की राख मलने से दांतों की पीड़ा जाती रहती है, कचनार के फूल मुंहसे खून आने और रक्त प्रदर को रोकते हैं, तथा भीतरी अथवा गुदा के घावों को दूर करते हैं, इसकी छालका चूर्ण प्रमेह को दूर करता है, इसके काढा की कुल्ली से मुंहका आना रुक जाता है और मुंहके अन्य रोग भी अच्छे हो जाते हैं, इसकी दातून करने से भी मुंह आना वन्द होजाता है, ॥

३२ चन्दन—चन्दन का तेल बताशा में चार बूंद

डालकर बाद ऊपर से गायका कच्चा दूध आध सेर पीवे तो मूत्रकृच्छ्र (सुजाक) रोग जाता रहता है, । चन्दन के तेलमें नीबू का रस मिलाकर मलने से खुजली और फुंसियां अच्छी हो जाती हैं, । सर्दी गर्मी से दुखता हुआ शिर चन्दन का तेल कपूर मिलाकर लगाने से अच्छा हो जाता है, ।

३६ भिंडी—भिंडी की तरकारी होती है; मूत्रकृच्छ्र (सुजाक) रोग को शान्त करने के लिये कच्ची भिंडी मिश्री के साथ खाना चाहिये, । अथवा भिंडी की जड़ पांच तोला, काली मिर्च पांच रत्ती, पूर्वी इलायची पांच रत्ती, मिश्री छह तोला इनको घोटकर पीवे, अथवा भिंडी के फूल तीन तोला पावभर गायके मट्ठामें मिलाकर पीवे, ।

३७ मेंहदी—मेंहदी की पत्ती चबाने से मूत्रकृच्छ्र जाता रहता है, मेंहदी की पत्ती पीसकर फोड़ापर बांधने से फोड़ा और घाव अच्छा होजाता है, मेंहदीकी पत्ती तेलमें जलाकर लगाकर गठिया बाय दूर हो जाते हैं, तथा पत्ती अथवा फूल पीस कर लगाने से शिर पीड़ा शान्त हो जाती है, । मेंहदी के फूल कपड़ों में रखने से कीड़ा नहीं लगता,। तथा मेंहदी की पत्ती में कपूर, सुपारी; लोंग, कत्था;

दस्तों को बन्द करती, पेट को गुंग करती, और रुधिर विकार को दूर करती है, । इसकी छाल में मूंगा और चांदी फूकी जाती है, । इसके पत्तों की भुँजिया खाने से स्त्रियों का रज सम्बन्धी अधिक रुधिर निकलना रुक जाता है, । इसका बफारा बवासीर को शान्त करता है. इसकी छाल का लेप जलन्धर रोग को अच्छा करता है, कचनार की पत्ती वा छाल तीन तोला, फटकरी एक तोला, सफेद कत्था तीन तोला इनको जल के साथ औटा कर कुल्ली करै तो गरमी से पड़े हुये मुंह के छाले अच्छे हो जाते हैं, । इस की छाल की राख मलने से दांतों की पीड़ा जाती रहती है, कचनार के फूल मुंहसे खून आने और रक्त प्रदर को रोकते हैं, तथा भीतरी अथवा गुदा के घावों को दूर करते हैं, इसकी छालका चूर्ण प्रमेह को दूर करता है, इसके काढ़ा की कुल्ली से मुंहका आना रुक जाता है और मुंहके अन्य रोग भी अच्छे हो जाते हैं, इसकी दातून करने से भी मुंह आना बन्द होजाता है, ॥

२२ चन्दन—चन्दन का तेल बताशा में चार बूंद

डालकर खाय ऊपर से गायका कच्चा दूध आध सेर पीवै तो मूत्रकृच्छ्र (सुजाक) रोग जाता रहता है,। चन्दन के तेलमें नीबू का रस मिलाकर मलने से खुजली और फुंसियां अच्छी हो जाती हैं,। सरदी गर्मी से दुखता हुआ शिर चन्दन का तेल कपूर मिलाकर लगाने से अच्छा हो जाता है.।

३३ भिंडी—भिंडी की तरकारी होती है; मूत्रकृच्छ्र (सुजाक) रोग को शान्त करने के लिये कच्ची भिंडी मिश्री के साथ खाना चाहिये,। अथवा भिंडी की जड पांच तोला, काली मिर्च पांच रत्ती, पूर्वी इलायची पांच रत्ती, मिश्री डेढ तोला इनको घोटकर पीवै, अथवा भिंडी के फूल तीन तोला पावभर गायके मट्ठामें मिलाकर पीवै,।

३४ मेंहदी—मेंहदी की पत्ती चवाने से मूत्रकृच्छ्र जाता रहता है, मेंहदी की पत्ती पीसकर फोडापर बांधने से फोडा और घाव अच्छा होजाता है, मेंहदीकी पत्ती तेलमें जलाकर लगाकर गठिया बाय दूर हो जावै है, तथा पत्ती अथवा फूल पीस कर लगाने से शिर पीडा शान्त हो जाती है,। मेंहदी के फूल कपडों में रखने से कीडा नहीं लगते,। तथा मेंहदी की पत्ती में कपूर, सुपारी, लोध, फट;

की मिलाकर पोटली बनाय जलमें भिगोय नेत्रों में लगाने से अथवा पोटली का पानी नेत्रों में डालनेसे लाली दूरहो जातीहै और पीडा नहींहोती,

३५ सेम—सेम की पत्ती के रसमें थिथी घिसकर लगाने से दाद जाता रहता है, ।

३६ लालमिर्च—लाल मिर्च देशी पहाड़ी आदि कई प्रकार के होते हैं, यह गरम, खुश्क और वात नाशक होता है, लाल मिर्च पीस पानी में भिगोय कपडे में रख तिजारी वा अठपहरा ज्वर वाले के कान में तीन बूंद डाले तो आराम हो, तथा लालमिर्च दो तोला, सोंठ दो माशा, सेंधा छै माशा, इनको घोटछान कड़ाही में घी डाल आंचपर चढ़ाकर छौंकदे डेढ़ छटाक पानी डालै आधा रहनेपर उसके साथ रोटी खाय तो जठराग्नि प्रबल हो, बादी और शीत शान्त होवै, ॥

३७ पित्त पापडा—पित्तपापडा पीस गरम कर गलगंड पर बांधने से रोग अच्छा हो जाता है, । तथा पित्तपापडा छै माशा, लौंग सात, काली मिर्च एक, इनको पीस गरम पानी के साथ पीवै, अथवा गरमकर नमक मिलाय पीवै तो पित्त ज्वर शान्त हो जाता है और भीतर ज्वर जाता रहताहै,।

२८ अडूसा—अडूसा के पत्ता हरे, फूल सफेद, अडूसा के पत्तों के काढा से कुल्ली करै तो मुख और दांतोंका रोग जाता रहता है, अडूसा की जड़ खांसी, दमा, श्वांस, और कफ-ज्वर कमलवाय और प्रमेह कोढ़ तथा मूत्रा घात आदि रोगों को हरती है, इसकी मात्रा छै माशे की है, अडूसा का फूल तपेदिक और सफरा को अच्छा करता है, रुधिर की गरमी और चिनग को अच्छा करताहै,। अडूसा का अर्क नमक मिलाकर पीवै तो खांसी जाय,। अडूसा का सत शहत में मिलाकर चाटने से दमा रोग नकसीर रोग शान्त हो जाता है,। पत्तों में नमक मिलाय कपडोटी कर फूंके १ रत्ती भर खाय तो खांसी जाय,।

२९ सीसम—सीसम का वृक्ष प्रायः वन में होता है, बागों में भी होता है, सीसम के पत्तों का अर्क पीने और लगाने से बवासीर रोग शांत होता है,। और पत्तों के काढासे धोने और पत्तों की लुगदी बांधने से छाती का घाव अच्छा होता है,। इसके फूल वा पत्तों की ठंडाई पीने से पथरी और मूत्रकृच्छ्र रोग शान्त होता है, सीसम की छालका अर्क नासूर को खोता है,। इसका

तेल खुजली को हरता है,। सीसम के फूल चार तोला पत्ता चार तोला, इलायची चार तोला; काली मिर्च पन्द्रह, मिश्री दो तोला इन सबको पीस कर पीवै तो स्त्री का प्रदर रोग जाय,।

४० वड़—वड़ (वर्गद) का वृक्ष वड़ा होता है इसको वृक्षराज कहते हैं इसकी जटायें भूमि में लगकर शाखा हो जाती हैं,। वड के कोमल पत्तों पर तेल चुपड सेककर पेट पर बांधै तो जलोदर रोग अच्छा हो,। तथा वड के दूध को दो वताशों में भरकर प्रति दिन प्रातः समय खाय तो दो सप्ताह में प्रमेह रोग जाय ।

४१ धतूरा—धतूरे का वृक्ष दो हाथ ऊंचा होता है, काला सफेद दो प्रकार का होता है, इसका फूल सफेद और बडा होता है, काले का फूल नीली चित्तियों दार होता है, धतूरे के पत्तों का अर्क कान में टपकाने से आंख की पीड़ा शान्त होती है, तथा पत्तों का धुवां दमा को अच्छा करता है, इसके पत्ते ववासीर और भगन्धर पर बांधे जाते हैं धतूरे के बीजों का तेल गठिया और प्रसूत आदि रोगों को खोता है,। धतूरे का फूल कांजी के साथ पीने से गर्भ नहीं रहता है, काले धतूरे की जड़ का

चूर्ण सूंघने से मृगी रोग जाता रहता है, धतूरे की जड पुष्य नक्षत्र में लाकर स्त्री की कटि में बांधै तो गर्भ नहीं रहता है और गर्भ रहे तो गिरजाता है,। तथा धतूरे के फल को चीर कर उसमें लोंग भरै फिर ऊपर गीला कपडा लपेट कर भूमल में धरै भुनजाने पर पीस लवै और उडद के बराबर गोलियां बनावै एक एक गोली प्रातः सायं खाय तो वीर्य का बंधेज होय, और तिजारी ताप जाय;। तथा धतूरे के कोमल पत्ते तेल चुपड सेककर फोडा पर बांधे तो फोडा अच्छा होजाय; बालक के पेट पर बांधै तो सरदी दूर हो,।

४२ महुवा—महुवा का वृक्ष बडा होता है; यूनानी हिकमत में इसको 'गुलंब का' कहते हैं, इसके पत्ते बडे, फूल सफेद. फल हरा होता है, इसके फल दूध और वीर्य को वढाते हैं; सांप काटे पर कुचिला के साथ फूल पीसकर लेप करने से पीडा शान्त होती है, महुवा को पीसकर बिच्छू काटेपर लगाने से पीडा नहीं होती, इसकी छाल का अर्क पीने से गठियावाय जाती है, पत्ते घी चुपड कर उकौता पर बांधने से उकौता अच्छा हो जाता है, महुवा की भीतरी छालका काढा संग्रहणी

को दूर करता है,। महुवा का तेल खाने और मलने से बाई का रोग जाता रहता है,। तथा महुवा, तिल, अजवायन, हल्दी, गोला की गिरी इनको कूट पीस तेलमें छोंक चोट लगने के स्थान पर अथवा जहां झटका लगाहो वहां पर बांधने से सात दिनमें चोट अच्छी हो जाती है,।

तथा—महुवा एक सेर, तिल एक सेर, काली मिर्च डेढ छटाक, इनको कूट कर उसमें पुराना गुड दो सेर मिलावै, इनके पच्चीस लड्डू बनावै एक लड्डू नित्य खाने से निर्बलता दूर होकर बल बढता है,॥

४२ सहदेई—सहदेई बूटी का पत्ता हरा तुलसी अथवा पोदीना के पत्ते के समान छोटा पतला होता है, इसका फूल सफेद होता है, इसका वृक्ष छोटा एक बिलस्त ऊंचा छत्ता सा होता है, इसका स्वाद फीका होता है, पहाडी रेतीली भूमि में सदैव मिलता है, इसकी लुगदी में पारा फूंका जाता है, इसके पत्ते काली मिर्च के साथ पीसकर पीने से पुराना ज्वर जाता रहता है, सहदेई के पत्ता उबाल कर बांधनेसे मस्तक की भीतरी पीडा शान्त हो जाती है,। सहदेई सफेद फूल वाली के

पत्ते पीसकर रस निकालें और कडुई तोमडी की गिरी, और गुजराती तमाखू मिलाय चार प्रहर घोटै सूख जानेपर सूघने को देवै तो सरसाम और मृगी रोग जाय, मस्तक में कीडे हों तो कीडे भी नष्ट हो जावें, । तथा सफेद फूल वाली सहदेई के पत्ता उबाल कर शिर से बांधै तो लकवा रोग अच्छा होवै, । सहदेई के पत्तों का काजल लगाने से दुखती आंख अच्छी हो जाती हैं, । सहदेई के खाने से पसीना आता है, । इसके पत्ते घोटकर पीने से सब प्रकार का ज्वर शान्त हो जाता है, पथरी रोग जाता रहता है, । अर्क पीने से वाय-गोला अच्छा होता है, । कान में अर्क टपकाने से मृगी रोग जाता रहता है, तिल्ली बढ जाने पर इसको घोट कर पीवै, । इसकी जड तेल में पीस घाव पर लगाने से घाव अच्छा होता है, । इसकी ठंढाई पिलानेसे बालकके शीतला नहीं निकलती, ।

४४ आक (मदार)–मदार का वृक्ष छत्ता-दार, पत्ता बडा वर्गद के पत्ता के समान, सफेद रंगका, पकने पर पीला, दो हाथ तक ऊंचा वृक्ष होता है, फूल सफेद छोटा पत्तीदार, फूलपर रंगीन चित्तियां होती हैं, फल आम के समान उसमें रूई

होती है, शाखाओं में दूध निकलता है जो विष के समान काम करता है, गरमी के दिनों में अधिक होता है; वर्षाऋतु होने पर सूख जाता है. रेतीली भूमिपर सर्वत्र पाया जाता है यह दो प्रकार का होता है, जो वृक्ष बडा फूल सफेद होता है वह अच्छा होता है, दूसरा छोटा फूल पिस्ताई होता है. । आकका दूध चोटपर लगाने से चोट अच्छी हो जाती है। । बर्रे के काटेपर लगाने से पीडा नहीं होती. । बवासीर के मस्सों पर लगाने से मस्से दूर होते हैं, पांव के अंगूठे पर लगाने से आंख दुखना बन्द होता है, । तथा दूध में कपडा तर करके पेट पर रखने से वायगोला अच्छा होता है, । जहां के बाल गिरगये हों वहां पर मलने से बाल उग आते हैं, । सवा महीना तलुओं पर मलने से मिरगी नहीं आती है, । दूधका फाहा लगाने से लकवा का मुंह सीधा होता है, । इसकी राख में कडुवा तेल मिलाकर लगाने से खुजली अच्छी होती है. । आककी जड दो सेर लेके चार सेर पानीमें औटावे आधा पानी जल जाने पर जड निकालले और पानी में दो सेर गेंहू डालकर सिजावे फिर सुखाकर आटा पिसाय पावभर आटे की रोटी अथवा बाटी

बनाय घी। गुड मिलाय खावेतो गठिया वाई दूरहो जावै, तीन सप्ताह में आराम हो जाती है,। तथा आक की जड छाया में सुखाय पीस एक रत्ती भर में गुड मिलाकर खाने से शीत ज्वर शान्त होजाता है। तथा जडको दूध में औटाकर घी निकाल कर खाने से नहरुआ रोग जाता रहताहै,। तथा जडको पानी में घिसकर लगाने से नाखूना रोग अच्छा होजाता है तथा जड के चूर्णके साथ कालीमिर्च पीस मिलाय एक रत्ती भर की गोली बनाय खाने से खांसी जाती रहतीहै, । आककी जडकी छालमें अदरख का अर्क काली मिर्च पीस मिलाय दो२ रत्ती की गोलियां बनावै यह गोलियां विशूचिका (हैजा) रोग वाले को देने से रोग दूर होता है,। तथा जडकी छाल बकरी के दूध में पीस कर कंठमाला पर लगाने से कंठमाला रोग अच्छा हो जाता है,।

आक के पीले पत्ते पर घी चुपड कुछ सेंक अर्क निचोड कान में डालै तो आधा शीशी जाय। कानमें टपकाने से बहरापन और दांत की पीडा जाय.। मीठे तेल में जलाकर अंडकोशकी सूजन पर बांधने से सूजन जाय,। कडुए तेल में जलाकर

उपदंश की फुंसियां पर लगाने से घाव अच्छा हो,। हरे पत्ता पीसकर लेप करने से सूजन पटक जाती है, पत्ते पर कत्था चूना लगाकर खाने से दमा रोग शांत होता है,। पत्तों का चूर्ण नासूर और घावपर बुरकने से अच्छा होता है, । पत्तों के धुवां से बवासीर जाती है, कोंपल खाने से सब ज्वर साधारण ज्वर ताप तिजारी आदि शान्त होते हैं,।

मदार की छाल को पीस घी में भूनकर बांधने से चोट की सूजन दूर होती है,। पत्तों को सेक कर बांधने से चोट और सूजन जाती है,। मदार के दूध में काली मिर्च पीसकर भिगोवै माशे भर नित्य खाने से आठ दिन में कुत्ता का विष शान्त हो,। मदार के फल के भीतर की रुई खून बहने के स्थान पर रखने से रुधिर बन्द होता है,। काली मिर्च के साथ फूल का जीरा बालक की खांसी को दूर करता है,।

४५. कनेर—कनेर वृक्ष प्रसिद्ध है, सफेद कनेर के पत्तों का चूर्ण घाव पर बुरकाने से घाव सूख जाता है,। तथा पत्तों का चूर्ण सूंघने से शिर की पीडा शान्त हो जाती है,। सफेद कनेर की जडका चूर्ण विष है एक रत्ती भर प्रातः सायं खाने

से अमल छूट जाता है, । तथा सफेद कनेर की जड आधपाव कूट कर पांच सेर दूध में औटावै और उस दूध को जमा कर घी निकालै उस घी को पानी में लगाकर सुस्ती रोग वाले को खिलावै तो सुस्ती जाय. । यही घी खोवा में रत्ती भर रख कर खायतो भी अमल छूट जाय, तथा जिसकी नस निर्बल हो गई हो तो माखन में रत्ती भर साथ और उसी घी को नस पर मलै तो नस अच्छी होजाय परन्तु पथ्य से रहे, पथ्य की सर्वत्र आवश्यकता है विना पथ्य औषधि वृथा है, ।

४६ पोदीना—पोदीना की पत्ती पित्त को शान्त करती है, पोदीना की पत्ती और मिश्री मुख में चूसने से मुख के छाले अच्छे हो जाते हैं, पोदीना की पत्ती एक तोला काली मिर्च सात, लौंग पांच, मिश्री नौ माशे डाल कर औटावै और छान कर पीवै तो वमन और दस्त वन्द होजावै

४७ ऊँट कटेरी—इस बूटी का स्वाद कड़ुवा, यह भूख बढाती है, अन्न पचाती, मूत्र खोलती, गुरदा और तिल्ली को दूर करती, और अन्न को पचाती है, । इसकी जडकी छाल पांच तोला, मिश्री पांच तोला, सोंठ डेढ माशा इनको पीस कर दश

पुड़िया बांधे एक पुड़िया पाव भर गाय के दूध के साथ पीने से प्रमेह और गरमी शान्त हो जाताहै। सफेद फूलवाली कटेरी का अर्क पीने से गर्भ रहता है, इसके पत्तों का अर्क आँख में टपकावे और टिकिया बाँधे तो दुखती आँख अच्छी हो जावे, । इसके सूखे फूल खाने से हिचकी बन्द हो जाताहै, । कटाई के बीज पीस कडुवा तेल मिलाकर लगाने से उकौता जाता रहता है, ।

४८ भूकटेरी—छोटी कटेरी के फूल अजवायन के साथ माता के दूध के साथ बालक को पिलाने से बालक की सरदी खांसी जाती रहतीहै, इसके फल के बीज एक माशे में छै माशा शहत मिलाय खाने से सात दिन में श्वास (दमा) रोग जाता रहता है, कटेरी को यूनानी हिकमत में 'अस्तर खार' कहते हैं, ।

४६ अजवायन—अजवायन दो प्रकार की होती है १ देशी, २ खुराशानी, खुराशानी में तीन भेद हैं १ काली, २ सफेद, ३ लाल. । और देशी अजवायन भूरी होती है, यह गरम खुश्क होती है, खुरासानी सफेद अजवायन ठंडी और खुश्क होती है, काली विषैली होती है, । देशी अजवायन मूत्र

और रजको खोलती है, जलोधर को हरती है, पथरी को तोडती, कफ को हरती, अन्न को पचा कर भूख को बढाती है, कफ के दोषों को दूर करता है,। अजवायन के पत्तों के रस में सेंधा मिलाय बालक को खिलाने से खांसी दूर होजाती है, अजवायन अनेक चूर्णों में पडती है, यह पाचक होतीहै,। यूनानी में 'नानख्वाह, नाम है,।

५० शंखाहुली—शंखाहुली बूटी छत्तादार होती है इसका छत्ता भूमि में मिला हुआ होताहै, पत्ते इमली से भी छोटे, फूल छोटा गोल शंख के आकार बहुत सफेद होता है, यह ऊसर भूमि में प्रायः मिलता है आडे और गरमी में रहता है, और बरसातमें सूख जाता है,इसका काढा अथवा चूर्ण मूत्र कृक्ष रोग को हरता है,। इसकी जडका चूर्ण प्रमेह को दूर करता है, । इसको कांटे दार बबूर की फलियों के साथ औटाकर पीने से कमलबाय तथा पिंड रोग दूर होवै है,। शंखाहुली की जड घोटकर पीने से गर्भ रहता है,। रविवार के दिन नग्नि होकर इसकी जड लाकर स्त्री की कटिं में बांधे तो गर्भ में बालक बदल जावै. । शंखाहुली बूटी ब्रह्मी के समान बुद्धि वर्धक होती है,। शंखाहुली

के पत्ते घोटकर पीने से स्त्री के बहता हुआ रुधिर बन्द हो जाता है, । इसकी ठंडाई पीने से शीतला रोग, मशान रोग, तथा गरमी का रोग जाता रहता है, । शंखाहुली बूटी के सेवन से भूंख बढ़ती है, वीर्य गाढ़ा होता है, । और बल बढ़ता है, । शंखाहुली बूटी सुखाकर गायके दूध में डालकर पीवै तो वायशूल और निर्बलता जाय; ।

५१ सोवा—सोवा का साग होता है, यह गुरदा और मशाने के रोगों को हरता है, । इसके बीज मूत्र और रज को निकालते हैं, सोवा को सुखाकर फंकी बनावै, सो बादी और गरमी को शान्त करती है, । सोवा की फंकी २ माशा, । मिश्री २ माशा, खाय तो गर्भिणी स्त्री की बादी दूर होवै, ।

५२ पालक—पालक के साग में गरम मशाला और सोंठ पीस कर मिलावै, सबेरे यह साग बना कर सूखा खाय अथवा रोटी के साथ खाय तो मल से उत्पन्न अजीर्ण रोग शान्त होताहै, ।

५३ चौलाई—चौलाई के साग को पांचों नमक डालकर बनावै और प्रातः समय बिना कुछ

छाये खाय तो पेट भराव और फिया रोग दूर हो जाता है, ।

५४ मकोय—मकोय का वृक्ष एक हाथ ऊंचा होता है, । फूल सफेद बहुत छोटा पत्ते मिर्च के पत्ते के समान, फल स्याह फालसे के तुल्य भूमि की तराई में यह सर्वत्र मिलती है, इसके पत्ते पीस कर लगाने और अर्क पीने से सूजन दूर होजाती है, । मकोय का साग बनाय गरम मशाला मिला कर खाने से तापतिल्ली रोग जाता रहता है, जो पेट पै सूजन हो तो गरम मशाला नहीं डाले, सोंठ डाल कर खाय, । मकोय का रस सूजन पर लगाने से सूजन जाती रहतीहै, ।

५५ गोभी—यह प्रसिद्ध भाजी है, १ देशी गोभी २ वन गोभी, इस प्रकार इस के दो भेद हैं, देह में बल को बढाती है, पित्त, रुधिर विकार, मूत्रा घात के उपरान्त उत्पन्न प्रमेह को दूर करती है, फोडा फुन्सी और खांसी को हरती है, । वनगोभी भी औषधियों में काम आती है, वन गोभी के पत्ते पानी में पीस कर रखने से खून आना बन्द हो जाता है, वन गोभी मूत्र लाती है. इसके पत्तों के काढे की धार से गठिया रोग जाता रहता है, । जड़

सहित बन (जंगली) गोबी लाकर उसमें से दो तोला लेवै, और आठ काली मिर्च पीस आध पाव जल में मिलाकर पीवै तो कच्छ रोग और कठोदर रोग जाय, ।

५६ चाय—चाय पीने का आज कल अधिक प्रचार है। इससे चाय को सब पहिचानते हैं, चाय गरमी लाती है। हरारत को दूर करती है जलको आँचपर चढावे जब खोलने लगेतब उसमें दशमाशा चायकी पत्ती, आठ काली मिर्च, चार लौंग, डाल कर ढकदे, दो मिनट में उतार कर छाने और दूध में शक्कर मिलाकर पीवै तो ज्वर, सरदी और आलस्य दूर होजावे, चाय में अन्य भी अनेक गुणहैं ॥

५७ भाँग—भाँगको बिजया[१] बूटी भी कहते हैं। भाँग पीने का अधिक प्रचार है, भाँग का बफारा बवासीर को हितकारी होता है, अतीसार (दस्तों का रोग) और बवासीर रोग होतो थोडी भांग में काली मिर्च डाल घोटकर पीना चाहिये। भांग छै माशा, छोटी इलायची चार, काली मिर्च बीस, अजमायन एक माशा, इनको घोटकर पीने से खूनी

१—बिजया कल्प ग्रन्थ में भाँग के गुणा गुणों का विस्तार है, भांग से जल विकार शांत होता है यह मुख्य गुण है।

बवासीर शांत होजाती है। जठराग्नि प्रबल होती है, मन्दाग्नि रोग शान्त होवै है, भूख बढ़ै है। भांग के बीजों का तेल एक रत्ती प्रमाण पानमें खाने से ताप तिजारी आदि ज्वर जाता रहता है॥

५८-गाँजा—गोरखी गांजा का पंचांग हलदी सहित कूट कर चिलम पर उसका धुवां पीने से हिचकी रोग जाता रहता है॥

५९ रतनज्योति—रतन ज्योति छत्तादार बूटी होती है इसका फीका लसदार पत्ता बहुत महीन रुई के समान फूल छोटा पीले रंग का होता है, इसकी शाखा ओंगाके समान झंकरीली होती है, इसमें फल नहीं होता, शाखा इसकी लाल रंगकी होती है, गरमी के दिनों में करील वृक्ष के नीचे मिलती है, ककरीली भूमि में उत्पन्न होती है, वर साल में नहीं मिलती है, इसकी पत्ती को सेवनकर ने से कमलवायु, लकवा, ज्वर, तिल्ली इन रोगों का नाश होता है। गरम स्वभाव वाले को इसकी ठंढाई अति हितकारी है, इसकी ठंढाई पीने से मूत्र कृच्छ्र रोग अवश्य ही नाश होजाता है, इस के पत्तों का अर्क नाक में टपकाने से मृगी रोग जाता रहता है, इसका काढा पीने से स्त्री का रज

खुज जाता है, इसके पत्तों का हुलास कीडों को दूर करता है,रतनज्योतिकी सिजाई हुई सलाई नेत्रों की ज्योति बढ़ाने वाली होती है; रतन ज्योति बूटी तीन महीने तक नहीं सूखती है; रतनज्योति की जड़ (पुष्कर मूल) और हलदी को पीस गो मूत्र में पकाकर पेट पर बाँधे तो पेटकी सूजन दूर होजाती है ॥

६० लिहसोडा—पके हुये लिहसोडे लेके कपडे में रख सत निकालै सत से दूना आटा गेंहू का लेके दोनों को भूनें फिर उसमें पावभर खोवा और बराबर शकर डालकर घी में भूने और बंशलोचन, इला-यची पीस मिलाकर लड्डू बनावे एक लड्डू प्रातः समय खानेसे धातु पुष्ट होवे है, तथा कच्चे लिह-सोडे सुखाकर एक तोला भर प्रति दिन सवा पाव गाय के दूध के साथ पीने से धातु पुष्ट होवे है ॥

६१ अरणी—यह बूटी ढाका (बंगाल देश) में अधिक होती है, इसका पत्ता छोटा पोदीना के सरी कासा, फूल सफेद, लकडी सफेद, शाखा भीतर से पोली, फल चना के समान होता है, अरणी बूटी का ढाका ज्वर और उदर पीड़ा को शांति करै है,

इसकी जडका तेल जलोदर, तिल्ली और गठिया वाय को हितकारी होती है, । और कलेजे को निर्बलता (ज़ाद‌ा जौफ़) कौ दूर कर भूखको बढ़ाती है, । अरणी के पत्ते एक छटाक, नारियलकी गिरी आधी छटाक मिश्री तोलाभर इनको जलमें पीस कपडछन करके सत निकालै यह सत लगाने से शिरका गंज अच्छा होजाता है, पत्तों को पीस कर फोडा पर बांधने से फोड़ा अच्छा हो जाता है, ।।

६२पुनर्नवा (साँठ) यह बूटी बेलदार होती है, दो प्रकार की होती, पत्ते नोंकदार पानके समान छोटे होते हैं, एक में पत्तेका रंग हरा, दूसरी का रंग पत्ते का लाल, एकका फूल बैंजना, दूसरा का फूल सफेद गांठदार, जडलंबी होती है,पहली रेतीली भूमि में सर्वदा मिलती है, दूसरे खेतों की मेंडपर अथवा ऊसर और कडी भूमि पर मिलती है, इसकी जड़ शहत में घिसकर आजने से नेत्रों की धुंध दूर होती है, मठा के पानी में घिसकर लगाने से फुली कटजाती है; और मोतियाविन्द अच्छा होता है । पुनर्नवा बूटी खानेसे कलेजे की निर्बलता दूर होती है, बवासीर रोग शान्त होता है,

इसकी जड पीसकर स्त्री को खिलाने से बालक शीघ्र उत्पन्न होता है, बावले कुत्तेने काटा होतो गुड में मिलाकर खिलावै. पुनर्नवा का काढा सूजनको दूर करता है, नेत्र दुखतेहों तो पत्तों की टिकिया बांधे, । फोडा फुंसी होतो पत्तो की लुगदी बांधै, अथवा पत्ते सेक कर बांधे इसकी जड शहत में घिस कर लगाने से धुंध और ढलका रोग जाता है, । भंगरा के अर्क में घिसकर लगाने से मोतियाबिंद अच्छा होता है, हड के साथ घिसकर लगाने से ज्योति बढ़ती है, । नीबूके अर्क में घिसकर लगानेसे जाला दूर होता है, । मीठे तेलमें घिसकर शरीर पर लगाने से पांडु रोग अच्छा होता है, पुनरनवा खांसी वात को हरै है, ।

६३ रुद्र दन्ती—रुद्र दन्ती बूटी भूमि पर लम्बी बेलदार फैली हुई होती है, फूल नहीं होते, इसकी डंडी लाल दो तीन अंगुल पर पत्ते होते हैं, पत्ते के पास जड निकल कर भूमि में गढ जाती है, चने के से पत्ते होते हैं, दूसरे प्रकार की रुद्रदन्ती में पीले फूल होते हैं, । शहत के साथ यह बूटी सेवन करने से शरीर को स्थूल करती है, मिश्री के साथ खाने से यह बूटी उदर रोगों को दूर करती

है, इसकी ठंढाई कुष्ट रोग को हितकारीहै, रुद्रदन्ती तोलाभर काली मिर्च चार रत्ती, घोट कर पीने से रुधिर शुद्ध होता है, यह रसायन में उपयोगी है, इसके नीचे चिकने पन के कारण चींटी इकट्ठी हो जाती है ॥

६४सफेद मूशली—सफेद मूशली एक छटांक, दूध डेढ सेर, बादाम की मिंगी १तोला, सफेद इलायची के दाने छै माशा, मिश्री अनुमान से लेवै, पहले दूधको आंचपर चढावै फिर उसमें मूशलडाल मिंगी और इलायची दाने तथा मिश्री पीसकर मिलावै, जब खोवा होजाय तब उतारले, यह खोया खाने से मनुष्य बलवान होजाता है, तथा सफेद मूशली एक तोला पीसकर गायके दूधके साथ पीवै तो धातु पुष्ट होवै, ॥

६५घी ग्वार पाठा—ग्वार का गूदा सफेद होता है, गूदे का हलुआ कफ और पित्त बिकार को हरता है, उदर पीडा और पील्हा को हितकारक होता है, यह भूख बढाता है, भोजनको भली भांति पचाताहै, इसका लेप आमाहल्दीके साथ करनेसे सूजन दूर होती है, इसका गूदा खाने से मूत्र कृच्छ्र रोग जाता है, घीग्वार का अर्क आँख में टपकाने से

पीडा दूर होती है,कानमें टपकाने से कान की पीड़ा दूर होती है।इसका अर्क अजवायन में भिगोकर खाने से तिल्ली जाती रहती है, घीग्वार को आटाके साथ गूँदकर रोटी बनाय उसमें घी गुड मिलाकर दशदिन खाने से वादी रोग जाता रहता है. । ग्वार पाठा के गूदे पर आंबा हलदी पीसकर डाले और बादीसे दुखती हुई आंख पर बांधे तो अच्छी होजावै ॥

६६ शतावरि—शतावरि की जडखानेसे शंखिया का अवगुण दूर होजाता है, शतावरि का चूर्ण दूध के साथ खानेसे बलवीर्य और बुद्धिकी वृद्धि होती है, । शतावरि दो तोला, काली मिर्च एक माशा पानीमें घोटकर पीनेसे मूत्र कृच्छ रोग दूरहोजाताहै,

६७ राई—राई को पीसकर चोटपर बांधने से चोट अच्छी होजाती है, राई पीसकर मठा अथवा दही में मिलाय काली मिर्चे और नमक डाल हांडी में भर उसका मुंह बांध तीन दिन रख छोडै और चौथे दिन प्रातः समय खाय तो सम्पूर्ण उदर विकार शान्त होवै. ।

६८ माल कांगनी—माल कांगनीका तेल मलने से बादी दूर होजाती है, तथा माल कांगनीके तेल से कीडे मर जाते हैं ।

६९ हलदी—हल्दी तीन प्रकार की होती है १ हल्दी, २ आंबा हलदी, ३ दारु हलदी, हलदी में अनेक गुण हैं हल्दी सर्वत्र खाई जाती है, हल्दी खाने से बुरे पानी का औगुण दूर होजाता है, एक छटाक हल्दी को सवासेर दूधमें खोवा बनाय मिश्री मिलाकर खाने से दोसप्ताह में बादी रोग शान्त होजाता है, आंबा हलदी अति शीघ्र पचजाती है पथरी को तोडती मूत्र को निकालती है, खुजली और चोट पर लेप करै तो चोट और सूजन दूर हो जाती है। दारु हलदी, कालाजीरी, सज्जी, तिल इनको पीस गरम कर लेप करने से चोट अच्छी होजाती है, और सूजन नहीं रहती, ॥

७० बबूर—बबूर का वृक्ष बडा कांटेदार होता है, पत्ती छोटी, फली कुछ लंबी होती है, बबूर की भीतरी छाल जलमें भिगोकर प्रातः समय उसी जल से कुल्ली करै तो दांतों से रुधिर गिरना बन्द होजाता है बबूर की दांतुन करने से दांत पुष्ट होते हैं। बबूर का गोंद दो तोला, गायका मठा पावभर बारह दिन पीनेसे मूत्र कृच्छ्र और प्रमेह रोग शान्त होजाता है, । बबूरकी छाल संध्या को भिगोय सवेरे कुल्ली करने से मुंह का फोडा

समान होते हैं, फूल शहतूत के समान हरा लम्बा सफेद दाने जिसपर जान पडते हैं,। इसके पत्तों की टिकिया आँख पर बांधने से पीडा नहीं होती, इसके छोटे पत्ते घोटकर बालक को पिलावै तो शीतला नहीं निकलती, और निकल चुकने पर पिलाने से शीघ्र आराम होजाती है, कुछ क्लेश नहीं होता,। यह बूटी चिरौंजी के साथ खाने से स्त्री का गिरता हुआ गर्भ रुक जाता है, पानी में पीसकर लेप करनेसे कोढ अच्छा होता है,। छाया में सुखाकर काली मिर्च के साथ खाने से बवासीर जाती रहती है,। यह बूटी मीठे तेलके साथ खाने से हडफूटन अच्छी हो जाती है,। अलसी के तेल के साथ खाने से नपुंसकता दूर होती है। इस बूटी का चूर्ण प्रति दिन खाने से गिद्ध के समान दृष्टि साफ होजाती है,।

७५ अकरकरा—अकरकरा एक जडी है यह गरम खुश्क होवै है, इसका स्वाद चरपरा, रंग काला, तीव्र सुगन्धि वाला होता है, यह मस्तककी तरी को खोलता है, कफ को निकालता है, कमल वाय, पक्षाघात, और छाती की पीडा को दूर करता है। इसके कुल्ले से मुख रोग जाता है, यह रजको

खोलता है, इसका चूरा पेट की शूल को हरता है,।

७६ अजमोद—(करफस) अजमोद के बीजों का रंग काला, प्रभाव गरम खुश्क, यह खांसी दमा. भीतर अंगों की सरदी, और पेट फूलने की मुख्य औषधि है. यह मूत्र अधिक लावें है, भूख को बढावें है, पथरी को तोडे है, इसकी जड पाचक है, जलोदर रोग को हरे है, ।

७७ आकाश बेल (अमर बेल) फारसीमें इस को 'अफ्तीमू' कहते हैं, अमर बेल में पत्ता और फल नहीं होते. यह वृक्षों पर लिपट जाती है और उनको सुखा देती है, बबूल के वृक्षों पर प्रायः दूर से सारा वृक्ष पीला दृष्टि आता है, सब वृक्ष भरपर फैल जाती है फिर उस वृक्ष को बढने नहीं देती, सूत के समान पीले रंग की यह बेल होती है, पीला अर्क भरा होता है, लम्बो गांठ पर छोटा सा फूल पीला और सफेद सा होता है, यह गरमी और बरसात में होती है इसका बफारा देने से कमवारी की पीडा, गुदों की पीडा लकवा, गठिया दूर हो जावै है, । इसका अर्क रुधिर को शुद्ध करै है, उप दंश रोग वाला पीवै तो रोग जाय, । प्लीहा की सूजनपर इसका लेप किया जाता है, बात और

कफके विकार को दस्तों के द्वारा निकालै है, यह तेल मस्तक के सर्व रोगों में उपयोगी है, ।

७८ इन्द्रायन—इन्द्रायन का वृक्ष बेलदार, पत्ता तर्बूज के पत्ता के समान. फूल छोटा पीला, फल कडुवा लाल और सफेद रंग, गरम खुश्क होता है. फारसी में इसको 'खंतल' कहते हैं, गरमी के दिनों में मूड में बहुत मिलै है. । यह सूजन को पटकाती है, दुर्गन्धित कफ और वातके मवादों को दस्त के मार्ग से निकालती है, इसकी मात्रा तीन माशा तक है, । इन्द्रायन बडी तीक्ष्ण औषधि है, इसके खाने से जलोदर और तिल्ली रोग शान्त होता है, । लकवा, मृगी, पेट की पीडा, कम्पवात को हरै है, । उपदंश (गरमी) रोग को दूर करै है, परन्तु इसकी जड का काढा पीवै, । इसकी जड पीसकर पेडू पर लगाने अथवा जड चवाने से मूत्र उतरता है, जलमें पीसकर पेटपर लगावै तो पेट का मल निकल जाता है, । इसकी जड जलाकर दांत में दवाने से पीडा नहीं होती, । इसका अर्क पीने से ज्वर जाता है, । इसकी जड पीसकर पीने से जुलाब हो जाता है, । इसका बीज पानी में घिसकर लगाने से बवासीर शान्त होवै है, । मीठे तेल

में इसका अर्क मिलाकर कान में डालने से बहरा-पन दूर होता है, । इसके पत्ते मलनेसे बाल निकल आते हैं, । इसकी जड़का धूरा करने से प्रसूती स्त्रीका बाकी रहा हुआ रुधिर निकल जाता है । इससे पेट के केंचुए निकल जाते हैं, यह मस्तक के मवाद को छांटे है, इन्द्रायन में अन्य भी अनेक गुण हैं ॥

७६ उश्बा—यह एक घास की शाखा है जो पश्चिम दिशामें होती है, यह जड़ी कड़वा, गरम और खुश्क होती है इसकी मात्रा छै माशे तक है, यह सब प्रकार के मवादको दस्तों के द्वारा निकाले है, छाती, उदर, मस्तक, गुर्दा और मसाने के रोगों को हरे है; यह पसीना और मूत्र अधिक लावे है सूजन को दूर करे है, रुधिर विकार, गठिया आदि रोगों को हरे है ॥

८० इश्क पेचां—इसको फारसीमें, लुबलाब, कहते हैं, यह एक घास की बेल है जो वृक्षों पर चढतीहै, इसके पत्ते हरे, फूल लाल स्वाद कड़ुवा, मात्रा तीन माशे है, यह सूजन को पटकाती, पित्त के मल विरेचन द्वारा बाहर निकालती, इसका लेप सूजन को शान्तकर पीड़ा को दूर करता है, इसमें अन्य

भी अनेक गुण हैं, ॥

८१कुलीजन—पानके पुराने वृक्षकी जड़को कुली नन (कुलंजन) कहते हैं यह गरम खुश्क होता है, इस जड़ी की मात्रा तीन माशातक है, यह कंठ के स्वर को ठीक करता है, गीली खाँसी को हरता है, गुरदा, कटि, और उदर शूलको शान्त करताहै।

८२कायफल (कैफरा)—कायफल एक वृक्षकी छाल है इसका स्वाद कसेला है,इसमें सुगन्ध आवै है, यह छाल गरम खुश्क होती है इसकी मात्रा सात माशेतक है, इसके काढ़ा से कुल्ली करनेपर मुख रोग जाता रहताहै,इसका चूरा नमीको सुखाता है,सूजनको पटकाता है, यह ज्वर, खांसी, बवासीर प्रमेह, तथा सरदी से उत्पन्न हुए रोगों को हरताहै।

८३गोंदनी—गोंदनी का वृक्ष लहसदार होता है, इसका कच्चा फल हरा, पक्का लाल होता है, यह बूटी खांसी को हरती है, गला पड़गया हो तो खुल जाता है, यह पेट के कीड़ों को दूर करै है, वीर्य को गाढ़ा करै है, इसके पत्तों की राख घाव को भरलाती है, इसके पत्ते, जड़ और शाखा की छाल के काढ़ा से मुखके रोग शान्त होते हैं, यह रुधिर बिकार को दूर करै है,॥

८४ चिरायता—चिरायता एक वृक्ष की घास है, इसका स्वाद कडुवा, गरम खुश्क इसकी मात्रा नौ माशे तक, इसका काढा शहत डाल कर पीने से रुधिर शुद्ध होता है, यह सूजन को हरता, मूत्र को खोलता, हृदयको बलदेता, छाती की पीडा, रुधिर बिकार, खुजली, चर्म रोग, कोढ़ जलोदर इन रोगों को शान्त करता है।।

८५—गोभा छत्तादार घास है इस के पत्ता गोल फूल सुंदर सफेद, यह घास गरम खुश्क स्वाद फीका इसकी मात्रा पांच तोला तक है. यह घास कफ विकार कों दूर करती है, सूजन को पटकाती है, पेट के कीडे मारती है, इस का गुजिया साग खाने से भूँख बढती है गठिया और सरदी से उत्पन्न हुये रोग इससे दूरहो जाते हैं,।।

८६ चीता—चीता भी एक घास है ऊसर भूमि में होती है इसके पत्ता हरे, फूल लाल, जडसफेद, होती है, इसका स्वाद कडुवा गरम खुश्क मात्रा तीन माशा तक,। यह कंठ के स्वर को ठीक करे है, गठिया का हितकारी है, मल को विरेचन द्वारा निकाले है,।।

८७छडेला—यह औषधि रस्सी के समान बिना

पत्तों के लिपटी हुई वृक्षोंपर होती है, इसका स्वाद कडुवा, रंग भूरा, मात्रा दश मारोतक, यह उपदंश वात रोग, छाती के रोग, मूत्र रोग, गठिया और भदर रोग को शान्त करे है,॥

८८जंगली सिंघाडा—जंगली सिंघाडा दो प्रकार का होता है १ मीठा, २ कडुआ, यह तेल आदि के बनाने में काम आता है,॥

८६जमाल गोटा—इसको फारसी में, हब्बुल सला तीन, कहते हैं, जमालगोटा का बीज ऊपर काला भीतर सफेद होता है, इसका स्वाद कडुआ, यह गरम खुश्क है, इसकी मात्रा एक बीज, इसको शोधकर खाना चाहिये, यह दस्तावर है, और चर्म के रोग, कोढ और उपदंश रोग को दूरकरता है, इसमें अन्य भी अनेक गुण हैं, ॥

६०तज—यह एक बृक्ष की छाल है, इसका रंग लाल, स्वाद मीठा और तीक्ष्ण, यह गरम खुश्क है, इसकी मात्रा सात माशेतक है, यह गरमी को उत्पन्न करै है, मवाद को पकावै है, नेत्रोंकी दृष्टि को बढातीहै, सिरकाके साथ इसका लेप सूजन को पटकाता है और पीड़ा को दूर करता है ॥

६१ नाग केसर—यह एक बड़े वृक्ष का फूल है, इसकी सुगन्ध तेज होती है, रंग पीला, गरमखुश्क इसकी मात्रा, दो माशे तक है, यह रुधिर को शोधती, पित्तों को विरेचन द्वारा निकालती है, शीतल प्रकृति वाले को बल देवै है, और मेदा के विकारों को मस्तक पर नहीं चढ़ने देवै है, रुधिर के बहाव को, बन्द करै है, इस से दांत पुष्ट होतेहैं,

६२ निसोत—निसोत एक वृक्ष की जड़है फारसी में इसको 'तुरबद' कहते हैं इसका रँग सफेद और पीला होता है, यह गरम खुश्क, मात्रा पांच माशे तक, यह कफ और पतले मलको दस्त के मार्ग से निकालै है, गर्भाशय, मेदा, मस्तक, और कलेजेके मवादों को भी निकालै है, रुधिर विकार को दूर करै है, यहां काली निसोत नहीं लेवै,॥

६३ पिपलामूल—पिपलामूल को फारसी में फिल फिल मोया कहते हैं, इसके चबाने मुख दोष शान्त होवै है, यह कफ को निकालै है, भूख को बढ़ावै है, उदर पीड़ा, हाथ पांव का ऐंठना, प्लीहा, सूजन, अंग पीड़ा, शरदी से उत्पन्न विकार इन सब रोगों को दूर करै है, यह मेदे की गरमी को उभारै है,॥

६४ बाबूना—बाबूना का बृक्ष बारह अंगुल ऊंचा

होता है. इसका पत्ता कटा हुआ, खट्टा तेज हीक-दार, इसका रंग भूरा, फूल पीला, स्वाद फीका सुगन्धित. मात्रा चारमाशे तक, यह सरदी और गरमी के दिनों में बागों में होता है.। इसके पत्तों का अर्क अंगों में गरमी उत्पन्न करता है, सूजन को पटकाता है, इसके पत्तों को अर्क मकोय में पीस कर लगाने से गुरदा का दर्द, अच्छा होजाता है, इसका तेल लगाने से गठिया रोग जाता रहता है, अंगों का फड़कना बन्द हो जाता है, कानमें डालने से बहिरापन दूर होजाता है,। रांगे को गला कर पहाड़ी बाबूना का अर्क डालकर खरल करै, सात बार इस प्रकार खरल करने चांदी बनजाती है,।। बाबूना का अर्क पथरी को तोड़ता है, इसके फूलों का तेल नस और पट्ठों को नरम करता है,।

६५ मुंडी—इसी को गोरख मुंडी भी कहते हैं. इस का झाड़ डेढ़ बिलस्त चौड़ा होता है, यह ऊसर भूमि में तालाब के समीप धान के खेतों के निकट कहीं भूमि पर मिलै है। इसका पत्ता खुर खुरा बहुतछोटा गोल होता है. फूल कदम के समान लाल अथवा बैंजनी रंग की घुंडी सी, यह सरदी और गरमी के दिनों में मिलती है,। रविवार के दिन पुष्प नक्षत्र

में दक्षिण मुख होकर मुंडी को उखाड लावै, और धूप देकर काम में लावै, मुंडी का अर्क पीने से मृगी तिल्ली, रुधिर विकार, पांडु रोग, पीलपाव, कंठमाला, आदि अनेक रोग दूर होते हैं, मुंडीका शर्बत पीने से मोतिया बिन्द रोग शान्त होजाता है, फूल आने पर मुंडी को जडसमेत लावै और छाया में सुखाकर घी, शकर, मैदा के साथ लड्डू बनावै, प्रातः सायं एक एक लडडू गाय के दूध के साथ खाने से बल बढता है, बाल सफेद नहीं होते, नपुंसकता दूर होती है, एक हिंदी कहावत है,कि "सोंठ,शतवरि, मुंडी,कमर झुकै ना डंडी,,। मुंडी की जड बासी पानी में घिसकर आंजने से नेत्रों की ज्योति बढती है, इसकी जड का चूर्ण खाने से अजीर्ण नहीं रहता, एक मुंडी नित्य चालीस दिन तक निगलने से एक वर्ष तक आंख नहीं दुखती है; इसका काढा पीने से कोढ मृगी-और कृमिरोग दूर होवै है,। मूर्च्छा होने पर हाथपर इसका चूर्ण मलै,। इसका पंचांग फूल निकलने से पहले लावै और सालभर तक शकर मिलाकर खाय तो आयु बढै, गाय के दूध में औटाकर पीवै तो बाल काले हो जायँ, गाय के दूध के साथ खाय तो बुद्धिबढै,

बकरी के दूध के साथ खाने से कोढ जाता रहता है,। बकरी के कच्चे दूध के साथ तो नपुंसकता जाय, परन्तु पथ्य से रहे चनाकी रोटी दूध भात शक्कर खाना चाहिये तो। मुंडी सेवन से कोढ रोग जाता है। गाय के मठा के साथ मुंडी सेवन से जलोदर रोग जाता है,। नमक के साथ कफ शान्त होता है,। सोंठ के साथ शरीर स्थूल होता है,। अन्य भी अनेक गुण मुंडी में हैं, मेउडी भी इसी प्रकार होती है॥

६६ बायविडंग—बायबिरंग का रंग काला ाद कडुवा गरम, मात्रा दश माशे तक, बाय ाडंग बात और कफके विकारों को दूर करे है,मेदा और आतोंके कीडोंको थैली सहित निकालकर फेंक देवै है,। और गन्दे मवादों को निकाल कर साफ कर देवे है, फारसीमें इसको विरंजकावली, कहतेहैं,॥

६७भांगरा—भँगरा प्रसिद्ध बूटी है यह वृक्ष २ प्रकार का होताहै,१हाथभर ऊंचा-सफेद, फूल ऊदा सफेद पत्ता लम्बा उसपर बालसे होते हैं, यह सरदी और बरसातके दिनों में जलके किनारे होता है,। दूसरा भँगरा काला पत्ते छोटे बारह अगुल का छत्ता,फूल बैंजने रंग का, यह सरदी में होता है, एक हरादाने दार होता है, हाथपर मलने से काला होजाता है

भंगरा के पत्तों का अर्क काम शक्ति को बढाता है, कफ को निकालता है, इसके सेवन से कुष्ट, उपदंश, गठिया रोग दूर होजाता है, भांगरा के अर्क सेवन से बाल काले होजाते हैं, भंगरा की लुगदी में रांग फूंका जाता है, भंगरा का अर्क हथियार के घाव व घोंवा को अच्छा करता है, तथा नाक में टपकाने से गरमी को निकालकर नकसीर रोग को अच्छा करता है, कंठ के स्वर को खोलता है, । भंगरा के पत्ते घी में सेककर बद पर बांधने से बद बैठ जाती है अथवा लुगदी घी में पकाकर बांधने से बद पककर फूट जाती है, । इसकी टिकिया बांधने से अंड कोश की सूजन दूर हो जाती है, । इसके पत्तों का चूर्ण सेवन करने से बाल सफेद नहीं होते, । भंगरा का सुरमा नेत्रों की ज्योति को बढाता है, भंगरा का पंचांग (पत्ता, शाखा, फूल, फल, छाल) मीठे तेल में पीसकर पील पावपर लगाने से रोग जाता रहता है, । पत्तों की ठंडाई पीने से मूत्रकृच्छ्र रोग अच्छा हो जाता है, इसमें अन्य भी अनेक गुण हैं, ।

९८ भिलावा—भिलावा पहाड़ी वृक्षका फल है, स्वाद कडुवा, इस को शुद्ध करके काम में लावे

शीत जनित रोगों पर यह देना चाहिये, इसकी मात्रा ढढ़ माशाहै, फारसी में इसको 'विलावा' कहतेहैं,

९९ मजीठ—मजीठ को फारसी में इसको 'रूनास' कहते हैं, यह एक वृक्ष की जड़ है, यह जड़ी औटाकर काम में लाई जाती है; इसका स्वाद कड़ुवा, यह गरम और खुश्क है, मात्रा तीन माशे तक, । यह मेदे को वल करती है; मूत्र अधिक लाती है, शीत से उत्पन्न गठिया को दूर करती है, खूनके दस्तों को बन्द करती है, ।

१०० माजूफल—माजूफल एक वृक्षका फल है, यह कड़ुवा है, ठंडा और खुश्क है, इसकी मात्रा चार माशे तक, यह गर्भाशय के मवाद को निकालता है, पुराने दस्तों को बन्द करता है, इसका मंजन मुहां को अच्छा करता है, इसका फांट नकसीर को दूर करता है, इसके लेप से मवाद पक जाता है, इससे वाल स्याह हो जाते हैं खिजाब में काम आता है, ।

१०१ माल कांगनी—माल कांगनी एक घास का बीज है यह गर्महै गठिया व रेंगनवाई और सब प्रकारके दर्दमें काम आवै है,मस्तक को बल देवै है, इसका तेल हथेली पर मलने से नेत्रों की ज्योति

बढती है, मॉस्त कांगनी के सेवन से नपुंसकता दूर होती है, स्मरणशक्ति बढती है, बुद्धि का विकाश होता है, ।

१०२ मेथी—इसको फारसी में 'शमलीत' सूजन पर इसका लेप करै तो सूजन जाय, इसका साग खाने से गठिया वाय जाती है, बात रोग और सर्दीसे उत्पन्न रोग इसके सेवन से दूर होतेहैं,

१०३ मुनक्का—मुनक्का प्यास को शान्त करता है, उभरे हुये पित्त और गरमी को हितकारी है, हृदय और अंतडियों को निर्मल करता है, रुधिर विकार को शान्त करता है, ॥

१०४ लहसन—लहसन गठिया और बात रोगों को खोता है मूत्र और रजको बहाता है, कंठ को साफ करता है, स्वर को खोलता है, स्वांस, धांस और पट्ठ के रोगों को खोता है, धर्म शास्त्रा॰ नुसार इसका खाना अनुचित है, रोग होने पर औषधि समझकर खाय तो कुछ ऐसी हानि नहीं, इसकी गन्ध ठीक नहीं, ।

१०५ रसौत—रसौत का रंग पीला, स्वाद कडुवा, यह मवाद को पकावै है. फटकरी के साथ इसका लेप करने से आंखों की सूजन पटक जाती

है, शीत जनित रोगों में यह उपयोगी है, मूत्र की नली के घाव को यह अच्छा करे है, इसका लेप सूजन को पटकावे है, कँवलवायु पर यह हितकारी है, ।

१०६ संभालूं—संभालू के पत्ते जौ के समान होते हैं, इसका स्वाद कसेला व कडुवा, इसके बीज स्त्री को बन्ध्या कर देते हैं, इसके पत्तों का अर्क तेलमें जलाकर गठिया रोग में मलने से रोग दूर होता है, ।

१०७ सत्यानासी—सत्यानासी को कंडियारी और भटकटैया भी कहते हैं. फारसी में इसका नाम हदक़, है इसका वृक्ष बैंगन के समान होता है, इसकी शाखा और पत्तों पर सफेद कांटे होते हैं, फूल पीले होते हैं, फल सुपारी के बराबर पीला होता है. फल पर सफेद काले छींटे होता है, किसी वृक्ष में सफेद फल होते हैं, यह ऊसर भूमि में सर्वदा मिले है। इसका प्रभाव गरम और खुश्क है, इसकी ठंडाई पीने से उपदंश (गरमी) रोग शान्त होता है इसके फल के लेप से सूजन पटक जाती है, इसके खाने से खांसी और श्वांस दूर होवे है, इसके फूलों का काढ़ा बालक दूध डालताहो उसको पिलाने

से दूध डालना बन्द होता है प्रमेह और मूत्रकृच्छ्र रोग जाता है, इसका तेल सात बूंद खाने से हैजा और आतशक रोग अच्छा होता है, इसकी जड पीसकर धुआं पीने से भी आतशक रोग अच्छा होता है. इसका तेल सात बूंद खाने से नींद आती है. । इसके बीज खाने से पसीना आता है, ज्वर की पीडा शान्त होतीहै, इसकी जड पानी में पीसकर भगन्दर और छाजन पर लगाने से रोग दूर होजाता है, । तथा इसका दूध नेत्र पीडा शान्त होती है, उपदंश के घाव पर लगाने से पीडा दूर होती है, इसका अर्क आंख में लगाने से पीला पन जाता है, । इसका बीज पानी में पीसकर पीने से विष और विषैले जीव का विष दूर होता है, इसको पीसकर लगाने से पुराना फोडा अच्छा हो जाता है, । इसका दूध लगाने से नेत्रों की लाली दूर होतीहै और फुन्सी व जाला दूर हो जाता है, ।

१०८ सनाय—सनाय प्रसिद्ध घास है इसके पत्ते मेंहदी से बडे होते हैं, यह कसैली गरम है, इसकी मात्रा नौ माशे है, यह कफ को छांटती है, मल को विरेचन (दस्त) द्वारा निकालती है, मस्तक

को निर्मल करती है खांसी, श्वास, खुजली, गठिया, हाथ पांवकी झनझनाहट, शूल आदि रोगोंको हरती है, सनाय खानेकी विधि पहले भागमें लिखी गईहै।

१०९ सैंजना—सैंजना वृक्ष बडा होता है, इसके पत्ते हरे फलियां लम्बी होती हैं, इसकी मात्रा छै माशे है; इसके पत्तों का साग खाने से छाती की पीडा जाती है, पत्ता पीसकर लगाने से शिर पीडा शान्त होती है, पत्तों के लेपसे फोडा अच्छा होता है, पत्तों का अर्क आंख में लगाने से रतौंधी जाती है, कान में डालने से कान के घाव का पीव निकल कर कान अच्छा होजाता है, गोंद को दवाने से दांतकी पीडा दूर हो जाती है, गोंद खाने से मूत्रकृच्छ्र रोग शान्त होजाता है, अर्क पीने से शूल रोग जाता है, पत्तोंके बफारा से और अर्क मलने से गठिया रोग अच्छा होता है, जड खाने से लकवा अच्छा होता है, और तेलमें जडको औटाकर लगाने से खुजली अच्छी हो जाती है।

११० अतीस—अतीस एक घास की जड है, रंगभूरा, प्रभाव गरम खुश्क, यह भोजन पचाती है, काम शक्ति को प्रबल करती है; कफको हटाती है, दस्तों को बन्द करती है, जलोदर और बवा-

सीर रोग को शान्त करती है, ।

१११ असपन्द—असपन्द एक फलका बीज है, रंग स्याह, स्वाद कडुवा, यह गरम खुश्क,मात्रा तीन माशे, इसको खाने से आंतों का मवाद छूट जाता है, यह शूल पीडा, मृगी, श्वास, जलोदर सरदी से उत्पन्न रोगों को हरे हैं, रज को बहाता, रुधिरको शुद्ध करता और काम शक्तिको प्रबलकरैहै,

११२—आम प्रसिद्ध मेवा है, बलकारक है, कच्चा भून कर खाय तो नरीका कोप शान्त होता है, इसका चूर्ण प्रमेह को नाश करता है. इसकी गुठली की मींगी वीर्य को गाढा करती है, ।

११३ इन्द्र जौ—इन्द्रजौ दो प्रकार का होता है, १ मोटा जो सेवन करने योग्य होता है, दूसरा कडुवा लेप के योग्य होता है, यह कटि पीडा, पसली के दर्द को दूर करता है, और गर्भाशय की पीडा, पुरानी खांसी, श्वास को हरता है, काम शक्ति को बढाता तथा पथरी को तोडता है, ।

१२४ आलू बुखारा—आलू बुखारा प्रसिद्ध फल है, यह ठंढा है, और तर है, इसकी मात्रा १५ से ३० दाने तक है, यह ज्वर प्रकोप को हलका करता है, रक्त पित्त ज्वर को खोता है, खुजली को

दूर करताहै,पित्तोंको शान्त करताहै,प्यास को हरताहै।

११५ एलुवा—एलुवा घी ग्वार के पट्ठा को निचोडकर बनाया जाता है. यह बहुत कडुवा होता हैं, मात्रा ४ माशे तक, यह दस्त करै है, दृष्टि को बढाता है, कफके मल को छांटता है, नेत्र रोगको हितकारीहै, पुराने घावोंको भरलाताहै,

११६ कहरवा—कहरवा एक वृक्ष का गोंद है, रंगलाल और पीला, स्वाद फीका सुगन्धित, मात्रा १ माशा तक, यह रुधिर को रोकता है, । ऐंठ के दस्तों को अच्छा करता है, बलिष्टहोताहै,।

२१७ कुकुरौंधा—कुकुरौंधा एक घास है, इसके पत्ते कासनी के पत्ते के समान होते हैं, यह कडुवा और गरम खुश्क होता है, इसके पत्ते खाने से नेत्रों की ज्योति बढती है, और केलि की इच्छा प्रबल होती है. इसके फूल सूंघने से नकसीर अच्छी होती है, इसका अर्क कानमें टपकाने से ज्वर नहीं आता, आंखमें डालने से लाली दूर होती है, अर्क पीने से जलोधर, बवासीर, हृदय पीडा शान्त होती है, पेट के कीडे मरजाते हैं, इसको लेप मवाद को साफ करता है। और मूत्र लाता है, इसमें अन्य भी अनेक गुण हैं,॥

११८कपूर कचरी—कपूर कचरी एक वृक्ष की जड सोंठ के समान होता है, यह बाहर से भूरी भीतर सफेद और कडवी गरम खुश्क होतीहै, इसकी मात्रा ४ माशे तक है, यह मस्तक और मेदा को बल देती है, हृदय को हितकारी है, इसका सूखा चूर्ण मलने से सूजन पटकजाती है।

११९कंघी—कंघी चार हाथ तक लंबी घास होती है इसके पत्ते हरे फूल पीले होते हैं; फूल का रंग काला होता है, स्वाद कुछ कडुवा सा और फीका होता है, यह गरमी और वर्षा के दिनों में मिलती है, इसके पत्ते खाने से बवासीर रोग अच्छा होता है, मूत्र खुलता है, इसके पत्ते उबाल कर बांधने से फोडा अच्छा होता है, इसके पत्ते जल में पीस शहत मिलाकर पीने से कमलवाय रोग शान्त होता है, इसके पत्तों के अर्क में कन्द डालकर पीने से गरमी से उत्पन्न उन्मत्तता दूर होती है, इस के पत्ते घोटकर पीने से उपदंश रोग जाता है; इस के पत्तों का चूर्ण खाने से प्रमेह रोग अच्छा होता है, शाखा व पत्ते घोटकर पीने से मूत्र कृच्छ्र रोग दूर होता है, इसका बीज पानी के साथ लीलजाने से बवासीर का रुधिर बन्द होता है, इसकी कुल्ली व

दातून करने से दांतों की पीडा शान्त होती है. इसके लेप से सूजन पटकती है और मूत्रकी नली का घाव इससे अच्छा होजाता है,॥

१२०कुसुम—कुसुम वृक्ष दोहाथ ऊंचा होता है, इसका फूल लाल, स्वाद कडुवा, मात्रा चार माशा तक, यह नींद लाता, सूजन को दूर करता; मवाद। को पकाता और जमे हुये रुधिर को पिघलाकर पतला कर देता है, शहत के साथ इस का लेप दाद, खाज, स्फेद दाग, और बवासीर रोग को दूर करता है, तथा देह का रंग ठीक करदेताहै,। इसका तेल गांठया व नासूर को खोता है, ॥

१२१कालाजीरा—कालाजीरा एक घास का बीज जीरे के समान होता है, यह कफको छांटता है, पेटके कीडे निकालता है, पाचक होने से भूख को बढाता है, भुने हुये सुहागा में मिलाकर दूधके साथ सेवन करने से बवासीर रोग शान्त होता है, इसके लेप से सरदी की सूजन पटकजाती है, ॥

१२२कसौंदी—[1]कसौंदी का वृक्ष एक हाथ से दो हाथतक ऊंचा होता है, इसके पत्ते घी से सेंककर

---

[1] दोहा—पत्र कसौंदी विष हरै, बीजै बीज बढाय।
फूल रतौंधी हरत है, जड़से दाद नशाय ॥१॥

फोडा पर बांधने से फोडा अच्छा होजाता है, पीडा तुरन्त शान्त हो जाती है यह विषैली वस्तु पीनेके विषको दूर करैहै,सूजनको पटकावे है,इसकी जडका लेप करने से झाई, दाद, और बवासीर जाय है, ॥

१२३खसखस—खस खस काली सफेद दोप्रकार की होती है, सफेद की मात्रा छै माशे तक काली की चार माशे तक, इसके सेवन से सफेद प्रदर रोग जाताहै, शरीर मोटा होता है, पुराने दस्तोंका रोग जाता रहता है, पित्त, छाती और फेफडे के रोग दूरहो जाते हैं यह नींद लाती है,॥

१२४कुचला—कुचला एक वृत्तके फल का बीज है, इसकी मात्रा दोरत्ती तक है, यह घात विष है, यह कटि पीडा, गठिया, रेंगनबाई, और पत्तों के रोगों को हितकारी है, यह पथरीको तोडता है, मूत्र और रज को खोलता है, इसके लेप दाद, खाज, झाई और बवासीर को खोता है,॥

१२५गन्दला—यह साग देशी और पहाडी दो प्रकार का होता है, यह गरम खुश्क होता है, इस की मात्रा सात माशे तक है, यह कटि पीडा को शान्त करता है, पाचन शक्ति को बढाता है पेटके कीडे मारता है, मूत्र और रजको खोलता है, उदर

शूलको दूर करता है, इसका लेप इन्द्री को बलवान् करता है, बवासीर को दूर करता है॥

१२६ गुलधावा—गुलधावा वृक्ष के फूल काम में आते हैं मात्रा चार माशातक, इसका फूल पेट के कीड़ों को मारता है, दस्तों को बन्द करता है,इसके काढ़ामें बैठनेसे कांच निकलना बन्द होजाताहै. प्रमेह और स्वप्न दोषको हरताहै;इसका फूल भूख बढ़ाताहै,

१२७गूलर—गूलर का वृक्ष प्रसिद्ध है, इसकी जड़के काढ़ा को पीने से गर्भ नहीं गिरता, जड़का चूर्ण खाने से अजीर्ण दूर होता है,। इसके पत्तों की ठंढाई पीने से दस्त बन्द हो जाते हैं,। इस की छाल पीसकर नाखून के घाव पर बांधने से घाव अच्छा होजाता है,। इसके कोमल पत्ते पीस कर मिश्री मिलाय खाने से बवासीर का खून बन्दहोता है,। इसकी छालका लेप फुंसियों को खोता है,इस का दूध टपकाने से नासूर अच्छा होजाता है, दूध का फाया फुंसी पर रखने से फुंसी अच्छी होजाती है, इसके पत्तों का अर्क पीने से शंखिया शान्तहो जाता है, गूलर के अर्क में तांबा फूंका जाता है॥ सूखी खांसी, प्लीहा, छाती की पीड़ा इससे जातीहै, मुंहसे खून आताहो तो गूलर का फूल पानी में

पीस मिश्री मिलाकर खावै, गूलर की लकड़ी राख बुरकाने उपदंश के घाव अच्छे हो जाते हैं,।

१२८गुलनार—गुलनार एक प्रकार का फूल है इसके वृक्ष में फल नहीं आते यह सूजन को पटकाता है, खूनको रोकता है, पाचन शक्ति को बढ़ाता है,इसकी मात्रा सात माशा तक है,॥

१२६निर्विषी—यूनानी हिक्मत में दिर्विषी को जदवार, कहते हैं यह एक प्रकार की जड है,इस का रंग स्याह,स्वाद कडुवा इसकी मात्रा दो माशाहै, इसकी जड खोदने से तीन गांठें निकलती हैं,निर्विषी महामारी (प्लेग, ताऊन,) की परमोत्तम औषधी है. इससे गिलटी गलजाती है. सूजन पटकजाती है, विषके विकार को दूर करके रुधिर को शुद्ध करती है, इसमें अन्यभी अनेक गुण हैं इसको शोध कर काममें लाना चाहिये, ॥

१३०वारतंग—वारतंग एक प्रकार की लताहै, इसके पत्ते वकरी की जीभ के समान होते हैं, यह बूटी वागों में होती है, उसमें सीधी खड़ी शाख निकलती है. फूल शहतूत के अनुसार होता है, इसका साग ववासीर के रुधिर को रोकता है, इसके बीजों का सेवन करने से प्यास बुझती है, गाय के

घी में मिलाकर गुदा में लेपकरने से गुदाके अनेक रोग दूर हो जाते हैं ॥

१३१मुच कुन्द—मुचकुन्द का वृक्ष दश हाथ ऊंचा होता है, इस के फूल सफेद पत्ते से होते हैं, फूल पीसकर कुछ गरम कर मस्तक पर लगाने से शिर पीडा शान्त होती है, फूलों का हलुआ बवासीर के रुधिर को बन्द करता है, ॥

१३२वक्कन—यह बेल दो हाथ लंबी होती है, जडी बूटियों में यह प्रसिद्धि है, इसका फूल घुंडी सा कुछ नोकदार होता है, यह कडुवी होती है, इसको पीसकर लगाने से सूजन दूर होती है और फोडा पककर फूट जाता है, इसके पत्ते घोटकर पीने से मूत्रकी जलन दूर होती है, पथरी टूटतीहै, खांसी, ज्वर दूर होवे है, और रुधिर शुद्ध होता है,।

१३३प्याज—प्याज और लहसन प्रसिद्धि है, प्याज का अर्क आंख में लगाने से रतौंधी जाती है, कान में टपकाने से बहिरापन जाता है, इन्द्रीपर लगाने से नंपुसकता जाती है, खाने और मलने से कुत्ता काटे का विष शान्त होता है, इस के बीजों का धुवां पीने से दाढ के कीडे मरजाते हैं, यह भूख को बढाता है, भोजन को पचाता है, ॥

१३४तावीज—तावीज इन्द्रजौ के वृक्ष की छाल है, इसकी मात्रा तीन माशेतक, यह छातीके रोग, मस्तकशूल, नजला, और आंतों के विकार को शान्त करती है, नकसीर फूटती हो तो यह नाक का रुधिर वन्द करती है. इसकी धूनी वहते हुये रुधिर को बन्द करती है ॥

१३५बन्दाल—इसको कडवी तुरई भी कहते हैं, यह कंवलबाय और जलन्धर, बवासीर आदि रोगों को हितकारी है, तथा श्वांस और धांस को भी हरै है. इसके बीज खांड के साथ सेवन करने से स्त्री का रज खुलता है, ॥

१३६मूली—मूली प्रसिद्ध भाजी है, इसके बीज भी औषधि के काम में आते हैं यह स्वयं (आप) तो देर में पचती है, परन्तु भोजन को शीघ्र पचाती है इसकी भाजी मूत्र और रजको खोलती है, बवासीर को खोती है, पुरानी खांसी को दूर करती है, पथरी को तोडती है, कफको छांटती है. इस के बीज सूजन को पटकाते हैं, काम शक्ति को बढाते हैं, बमनको लाते हैं प्लीहा की पीड़ा को शान्त करते हैं, शिर के बाल गिरते हैं, इसमें अन्य भी अनेक गुण हैं जो फिर लिखेंगे, ।

१३७ हुलहुल—हुलहुल वृक्ष एक हाथ ऊंचा होताहै, गर्मी के दिनों में तमाखू और खरबूज तरबूज के खेतों में मिलता है, इस में पांच २ पत्ते इकट्ठे होते हैं पत्ते छोटे छोटे और फूल भी छोटे सफेद रंग के होते हैं इसमें डंटी लंबी निकलती है, डंडी पर दानें और दाने के समान पत्ते और ऊपर फूल जीरा के अनुसार बीज में दोनों और फलियां निकली हुई होती हैं, । इसको गांव वाले आग ढूर हुश कहतेहैं,इसके पत्तोंकी टिकिया बांधनेसे [illegible] बैठ जाती है, हाथकी नाडी पर इसकी टिकिया बांधने से जाडा और ज्वर रुकजाता है,इसके [illegible] कानोंमें डालने से कान की सूजन दूर हो जाती है, इसके पत्ते हाथ पांव पर मलनेसे ज्वर नहीं आताहै, इसके पत्ते पानी में उबाल कर उस पानी से शौच लेने पर बवासीर का रुधिर बन्द होजाता है; इसके पत्तों की भुजिया अथवा पत्तों का चूर्ण खाने से दोनों प्रकार की (खूनी बादी) बवासीर जाती रहती है, इसके पत्तों की टिकिया घाव पर बांधने और ठंढाई पीने से उपदंश (आतशक) रोग शान्तहो जाता है, इसके पत्ते घी लगाकर खाने से अफीम का नशा जाता रहता है, इसके पत्ते

काली मिर्च के साथ खाने से ज्वर उतर जाता है, इसके बीज चबाने से सब प्रकार का विष शान्त होजाता है, इसके बीज और छाल पीस कर मीठे तेलमें मिलाकर इसका तिला बना लेवै, उस तिला को लगाने से इन्द्री कठोर हो जाती है, इसकी भुजिया खाने से बहुत प्यास का रोग दूर होजाता है, इसका साग दही के साथ खाने से रुधिर तुरन्त बन्द होजाता है, यह वीर्य को रोकता और प्रमेह को दूर करता है, ।

१२८ हार सिंगार—हरसिंगार का वृक्ष प्रसिद्ध है, इसका फूल सफेद, फूलकी डंडी पीली, उससे पीला रंग बनजाता है, इसका गोंद आदि भी काम में आता है, हरसिंगार के पत्ते सब प्रकार के ज्वरों को हरने वाले हैं, फूलों का गुलकन्द बनाकर खाने से उन्मत्त रोगी अच्छा होजाता है, इसके पत्तों की ठंढाई पीने से खूनी बवासीर जाती रहती है, इसके पत्ते पीसकर मलने से दाद खाज रोग अच्छा होजाता है, हरसिंगार काम शक्ति को बढाता है, इसके फूल शीतल प्रकृति वाले मनुष्य के हृदय को हितकारी हैं, ।

१२९ ब्रह्मी—ब्रह्मी बूटी का वृक्ष छोटा होता

है, इसका पत्ता कटा हुआसा गोल, फूल बैंजनी, फल घुंडीदार, इसका स्वाद कसैला और कुछ कडुवा. यह नदी के तटपर अथवा अधिक जल के समीप नम्र भूमि में होती है, गंगाजी और गोमती जी के तटपर अधिकता से प्राप्त होती है. यह सदा बनी रहती है, । इसकी मात्रा तीन माशा तक पत्तों का सूखा डेढ़ माशा तक, इस बूटी में अनेक गुण हैं, वमन विरेचन के द्वारा चित्त को स्वास्थ्य करके इसका सेवन करै, इसके सेवन करने से अनेक रोग शान्त हो जाते हैं, परन्तु इसमें उष्णता अधिक है इस कारण दूध और घी अधिक खाना चाहिये, इसके सेवन के दिनों में दिन को दूध पीवै और रात को घी सहित एकबार भोजन करै, अधिक वायु सेवन न करै, जल कमती पीवै, गुड़ तेल खटाई लाल मिर्च और नमक नहीं खाय, एक श्लोक प्रसिद्ध है, कि,

'गुडुच्य वा मार्ग विडंग शंखिनी ब्राह्मी वचो शुंठि शतावरीच । घृतेन लीढा प्रकरोति मान वांस्त्रिभिर्दिनै श्लोक सहस्र धारिणं, १

अर्थ—गुडूची (गिलोय) ओंगा (लटजीरा) वायविडंग, शंखाहुली, ब्राह्मी, बच, सोंठ, शतावरी,

इनको समान भाग लेके घी में अवलेह बनाय जो मनुष्य सेवन करता है वह तीन दिनके सेवन में हजार श्लोक पढ़ने की सामर्थ्य वाला होजाता है ?। ब्रह्मी की जड़से पत्ते अधिक प्रभाव वाले होते हैं, ब्रह्मी के पत्ते पीसकर बांधने से चोट अच्छी हो जाती है, नासूर अच्छा हो जाता है, पत्तों की टि- किया बांधने से आंखों की लाली दूर होजाती है, पत्तों का काढ़ा पिलाने से बालक की शिर पीड़ा जाती रहती है, पत्तों की ठंढाई पीने से शिर में से गर्मी निकल कर तरावट आती है, ब्रह्मी बूटी को पीसकर हाथ पांवों पर लेप करने से गर्भवती स्त्री के मरा हुआ बालक शीघ्र उत्पन्न होता है, ब्रह्मी का घी बनाकर खाने से उन्मत्तता और मृगी रोग शान्त होता है, यह बूटी ज्वर, खांसी, श्वास, प्र- मेह, बवासीर, गर्मी, बांझपन, तिल्ली, कुष्ट, अजीर्ण, वमन, आदि रोगों को शान्त करती है, ।

१४० कुरंड—कुरंड बहुत छोटा वृक्ष कतादार होता है, इस का पत्ता बहुत छोटा गोल पोदीना के पत्ते के समान, फूल पीला बहुत छोटा धान के अनुमान फली, शाखा कुम्हड़ी, गर्मी और बरसात में रेतीली पहाड़ी भूमि पर यह बूटी मिलती है, ।

इसके पत्तों का चूर्ण दूध के साथ सेवन करने से मूत्रकृच्छ्र, प्रमेह, कटि पीडा, चोट ये रोग अच्छे हो जाते हैं, इसकी लुगदी में चांदी रखकर फूकने से एक ही आंचमें भस्म हो जाती है, यह बूटी सेवन करै तो पलकी वृद्धि होवै, इस बूटी का चूर्ण गो मूत्र के साथ सेवन करनेसे कुष्ट रोग शान्त होताहै,

१४१ ब्रह्मदंडी—ब्रह्मदंडी वृक्षकी ऊंचाई हाथ भर यह बूटी बेलदार छत्ता कांटेदार इसका पत्ता लंबा बहुत बारीक, और फूल सफेद कुछ सुर्खी लिये स्वाद कडुआ, यह सरदी गरमी में कंकरीली भूमि पर होती है. ब्रह्मदंडी के सेवन से बुद्धि बढती है, वीर्य गाढा होता है, इसका काढा रुधिर को शुद्ध करता है, इसके खाने और मुखपर उबटन करने से मुख का रंग सुन्दर गुलाबी हो जाता है, इसको घोटकर पीने से मूत्र के साथ रुधिर का आना बन्द हो जाता है, इसके पत्तों का चूर्ण खाने से नपुंसकता दूर हो जाती है, इसकी छाल का चूर्ण सेवन करने से प्रमेह रोग शान्त हो जाता है. इस के पत्तों की ठंढाई पीने से उपदंश (गरमी) रोग दूर हो जाता है, ।

१४२ विष खपरा—विष खपरे का वृक्ष छोटा,

पत्ते छोटे फूल गुलाबी लाल छत्ता, जड़ सफेद मोटी, यह सरदी और वर्षा के दिनों में मार्ग पर खेतों में प्राय होता है, विष खपरा के पत्तों की लुगदी में तावां भस्म हो जाता है, इसके पत्ते और पत्तों का रस दूध मिलाकर पीने से मूत्र छुटता है, उपदंश रोग जाता है, परन्तु उपदंश में केवल पत्तों का रस पीना चाहिये, सांपके काटने पर विषखपरा का रस पीना चाहिये, इसका पत्ता नमक मिलाकर खाने से वाय गोला रोग अच्छा होता है, पत्तों का रस पीने से नमूनिया रोग दूर होता है. विषखपरा की जड का चूर्ण पान में रखकर खाने से श्वास रोग जाता है, । जड पीसकर आंख के नासूर पर लगाने से आंख अच्छी हो जाती है, जडको भंगरा के रस में घिसकर लगाने से मोतिया बिन्द अच्छा होता है, । बिषखपरा की जड का काढा पीने से स्त्री का रज खुलता है, मीठे तेल में घिसकर लगाने से पांडु रोग अच्छा हो जाता है, तथा जडका चूर्ण पानीमें पीस आंखों पर लेप करने से ढलका और बाम्हनी रोग जाता रहताहै, स्त्री छाती पर लगावै तो छाती नहीं पके, जडको घिसकर फोडा पर लगाने से फोडा का म-

बाद बहना बन्द होजाता है, जडको दहीमें औटा- कर फोड़े पर लेप करने से फोड़ा फूटकर अच्छा हो जाता है, जड पीसकर बांधने से बवासीर, गंज और कान की पीड़ा शान्त हो जावे है, ।

१४३ वायसुरी—वायसुरी का वृक्ष एक हाथ ऊंचा होता है, यह ठंढी, इसका पत्ता छोटा सफेद लंबा, फूल बैंजना स्याही लिये लालसा, कच्चा फूल हरा होता है, फूल पकने पर सफेद होकर सूख जाने से नीचे गिरकर इकट्ठे होजाते हैं, यह गर- मियों में भूड में होती है, । इसके पत्तों का वफारा लेने से और अर्क लगाने से गठिया वाय का रोग अच्छा होता है, इसका काढा पीने से शूल रोग नाश होजाता है, ।

१४४ बनगोभी—जंगली गोभी का छत्ता चौडा, फूल छोटा पीले रंग का, पत्ता लंबा मोटा, स्वाद कसैला, यह बूटी सरदी के दिनों में ऊजड़ स्थान पर होती है, इसके पत्तों को पीस घी में छौंककर बवासीरके मस्सों पर बांधनेसे मस्से अच्छे हो जाते हैं, फोडा पर बांधने से फोडा अच्छा हो जाता है पत्तों की टिकिया गरम कर बांधने से फोडा बैठ जाता है, अथवा फोडा फूट जाता है, इस

के पत्ते वकरी के दूध में पीसकर विषैले स्थान पर बांधने से विष शान्त होजाता है, पत्तों की ठंढाई पीने से खूनी ववासीर रोग जाता है. ज्वर उतर जाता है, इसकी जडकी ठंढाई पीने से गरमी और मूत्र कृच्छ्र रोग दूर हो जाता है, इसकी टिकिया बांधने से नेत्रों में पीडा नहीं होती है. इसके पत्तों का साग खाने से बालक की माता के स्तनों में दूध बहुत उतरता है, । इसकी लुगदी में हरताल, रांग. अभ्रक, तावां, चांदी, और मूंगा ये फूककर भस्म हो जाते हैं ॥

१४५ काला भँगरा—काला भंगरा को कूकर छिंदी भी कहते हैं, इसका वृक्ष तीन हाथ का, पत्ता बनगोभी के पत्ते के समान बहुत छोटा, फूल सफेद घुंडी सा होता है, स्वाद खट्टा, यह सरदी और बरसात में चिकनी भूमि पर मैले कुचैले स्थान में होता है, । काला भंगरा कुकरौंधा वृक्ष के अनुसार होता है, इसके पत्तों का रस लगाने से फोडा और फुंसी जाय है, इसकी ठंढाई पीने से ववासीर अच्छी हो जाती है, इसको काली मिर्च के संग पीसकर लगाने से झनझनाहट दूर हो जाती है, ।

१४६ तरी—तरी बूटी सामान्य लता है, इसके पत्ते दो फांक दार, फूल दिउल के समान पीले रंग के होते हैं, इसका स्वाद खट्टा, गरमी के दिनों में यह बूटी जल के समीप खन्दक में होती है,। इस बूटी के खाने से भूख बढती है, पिंड रोग अच्छा हो जाता है,। मीठे तेल में इसकी जड़, औटाकर लगाने से बाल काले होते हैं, इसकी टिकिया बांधने से दुखती हुई आंख अच्छी हो जाती हैं, इसकी लुगदी में रुपया फूंकने से भस्म हो जाता है.।

१४७ पिया बांस—पिया बांस का वृक्ष चार हाथ तक ऊंचा होता है. और ऊसर भूमि में सदैव मि, लता है, इसके पत्ते जामुन के पत्तों के अनुसार होते हैं, फूल सफेद वा पीले कांटेदार होते हैं,। इसके पत्ते घोटकर पीने से खूनी दस्त बन्द होते हैं, इसके पत्तों की टिकियां बांधने से दुखती हुई आखें अच्छी हो जाती हैं,। इसके पत्तों के काढा से कुल्ली करने से मुंहां अच्छा होजाता इसके पत्तों के मलने से हिलतेहुए दांत पुष्ट हो जाते हैं,। पत्तों के रसमें शहत मिलाकर खावे तो दांतों से खून निकल ना वन्द हो जाता है, इसकी दांतून करने से दांतों की पीड़ा शांत होतीहै, इसकी जड का चूर्ण स्त्रियों

के सोम रोग को हरता है, इसकी जड का काढा पीने से शिर पीडा जाती है, इसकी जडका काढा करेली के साथ पीने से जीर्ण ज्वर दूर होता है, । इसकी जडका चूर्ण गायके दूध के साथ खाने से स्त्री का बांझपन दूर होता है, ।

१४८ जलजमुनी—जल जमुनी एक बेल-दार वृक्ष है, इसकी लंबाई एक हाथ, फूल सफेद, घुंडी सी दानेदार फल ऊदा; दूसरे प्रकार की जल जमुनी का पत्ता अरहर के पत्ते के समान, फूल नीला होता है, यह सरदी के दिनों में अधिक मिलती है, करील के वृक्ष के सपीप होती है, प्रायः दीवारों में भी प्रगट होजाती है, इसके पत्तों का चूर्ण खाने अथवा पत्ते घोटकर पीने से प्रमेह रोग दूर होजाता है, वीर्य गाढा हो जाता है, अजीर्ण नहीं होता, इसके पत्तोंके अर्क से पानी जम जाता है, और टूटी हुई पहूडी जुड जाती है, ।

१४९ पत्थर फोडी—पत्थर फोडी बूटी का छत्ता खेत में तरकारी की जड के समीप उत्पन्न होजाती है, इसका पत्ता बहुत छोटा फूल पीला, यह गरमी और बरसात में होती है, इस बूटी की ठंढाई पीने से मूत्रकृच्छ्र और प्रमेह रोग जाता

रहता है, इसे घोटकर पीने से पथरी टूटकर नि-कल जाती है, ।

१५० जयंती—जयंती बूटी एक हाथ ऊंची होती है, इसका पत्ता लम्बा और छोटा कुछ सफेद रंग का होता है. गर्मी के दिनों में खेतों में होती है, । इसको खाने से दूध बहुत बढता है, परन्तु पशुओं के खाने योग्य यह बूटी है, इसकी छाल का चूर्ण खाने से उपदंश रोग शान्त हो जाता है, अन्य भी अनेक गुण इसमें हैं, ।

१५१ झाऊ—झाऊ का वृक्ष प्रसिद्ध है, गंगाजी के तटपर झाऊ अधिक होता है. इसका वृक्ष चार हाथ तक ऊंचा होता है, इसके पत्ते शाख ही में बहुत बारीक, फूल बैंजनी रंगके बालदार, इसमें फल नहीं होता है, नदियों के तटपर रेती में होता है, झाऊ के पत्तों का चूर्ण तिल्ली को दूर करता है. इसके पत्तों की सुगन्धि लेने से नजला और जुखाम जाता है, इसकी लकडी की धूनी से इसकी लकड़ी के पात्र में खाने पीने और इसका अर्क पीने से प्राचीन ज्वर (तपेदिक) रोग शान्त होजाता है, झाऊ की भीतरी लकडी पानी में घिस आंख के समीप लेप करने और पत्तों का

काढा पीने से नेत्र पीड़ा शान्त होजाती है, इसमें अन्य भी अनेक गुण हैं, ।

१५२ जलनीम—जलनीम वर्षा ऋतु में जल में होता है, यह बारह अंगुल का छत्तासा होता है, इसका पत्ता छोटा फूल ऊदा, इसका स्वाद कड़ुआ, कसैला तीक्ष्ण है, । इसकी ठंढाई पीने से खून साफ हो जाता है, खुजली जाती रहती है, तथा उपदंश और कुष्ट रोग शान्तहोजाताहै

१५३ दुग्धी—दुग्धी दो प्रकार की होती है, १ कंकर दुग्धी, २ मेदा दुग्धी, कंकर दुग्धी कक, रीली भूमिमें होती है, मेदा दुग्धी साधारण रेतीली भूमि में होती है, इसका बारह अंगुल का छत्ता काले रंग का, इसका पत्ता अरहर के पत्ते कासा, हर गांठ पर दो पत्ते और एक झुंड सा छोटे हरे, दानों का होता है, इसके फूल सफेद, इस में फल नहीं होते हैं, । बड़ी दुग्धी घी और लौंग के संग खाने से खूनी बवासीर शान्त होती है, इसके पत्ते खाने से शंखिया का ततकाल विष शांत होजाता है. हरी दुग्धी घोटकर पीने से दस्त बंद होजाते हैं, मूत्रकृच्छ और कुष्ठ रोग शांत हो जाता है, प्रमेह भी जाता रहता है, छोटी दुग्धी के पंचांग

का चूर्ण बाजी करण है, अधिक रुधिर के बहाव को रोकता है, बड़ी हुरड़ी के रसमें बुझाकर छोटी हुरड़ी की लुगदी में रखकर तीन बार में चांदी की बहुत अच्छी भस्म तयार हो जाती है. छोटी हुरड़ी के पत्तों में बंग और हरताल फूका जाता है.

१५४ जवासा—जवासा का वृक्ष एक हाथ ऊंचा, भाड़ कांटेदार पत्ते मेंहदी के पत्ते के समान एक ओर कुछ कटा सा होता है. फूल बैंजनी रंग का होता है, इसमें फल नहीं होते, यह गरमी के दिनों में नदी के तटपर अधिक होता है. वर्षा होने से सूख जाता है, गाय के दही के साथ जवासा खाने से पेट की मरोड़ और मड़ोह के दस्त बन्द हो जाते हैं, जवासा खाने से मदिरा का नशा उतर जाता है, जवासा की ठंढाई पीने से रुधिर विकार, कुष्ठ, मूत्र कृच्छ रोग शान्त होता है. इसको घोट कर पीने से मृगी नहीं आती है, इसका सुर्मा लगाने से फुल्ली कटजाती है, जवासा के तेल से गठिया रोग जाता रहता है, इसका काढा घी के साथ पीने से भ्रम रोग दूर हो जाता है, इसको पीसकर पीने से मूत्र के संग रुधिर आने को रोकता है, शिर नित्य दुखता हो तो जवासा

का काढा शकर के साथ पीने रोग जाता रहता है, इसका काढा पिलाने से बालक का हब्बा रोग अच्छा हो जाता है, इसके काढा में बैठने से मूत्र खुलता है, इसकी जड़का अर्क गुरदा के रोग को खोता है, जिस कुवां का जल खारी हो उसके पांच छै गज दूर तक जवासा को लाकर प्रति दिन ताजा बिछावै तो पानी मीठा हो जाता है, जवासा को मलने से मुहांसा अच्छे हो जाते हैं ॥

१५५ धमासा—धमासा का वृक्ष एक हाथ का पत्ते बहुत छोटे, कांटेदार. फूल सफेद, फल दानासा, पहाड़ी भूमि में सदा होता है, इसके पत्ते नीबू के रस में पीसकर लगाने से बाल काले हो जाते हैं, स्त्री को इसके काढा से स्नान करावै कुछ दिनों तक इस का चूर्ण खिलावै तो उसका दूध पीने बालक के शीतला नहीं निकले, धमासा का अर्क रुधिर को शुद्ध करता है, विष, जलोधर, सूजन और प्रमेह आदि रोगों को शान्त करता है, ।

१५६ सरफोका—सरफोका वृक्ष वर्षाऋतु में होता है, यह एक हाथ ऊंचा बायसुरी बूटी के अनुसार होता है, इस पत्ते नील के पत्ते के समान

इसके फूल का रंग गुलाबी और बैंजनी; इस में फल मटर के समान इसका स्वाद मधुर, । इसके पत्तों का धुआं पीने से खांसी जाती रहती है इस का अर्क रुधिर को शुद्ध करता है, इसकी ठंढाई पीने स उपदंश तिल्ली, और फोडा फुंसी आदि रोग अच्छे होते हैं, इसकी जड खाने से हरताल का नशा उतर जाता है, जडको तेल में पीसकर लगाने से घाव अच्छा होता है, जडको मठामें पीस कर पीने से तिल्ली अच्छी हो जाती है, जडलाकर स्त्री की कटि में बांधने से बालक शीघ्र उत्पन्न होता है, जडको पानी में घिसकर पीने को देवै तो विशूचिका रोग जाता रहता है, इसमें अन्य भी अनेक गुण हैं, ।

१५७ श्वासन—श्वासन बूटी रेतीली भूमि में सदा मिलती है, इसका वृक्ष दो हाथतक, पत्ते अरहर के पत्ते के समान सफेद, फूल पीले रंग का होता है, । इसके पत्तों का काढा सब प्रकार के ज्वरों को शान्त करता है इसके पत्ते अथवा बीज पीसकर फोडा पर लेप करने से फोडा अच्छा हो जाता है, इस बूटी के खाने से गठिया रोग अच्छा हो जाता है, ।

१५८ काकजंघा—(कौआ गोडी) काक-जंघा एक लता है, जो दो हाथ तक की होती है, इसकी डंडी सीधी छे पहलू दार होती है, बारह बारह अंगुल पर गांठ होती है, कौआ की जांघ के समान इसकी गांठें होती हैं, पत्ते बहुत बारीक, फूल बैंगने रंग के होते हैं, स्वाद फीका होता है, इस बूटी का पीसकर लगाने से कुष्ठ राग शांत होता है, खाने से रक्त पित्त रोग जाता है. और पेट के कीडे मरजाते हैं, फांतों और आतों के बीच का दर्द जाता रहता है, इससे खुजली अच्छी हो जाती है, इसको पीसकर लगाने से हथियार का घाव जल्दी भर जाता है और रुधिर बन्द होजाताहै,

१५८ कनकौआ—कनकौआ का छत्ता बारह अंगुल तक का होता है, इसका पत्ता मोटा नोकदार, फूल नीला छोटा, यह सरदी और बरसात के दिनों में मैली भूमिपर होता है। इसका पत्ता बर्र काटेपर रगडने से, और पीसकर बीछू काटे पर लगाने से विष शान्त होजाता है, इसमें अन्य भी अनेक गुण हैं, ॥

१५९ करील—करील का वृक्ष चार हाथ तक ऊंचा और घना होता है, पत्ते नहीं होते,

पत्रहीन शाखाओं का समूह होता है. रंगनीला फूल लाल, फल. फालसे के समान जिसको टेंटी कहते हैं. यह बारह मासी ब्रज भूमि में बहुत है, इसकी कोंपलें खाने से तिल्ली अच्छी हो जाती है, पीस कर लगाने से बाल जमते हैं, इसकी लकड़ी की राख मीठे तेल में पकाकर नासूर में टपकाने से पुर जाता है, इसका कोयला तेल में मिलाकर लगाने से उकौता अच्छा हो जाता है, इसकी जड़ पानी में पीसकर लगाने से नाखूना अच्छा होजाता है, इसकी जड़ कूटकर खाने से जलांदर कटिपीड़ा. दमा उपदंश, बवासीर ये रोग शान्त हो जाते हैं, यह ऊसर भूमि पर बनमें होवे है, ॥

१६० खैरेटी—खरैटी एक बेलदार वृक्ष है, इस के पत्ते चौड़े दंतीले. फूल बहुत छोटे पीले रंगके, फल काला दाना के समान, स्वाद फीका लुआब-दार. यह सर्दी और बरसात के दिनों में मूड और कंकरीली भूमि में उपजती है, इसका लहस-दार रस दाद पर लगाने से दाद अच्छा हो जाता है, पीने से वीर्य गाढा होता है, और मूत्र कृच्छ्र प्रमेह रोग अच्छा हो जाता है, इस में अन्य भी गुण हैं. ।

१६१ गोखरू—गोखरू का छत्ता दूर तक फैलता है इसका पत्ता चनाके पत्ता के समान, फूल बहुत छोटा पीला, फल शंखाहुली के अनुसार तिकोना होता है. स्वाद मीठा, यह लुआवदार होता है, वर्षा ऋतु में खेतकी मेंढोंपर ऊसर भूमि में मिलता है, इसका अर्क पीने अथवा चूर्ण खाने से मूत्रकृच्छ्र, प्रमेह, जाता रहता है, इसकी जडका सेवन करने से मूत्र और रज खुलता है, पेडू की पीड़ा दूर होती है, पथरी रोग दूर हो जाता है, 'गोक्षुरकः क्षुरकः शतमूली वानरि बीज बलाऽति बलाच ॥ चूर्ण मिदं पयसा निशिपीतं यस्य गृहे प्रमदा शतमास्ति ॥१॥

अर्थ—गोखरू, तालमखाना, महा छतावरि, कौंच के बीज, गंगेरन की छाल, खैरेटी, इनका चूर्ण दूध के साथ रातमें मिश्री मिलाय वह पीवै जिसके घर में सौ स्त्री हों ॥१॥

१६२ कौंच—कौंच एक लता है यह सरदी और बरसात के दिनों में बनमें मिलती है, इसकी वृक्षों पर चढ जाती है, इसके पत्ते और फल सेम के पत्ते और फलके समान होते हैं, इसकी फली के रोम देह से छू जानेपर खुजली हो जाती है,

इसकी जडका चूर्ण मजीठ के अर्क के साथ हुलास लेने से कंठ माला रोग अच्छा हो जाता है, इसके पत्तों का रस लगाने से बवासीर जाती है, पत्ते खाने से पेट के कीडे मरजाते हैं, इसकी जडके काढा से धोनेपर गुप्त स्थान कठोर हो जाता है, इसके बीज अथवा जडके चूर्ण के सेवन से नपुंसकता और प्रमेह रोग दूर हो जाता है, इसके बीज की मींगी बीछू काटे स्थान पर लगाने से घाव अच्छा होजाता है, ।

१६३ गूमा—गूमा का वृक्ष चार हाथ तक ऊंचा, सीधी शाखा थोडी थोडी दूरपर गोल छत्ता गांठदार, डंडी के बीच में स्थान स्थान पर फल, और हरेरी लिये छत्तादार गोल घुंडी के समान सफ़ेद फूल, स्वाद कडुवा और तीक्ष्ण, यह सरदी और बरसात के दिनों में ज्वार और चना आदि के खेतों में मिलता है, । गूमा के पत्ते घोटकर पीने से ज्वर जाता रहता है, यह सूजन, श्वास, कामि, खांसी इन रोगों को हरता है, ।
घोडा धांसता हो तो दाना के साथ इसे खिलावे धांसना बन्द हो जाता है, ।

१६४ नगंदा—बूटी नगंदा हाथभर की होती

है, इसकी पत्ती तुलसी के पत्ती की सी और लंबी, फूल सफेद, स्वाद कड़ुआ तीक्ष्ण होता है. गरमी के दिनों में जहां पानी सूख जाता है वहां मिलती है, इसकी ठंढाई पीने से रुधिर शुद्ध हो जाता है, उपदंश रोग अवश्य शान्त हो जाता है, कड़ुवे तेलमें इसकी पत्ती पीसकर लगाने से कंठ माला रोग अच्छा हो जाता है, इसको छाने से सांप केंचुली छोड देता है. इसकी पत्ती तीक्ष्ण होती है इस को खाकर पसीना निकलनेदे वायु न लगने पावै, यह ज्वर श्वास रोग और उन्माद रोग को खोती है, काली नगन्दा का चूर्ण मठा के साथ खाने से कमलवाय रोग अच्छा हो जाता है, इस की जड अजवायन के साथ खाय तो काया कल्प हो, घी के साथ खाय तो भगन्दर और कुष्ट रोग जाय, मट्ठा के साथ खाय तो जलोदर जाय, खांड के साथ खाय तो पित्त शान्त हो. चावलके धोवन से खाय तो प्रमेह जाय, काली मिर्च और नीम के साथ खाय तो बिष उतरै, काली मिर्च के साथ इस की ठंढाई पीवै तो उपदंश जाय, इस में अन्य भी अनेक गुण हैं, ।

१६५ नकछिकनी—नकछिकनी छत्तादार

होती है, इसका स्याही लिये पत्ता बहुत छोटा होता है, फूल पीले बहुत छोटे घुंडीदार इसमें जो मसूर की दाल के बराबर घुंडी होती है, उसे मलकर सूंघे तो छींक आती है, यह सरदी और गरमी के दिनों में तालाब के किनारे होती है, वर्षा होनेपर सूख जाती है, इसका हुलास सूंघने से लकवा अच्छा होता है, इसका चूर्ण सूघन से छींके बहुत आती हैं, शिर की सब विकार दूर होजाती है, इसके पत्ते घोटकर पीने से खुजली, हिचकी और कुष्ठ रोग शान्त होता है, इसमें अन्य भी गुण हैं,

१६६ हज़ार दाना—हजार दाना का वृक्ष बारह अंगुल का ऊंचा, इसकी शाखा के दोनों ओर छोटे छोटे पत्ते और गांठपर गोल बीज छोटा, और फूल सफेद, यह गरमी और बरसात के समय बागों में होता है, इसकी ठंढाई पीने से चित्तकी व्याकुलता और गरमी शान्त होती है, मूत्रकृच्छ्र रोग जाता है. तथा ज्वर अवश्यमेव शान्त हो जाता है, इसमें अन्य भी अनेक गुण हैं, ।

१६७ नाहीं—नाडी का साग प्रसिद्ध है, यह बेल जलके समीप प्रायः नालियों में होती है, बरसात में अधिक मिलती है, यह कडुई और मीठी

दो प्रकार की होतीं है, यह रक्त पित्त कुष्ठ और कृमि रोग को दूर करती है, इसके खाने से अफीम का नशा तुरन्त उतर जाता है, ।

१६८ हिरनखुरी—हिरनखुरी बेल बहुत छोटी नोंकदार तिकौने मिले हुये पत्ते, फूल सफेद और भूरे रंगके, यह बूटी भूड और रेतीली भूमिमें मिलती है, वर्षा होने पर सूख जाती है, । इसकी ठंढाई पीने से जुलाब हो जाता है, मूत्रकृच्छ्र रोग जाता रहता है, इसको घोटकर पीने से नेत्रों की ज्योति बढती है, प्रमेह और कुष्ट रोग शान्त होजाता है, इसकी टिकिया फोडा पर बांधने से बहुत जल्द पककर फूट जाता है. और अच्छा हो जाता है, ।

१६९ चितावर—चितावर यह एक बूटी है, जो रियासत भूपाल में प्रसिद्ध है इसका रस बडा तीक्ष्ण होता है घाव पर लगाने से बहुत लगता है परन्तु घावको शीघ्र पूर्ण करने के लिये यह अद्वितीय है, इसकी जडकी लुगदी में मूंगा भस्म किया जाता है. इस बूटी की लकडी घिसकर लगावे तो कंठमाला और चोटको जल्दी आराम होजाताहै,

१७० लाजावन्ती—लाजावन्ती (छुई मुई) बूटी छूते ही मुरझाजातीहै, मुख्य बूटी छाया पडते

हां मुरझाती है, इसके पत्तों की लुगदी में मन-शिल, हरताल, सिंगरफ फूंका जाता है, इसकी जड कटिपर बांधने से नाभि नहीं टलती, दश औषधियों में लाज्जावन्ती का नंबर पहला है, ।

१७२ अग्निछाल—अग्निछाल बूटी की लुगदी में हरताल, शिंगरफ. और चांदी ये धातु फूंके जाते हैं, इसको घोटकर तडाग में डालने से मछलियां व्याकुल होकर बाहर निकल आतीं हैं, ।

१७२ लक्ष्मण—लक्ष्मण बूटी बनमें पर्वत पर होती है, इसकी जडको घी ग्वार के अर्क में पीसकर दूध के साथ पीने से गर्भ रहता है, ।

१७३ मेढा सिंगी—मेढासिंगी की लुगदी में तांबा और संखिया की भस्म की जाती है, जड पीसकर लेप करै तो तीर का कांटा निकल आता है, खाने से स्त्री गर्भवती होती है, मेढा के सींग के अनुसार इसकी फली होती है, ।

१७४ नीलकंठी—नीलकंठी [1]पहाडी बूटी है इसका पत्ता बडा ऊपर हरा नीचे नीलापन लिये लाल होता है, फूल नीला होता है, पत्ता भूमि में से प्रगट होता है, इसको घोटकर पीने से रुधिर

[1] शिमला की ओर अधिक है, ।

शुद्ध होता है कुष्ठ; और सब प्रकार के ज्वरों का नाश होवै है, ।

१७५ शिवलिंगी—शिवलिंगी की बेल फुलवारियों में वृक्षों पर चढती है, इसके बीजका आकार अर्घा में शिव स्थापे के समान होता है, इसका फल सेवन करने से स्त्री पुत्रवती होती है; ।

१७६ जोड तोड—जोड तोड दो हाथका बेलदार क्षुप नदी के तटपर होती है. इसकी शाखें पतली एक जडमें बहुत सी हरे सूत के तुल्य निकली हुई अंगुल अंगुल पर गांठ, गांठपर से अलग हो जाती है जोड देने से जुड भी जाती है, इसकी ठंढाई मिश्री मिलाकर पीने से खूनी बवासीर मूत्र कृच्छ्र क्षयी रोग, जीर्णज्वर, उपदंश ये रोग शान्त होते हैं, इस बूटी में पारा बंधजाता है इसमें अन्य भी अनेक गुण हैं, ।

१७७ शूकरगन्धा—शूकरगन्धा के पत्ते बांस के पत्ते के अनुसार होते हैं, इसकी एक शाखा होती है, चोटी पर दोनों ओर दो शाखा दोनों शाखाओं के किनारे पर सब पन्द्रह पत्ते होते हैं, इसका फल गोल हरा दानादार, नीचे जडमें जिमीकन्द की सी गांठ होती है, इस बूटी को गोमूत्र

मे पीसकर लगाने से फोड़ा पककर जल्दी फूट जाता है, सांप का विष शान्त हो जाता है, यह काश्मीरी बूटी है, ।

१७८ ममीरा—ममीरा का वृक्ष सवा बिलस्त का होता है, यह बूटी काली भूमिपर जलमें होती है, इसके पत्ते बेतके पत्ते के समान और ऊदे फूल के ऊपर पोस्त के दाना के तुल्य सफेद दाना होते हैं, इसकी जड हल्दी के समान पीली होती है, इसका सुरमा लगाने से नेत्रों के अनेक रोग नष्ट हो जाते हैं ज्योति बढ़ती है, ।

१७९ मूषा कर्णी—मूसे के कान के समान इसके पत्ते होते हैं इस बूटी से पारा की चांदी बनाई जा सकती है, इस में पारा की गोली बँधजाती है, ।

१८० गुड मारी—गुडमारी की जडको दूध में औटाकर घी निकालै उसका तिला नपुंसकता को हरता है, इसकी जड का तेल वादी बवासीर को शान्त करता है, इस बूटी की पहिचान यह है कि इसकी जड को खाकर गुड मीठा नहीं लगता, गुडकी मिठास को यह बूटी मार देती है, ।

१८१ ईश्वर मूल—ईश्वर मूल के नवीन

पत्ते नाभिपर बांधै और इसका काढा पीवै तो वाय-गोला रोग दूर हो जाता है ईश्वर मूल से सांप का काटा अवश्य अच्छा हो जाता है, ।

१८२ गोकर्णी—गायके कानके समान पत्ता होने के कारण इसका नाम गोकर्णी है, इसकी पत्ती के अर्क को पीने से हिचकी दूर हो जातीहै. और इसकी जडको घिसकर माताके दूध में पिलाने से बालक के सब प्रकार के रोग शान्त हो जाते हैं,

१८३ जटाशंकरी—जटा शंकरी नाम इसका इस कारण है कि यह शिवजी की जटाके समान देखनें में होती है, इसकी गांठ का चूर्ण दूधके साथ प्रमेह को, और दही के साथ मूत्रकृच्छ्र को नाश करता है, यह हिमालय पर्वत पर मिलती है, ।

१८४ जख्मपात—यह पंजावी बूटी है वहां अधिक मिलती है, इसी से इसका नाम जख्मपात है, इसकी बेल लंबी, पत्ते मोटे पानके आकर होते हैं; मुँहकी ओर पत्ता रखने पर घावको पकाता है, और पीठकी ओरसे रखने पर सूख जाता है, ॥

१८५. बरियारी—बरियारी बूटी प्रसिद्ध है इस की जड उत्तर की ओर मुख करके खोदै, और पीसकर नाभि पर लेप करै, और मस्तक पर बांधै

तो बालक शीघ्र प्रसव हो, और इसका अर्क लगाने से घाव अच्छा हो जाता है, पीड़ा नहीं होती है।

१८६ मर्कन—मर्कन बेलके पत्ते महीन सौंफ के समान और फूल बहुत छोटा धनियां के समान बीज बहुत बारीक होता है, यह चैत मासमें भूमि पर फैली होती है, यह बूटी गाय को खिलाने से दूध बहुत बढजाता है, इसका हरा साग खाने से वीर्य और बल की वृद्धि होती है, इसमें अन्य भी अनेक गुण हैं।

१८७ विदारी कन्द—विदारी कन्द प्रसिद्ध है, इसका चूर्ण खाने से प्रमेह रोग शान्त हो जाताहै।

१८८ नाई बूटी—नाई बूटी का पत्ता लम्बा घास के अनुसार होता है, इसकी ठंढाई पीने से पुराना ज्वर भी अच्छा होजाता है, ज्वर नाश करने में यह राम बाण के समान है।

१८९ फूलनी बूटी—फूलनी बूटी बहुत फूलती है, इसमें फूल बहुत होते हैं, एक में बैंगने रंग के फूल होते हैं। दूसरी में पीले फूल होते हैं, बैंगने फूल वाली की ठंढाई पीने से मूत्रकृच्छ्र रोग जाता है, पीले फूल वाली की ठंढाई पीने से पीनस रोग जाता है, सब कीड़े निकल जाते हैं।

१६० सफेद चिर्मिटी—सफेद चिर्मिटी प्रसिद्ध है, इसके पत्ते चबाने से मुहं अच्छा हो जाता है,

१६१ अंकोल—अंकोल वृक्ष प्रसिद्ध है, अंकोल की छाल घिसकर लगाने से कंठमाला रोग अच्छा होजाता है, छालका काढा विशूचिका रोग खोता है, इसका तेल वायगोला, नपुंसकता पांडु रोग, इन रोगों में लगाया जाता है, सांप बीछू के काटे पर यह टेल अच्छा है,।

१६२ अर्जुन—अर्जुन वृक्ष की छालका चूर्ण फांकने से जीभ का छनना बन्द हो जाता है, और पत्तों का रस डालने से कानकी पीडा शान्त हो जाती है,।

१६३ हिंगोट—हिंगोट वृक्ष की छालका चूर्ण फांकने से कुष्ठ रोग अच्छा होता है, इसका तेल सब प्रकार के वात रोगों को हरता है, इस का बीज मुह में डालने से कंठके भीतर का रोग अच्छा हो जाता है, इसके बीज की मींगी घिसकर लगाने से मोतिया बिन्द दूर होजाता है,।

१६४ अरलू—अरलू वृक्षकी छालके चूर्ण को फांकने से दस्त बन्द हो जाते हैं, और संग्रहणी रोग शान्त हो जाता है,।

१६५ बांस—बांस वृक्षके कोमल पत्तों की ठंढाई पीने से दस्त बन्द होजाते हैं, वमन नहीं होता है, और कमलवाय रोग जाता रहता है, ।

१६६ गोंदी—गोंदी का फल खाने से मूत्र-कृच्छ्र रोग अच्छा होजाता है, पत्तों के रस से नेत्र पीडा शान्त होती है, छाल चबाने से जीभ के छाले दूर हो जाते हैं, जड मुंहमें रखने से स्वर ठीक हो जाता है; जडका चूर्ण फांकने से मैथुन शक्ति बढतीहै, गोंदी का लुआब खांसी को खोताहै ।

१६७ बकायन—बकायन वृक्ष प्रसिद्ध है, इसके पत्ते पीसकर कुछ गरमकर बालक के पेट पर बांधने से पसली चलना बन्द होता है, पत्तों का चूर्ण खाने से बवासीर रोग जाता है, पत्तों को पीसकर लगाने से शिर की पीडा दूर हो जाती है, कोमल नवीन पत्ते घोटकर पीने से गर्भ पात होता है, पत्ते चबाने से रतौंधी जाती है, छाल चबाने से जीभके छाला अच्छे हो जाते हैं, फल पीसकर शिर पर लेप करे तो जुयें मरजाते हैं, जड़ औटा, कर पीने से पेटके कीडे दूर हो जाते हैं, बीज निगलने से नहरुआ रोग जाता रहता है, इसमें अन्य भी अनेक गुण हैं, ।

१८८ कैथ—कैथा का वृक्ष प्रसिद्ध है. इसका फल भूनकर खाने से दस्त बन्द होते हैं और वमन रुकजाता है, जी नहीं मिचलाता है, लकड़ी घिसकर लगाने से नासूर अच्छा होजाता है, पका हुआ फल नित्य खाने से तिल्ली अवश्य ही दूर हो जाती है, ।

१८९ सेमल—सेमर का वृक्ष विख्यात है, सेमर का गोंद खानें से संग्रहणी रोग जाता रहता है, इसके बीज बालक को निगलाने से शीतला नहीं निकलती, इसके पत्ता फूल और छालका चूर्ण सेवन करने से प्रमेह रोग नहीं रहता, इसकी जडको गोमूत्र में औटाकर लगाने से नहरुवा रोग दूर हो जाता है, इसका गोंद खाय तो शरीर स्थूल हो और बल बढै, इसकी रुई की राख से नासूर पुर जाता है, ।

२०० सिरस—सिरस वृक्ष के पत्ते गरम कर फोड़ा पर बांधने से फोडा अच्छा होता है, आग से जल जाने पर इसके पत्ते पानी में पीस कर लेप करने से घाव नहीं होता, छाल को पीसकर बुरकाने से घाव अच्छा होजाता है, दूध में छाल पीस लगाने से मुहांसे मुरझाते हैं, इसके पत्तों

की ठंढाई पीने से कुष्ट शान्त होताहै, इसका बीज एक एक नित्य बढ़ाकर खाने से बीस दिन में बवासीर रोग जाता रहता है, बीज पीसकर लगाने से बीछू का विष शान्त हो जाता है. बीजों का नास लेने नजला जुकाम दूर होता है. ।

२०१ जामुन—जामुन की कोंपल का अर्क बवासीर होने पर पीना और लगाना चाहिये.पत्तों का अर्क पीने से धतूरा और अफीम का विष शांत होता है, जामुन के फल खाने से कुष्ठ रोग शान्त रहता है, छालकी राख का अंजन दंत पीड़ा को खोता है, छाल के चूर्ण को मठा से खाय तो दस्त बन्द होते हैं, प्रमेह रोग जाता है, फल का अर्क उदरशूल को शान्त करता है, इस में अन्य भी अनेक गुण हैं, ।

२०२ बेल-बेल वृक्ष के कोमल पत्तों का काढ़ा पीने से श्वास रोग जाता है, फल भूनकर खाने से संग्रहणी रोग अच्छा होता है, जड़का काढ़ा वात विकार को और छाल तथा जड़का काढ़ा उन्मत्तता को शान्त करता है, अन्य भी गुण इसमें हैं, ।

२०३ मौलश्री—मौलश्री का फूल सूंघने से शिर की पीड़ा जाती रहती है, छालके भफ़ारा से

बवासीर शान्त होवे है, इसकी लकडी की राख क मंजन से दांतों से रुधिर निकलना बन्द होता है, और फल का मंजन बनाकर करै तो दांत पुष्ट हो जाते हैं, ।

२०४ कटहल—कटहर का कोमल पत्ता घी चुपड कुछ सेंककर उलटी ओरसे उकौता पर बांधने से रोग जाता रहता है, ।

२०५ शरीफा—शरीफा के कोमल पत्ते पीस-कर लगाने अथवा पीने से कीडे दूर हो जाते हैं, मींगी का धुवां नाक में देने से मृगी रोग शान्त होता है, बीजों का तेल लगाने से शिर का गंजापन दूर होता है, पत्ते घोटकर पीने से नशा उतर जाता है, ।

२०६ थूहर—थूहर का दूध लगाने से छाजन अच्छा होता है, दूध में अन्य भी अनेक गुण हैं, ।

२०७ अंजीर—अंजीर खाने से तिल्ली और उदर पीडा शान्त होती है, दूध लगाने से दाद जाता रहता है, ।

२०८ मेथी—मेथी का साग खाने से संग्रहणी जाती है, मेथी भूनकर खाने से हिचकी, काढा पीने से बवासीर शान्त होवै है, ।

२०६ तिल—तिलके फूल का अंजन लगानें से नेत्र रोग और पत्ते चबानेसे प्रमेह रोग शांत होताहै।

२१० मूली—मूली खाने से बवासीर शान्त होवें है, इसका पंचांग अजीर्ण रोग को दूर करता है, मूली के पत्तों का अर्क से कीड़े मरजाते हैं, मूली के बीजों को तेलमें औटाकर मलने से नपुं; सकता दूर हाती है.।

२११ गेंदा—गेंदा के बीजों का चूर्ण स्तंभ, नकारक होता है. गेंदाके पत्तों को पीसकर टिकिया बांधनेसे और ठंढाई पीनेसे बवासीर रोग शांत होताहै.

२१२ दूब—दूब की ठंढाई पीनेसे मूत्र खुलताहै,

२१३ चिलमिली—चिलमिली के रस को लगाने से रुधिर निकलना बन्द हो जाता है,।

२१४ जोंक—जोंक बृक्ष वर्षा ऋतु में वर्षा होनेपर नालियों में प्रगट होती हैं, इसका पत्ता नोकदार और चौडा होता है. जोंक के पत्ते और फूलों को घोटकर पीने से बवासीर रोग अवश्य जाता रहता है,।

२१५ सफेद घुंघुची—सफेद घुंघची के पत्तों का साग खाने से प्रमेह रोग दूर होता है, इसका हुलास मृगी और शिर पीडाको हरता है,।

२१६ पटसन—पटसन का भुरता बांधने से बद बैठ जाती है, इसका बीज खाने से फिर हुलना बन्द हो जाता है, पत्तों के रस से खुजली दूर हो जाती है,।

२१७ बथुआ—बथुआ का साग खाने से बवासीर रोग शान्त होता है,।

२१८ ज्वार—ज्वार का फूल खाने से विशूचिका रोग शान्त होता है.।

२१९ चना—चना रात को भिगोवै सवेरे वह पानी पीवै तो स्त्री के दूध बढता है, साग खाने से रतौंधी नहीं आती है,।

२२० अरहर—अरहर की पत्ती का रस कुछ गरम कर उससे कुल्ली करै तो कंठ के भीतर का रोग जाता है, पत्तों का रस पीने से अफीम का नशा दूर होता है, पत्ती को पीस घीमें गरम कर रखने से वानर काटे का घाव अच्छा होता है, पुराने अरहर की जड घिसकर लगाने से फुली दूर होजाती है, और आंख अच्छी होजाती है,।

२२१ कुलफा—कुलफा साग के पत्ते चबाने से जीभ के छाला दूर होजाते हैं, साग का रस पीने से जीर्ण ज्वर जाता रहता है,।

२२२ तमाखू—तमाखू के पत्तों को सेंककर फोड़ा पर बांधे अथवा सूखे पत्तों को औटाकर बांधे तो फोड़ा अच्छा हो जाता है, सूखे पत्तों का नास लेने से शिर की पीड़ा शान्त होती है, पत्तों को सेककर बांधने से अंडकोश की पीड़ा जाती रहती है, तमाखू के पत्तों के रस में पारेकी गोली बंध-जाती है, तमाखू के फूल पीसकर मलने से दाद जाता रहता है, ।

२२३ सुखदर्शन—सुखदर्शन का वृक्ष छोटा होता है, पत्ते मोटे होते हैं, इसके पत्ते का रस पीने से श्वास रोग अच्छा होजाता है, तथा पत्ते का सेककर उसका अर्क कान में टपकाने से कान की पीड़ा शान्त हो जाती है, ।

२२४ गुडहल—गुडहल की जड को खाने से रज खुलता है, इसके फूलों को पीसकर नाभि पर लेप करने से रंडाका गर्भ पात होता है, फूल बताशे में खाने से मूत्रकृच्छ्र रोग शान्त होता है, ।

२२५ सौंफ—सौंफ का चूर्ण फांकने से नेत्र रोग शान्त रहता है, बवासीर रोग जाता है, स्तनों की सूजन दूर होती है, नेत्रों में ज्योति बढती है, बालक की माता सौंफ का चूर्ण फांके तो स्तनों में

दूध बढ़े. सौंफ का अञ्जन लगाने से मोतिया विन्द अच्छा होजाता है. ।

२२६ धनियां—धनियां चबाने से गले की सूजन दूर होती है. पीसकर मस्तक पर लेप करने से पीडा शान्त होती है, काढा पीने से जूडी और ताप शान्त होवे है, ।

इसी प्रकार माधवी लता, जीवन्ती, मोर शिखा, लगलगी, भूतराज, अनन्तमूल, हत्था जोडी, काली जीरी, गांगडी, पातालगारुडी, तिलपर्णी, कौआ टोडी, नागर जिनी, जल पीपल, धन्वन्तरी, खसि यारी, बनकरेला, बर्बरी घास, छोगारी, आदि अनेकानेक बूटियां हैं जिनका जानना बहुत कठिन है, अनेक बूटियां ऐसी हैं जो एक ही स्थान में उत्पन्न होती हैं, अनेक ऐसी हैं जो दो चार स्थानों के सिवाय अन्यत्र नहीं हैं, अनेक बूटियां पहाडों पर और जंगल में ही होती हैं, तत्काल गुण दिखाने वाली सैकडों बूटियां पृथ्वी पर हैं, कोई जडी बूटी पंजाबी है, कोई कश्मीरी है. कोई काबुली है, कोई बंगाली है. कोई नैपाली है.उनमें कोई मधुर है, कोई खारी है. कोई कडवी है, कोई तीखी है, कोई कसैली है, कोई खट्टी है, किसी में

मारण शक्ति है, किसीमें संजीवनी शक्ति है. किसी में मोहन शक्ति है किसीमें उच्चाटन शक्ति है. किसी में वशीकरण शक्ति है, किसी में विक्षेपण शक्ति है, किसी में स्तम्भन शक्ति है, और रोग नाशन शक्ति तो सब ही में है, परन्तु देशकाल और आयुर्वेद के अनुसार पथ्य और अपथ्य का विचार न करने से उन्हीं बूटियों का फल प्रतिकूल हो जाता है, । पूर्व समय के ऋषिमुनि वनमें और पर्वतों पर वास करते हुए गृहस्थजनों के उपकार निमित्त जड़ी बूटियों के गुणों की परीक्षा कर के उनके द्वारा मनुष्यों को सुखी करते थे, और उन बूटियों के द्वारा सूक्ष्म प्यादि को वश में करके तथा वानप्रस्थ आश्रम का धर्म धारण करके ईश्वर के आराधन और जड़ी बूटियों के खोज में ही रहते थे, कई महात्माओं ने औषधियों के गुणागुण वर्णन किये हैं, । यहां उन्हीं के ग्रन्थों में से कुछ बूटियों का गुणागुण यथा मति लिखदिया है, ।

दोहा—नारायण धरि ध्यान उर, सीताराम सुधार ।
बूटी जड़ी प्रकाश लिख कियो पूर्ण अधिकार ॥१॥

इति श्री बृहत् वैद्यराज महोदधि द्वितीय भाग जड़ी बूटी प्रकाश वर्णनं नाम प्रथमोऽधिकारः ॥१॥

अथ स्त्री रोग चिकित्साऽधिकार प्रारम्भः

दो०—सुश्रुतादि मुनिमत निरखि, धन्वन्तरिपद ध्याय ।
नारी रोग प्रकार अब, लिखत सुअवसर पाय ॥ १

पूर्वाचार्यों के मत के अनुसार यहां हम संक्षेप रीति से स्त्रियों के उन रोगों को लिखते हैं, जिन रोगों को स्त्रियां दूसरे के सामने कहने में लजाती हैं। इस कारण जैसे मनुष्य को अपने शरीर का हाल जानना अत्यन्त आवश्यक है, इसी प्रकार स्त्रियों को अपने शरीर का हाल जानना परम आवश्यक है।

स्त्री देह तत्व—स्त्री के शरीर में प्रायः गर्भाशय सम्बन्धी रोग अधिक होते हैं। इस कारण पहले गर्भाशय का वर्णन करना उचित है।

गर्भाशय—स्त्री की योनि शंख की नाभि के समान तीन पर्त वाली होती है. उसके तीसरे पर्त में गर्भाशय है और गर्भ स्थान पट्ठे की बनी हुई पतली रगों से मिलकर मसाने के समान बना है, जैसा रोहू मछली का मुख ऊपर से छोटा और भीतर से फैला हुआ होता है, और उसकी स्थिति पित्ताशय और पक्वाशय के बीच में है, गर्भाशय का रंग सफेद है, और कोमल तथा शून्य है, कि जिसमें

गर्भस्थ बालक के बोझ और खिचाव से (गर्भ के बढ़ने में जो खिचाव होता है उससे) स्त्री को कष्ट न हो, गर्भाशय के दूसरे पर्द में बहुतसी रंगें व चुनावटें हैं उन्हीं चुनावटों और रंगों के कारण गर्भ रुकता है, गर्भाशय के दूसरे पर्त में दो थली हैं, उसी में गर्भ रहता है, दो थैली होने के कारण ही प्रायः दो बालक भी होते हैं, वीर्य और रज का जिस समय मेल होता है तव भीतर की वायु से जो वीर्य के दो भाग हो जाते हैं, और दोनों थैलियों में वीर्य के प्रवेश होजाने से दो बालक होते हैं, उनको जो रिहाँ कहते हैं, ।

गर्भ स्थान आंतों के ऊपर और मसाना(मूत्रस्थान) के नीचे है और उसकी ऊंचाई नाभिके पास से स्त्री की गुह्येन्द्री तक है. इसका विस्तार पहले अधिक नहीं रहता, परन्तु गर्भ के समय समयानुसार क्रमशः बढ़ता जाता है, गर्भाशय की बनावट इस प्रकार की होती है, कि वह आवश्यकतानुसार बढ़ सके, गर्भाशय का स्वभाव है कि वह वीर्य को अपने में खींचता है, और इसी कारण संयोग के समय नीचे की ओर झुक पड़ता है, गर्भ स्थान की गर्दन मूत्र स्थान की जगह पर है, पुरुष के

अंडकोशों के समान स्त्रियों के भी दो अंडकोश होते हैं, पुरुष के अंडकोश बडे और गोल कुछ लम्बाई लिये दोनों एक ही थैली में होते हैं, और स्त्रियों के छोटे गोल और चपटे होते हैं, और गुह्येन्द्रिय के दोनों ओर गर्भ स्थान के बाहर रक्खे हुये होते हैं, प्रत्येक अंडपर एक जुदी झिल्ली होती है, और जैसा पुरुषोंके अंडकोश और मूत्रेन्द्रिय के मध्य में एक बडा मार्ग है, उसको वीर्य का पात्र कहते हैं, स्त्रियों में भी ऐसा ही होता है, परन्तु पुरुषों में अंडकोशों से ऊपर लाकर मसाने की ओर झुक कर दो तीन वल आकर मूत्र के छिद्र में आया है और स्त्रियों में कोप की ओर झुकाहुआ है, जिससे वीर्य गर्भ स्थान में आवे, । स्त्रियों के अंडकोश सम्भोग के समय कडे होकर गर्भ स्थान की गर्दन को सीधा किये रहते हैं, जिससे पुरुष का वीर्य उसमें प्रवेश कर जावे, यदि किसी कारण से गर्भाशय की गर्दन टेडी हो गई हो तो गर्भ नहीं रहता, अथवा पुरुषेन्द्रिय में किसी दोष से टेढापन होगया हो तो भी वीर्य गर्भाशय में प्रवेश नहीं करता,

रजस्वला—स्त्रियों का महीना महीना ठीक

समय पर रजस्वला होना ही गर्भ रहने का चिन्ह है, क्योंकि गर्भोत्पन्न होने की भूमि रजस्वला स्त्री है, बारह वर्ष की आयु से पचास वर्ष की आयु तक महीने महीने स्त्री की योनि से रुधिर निकलता है, और वह तीन दिन रहता है, जिस दिन से आरम्भ हो उस दिन से सोलह रातों तक गर्भाधान हो सकता है, यदि किसी कारण, से रुधिर निकलना बन्द होजाता है, तब उस स्त्री को रोगिणी जानना चाहिये, और जिसको जन्म से ही कोई रोग होता है, वह रजस्वला नहीं होती है, अधिक रोगिणी स्त्री भी रजस्वला नहीं होती है, अधिक शीत लगने से वर्षा काल में अधिक भीगने से भी रजस्वला होना बन्द हो जाना सम्भव है, यदि स्त्री बहुत मोटी हो जाती है तो भी रजस्वला होना बन्द होजाता है, जिस कारण से ऋतु बन्द हो उसी का उपाय करना चाहिये, गर्भिणी होने से पहिले स्त्री का रजस्वला होना ऐसा है, जैसे वृक्ष में फूल का आना, वृक्ष में फल आने से पहले फूल आता है, बिना फूल के फल नहीं आ सकता, और जो स्त्री तीन दिन से अधिक दिनों तक रजस्वला रहती है, उसको भी रोगिणी जानना

चाहिये, प्रदर रोग का उपाय आगे लिखेंगे ॥

रजस्वला के नियम—स्त्री जिस दिन रजस्वला हो उसी दिन से ब्रह्मचर्य नियम धारण करै, कुशों की शय्या पर सोवै, और पति का स्त्री मुख न देखै, मिट्टी के पात्र अथवा पत्तल में भोजन करै, नाखूनों का काटना, रोना, तेल फुलेल लगाना, नेत्रों में अंजन लगाना, स्नान, दिन में सोना, इधर उधर घूमना; ऊंचे स्वर से बोलना, हँसना, परिश्रम करना, पृथ्वी को नाखूनों से कुरेदना, हवा में बैठना, क्रोध करना, इत्यादि बर्ताव को त्याग देवै, जो स्त्री अज्ञानता वा आलस्य अथवा प्रारब्धवश इस से विपरीत बर्ताव करती है, उसके गर्भ रहजाने पर वह गर्भ स्थबालक दोष युक्त होता है, जैसे रजस्वला होने के पहले दिन से तीन दिन तक जो स्त्री नाखून काटती है उससे बुरे नाखूनों वाला बालक होता है, । एवं रोने से नेत्र रोगी । तेल फुलेल लगाने से कोढ़ी. । अंजन लगाने से चिपके नेत्रों वाला. । स्नान करने से दुःखित, । दिन में सोने से बहुत सोने वाला, तथा इधर उधर घूमने से चंचल. । ऊंचे स्वर से बोलने से और सुनने से बकवादी और बहिरा होता है, । परिश्रम

।करने से पागल, । हँसने से जीभ, दांत, होंठ तालु आदि रोग वाला होता है, । भूमि कुरेदने और हवा में दैठने से पागल, । क्रोध करने से बालक क्रोधी होता है, ॥ रजस्वला स्त्री चौथे दिन स्नान करके जिस का मुख देखती है उसके गर्भ रहने पर उसी के समान पुत्र अथवा कन्या होवै है इस कारण स्नानोंपरान्त अपने पति अथवा पुत्र को ही देखना चाहिये, यदि उस समय पति वा पुत्र समीप न हों तो किसी धार्मिक वीर अथवा महात्मा पुरुष के चित्र का दर्शन करै । यदि ऋतुमती होने के तीसरे दिन रुधिर वन्द हो जाय तो चौथे दिन स्नान कर पति के पास सन्तानोत्पन्न करने की इच्छा से जावै, यदि आर्तव (रुधिर बहना) वन्द न हुआ हो तो भूल कर भी पति के समीप न जावै, रुधिर वन्द होने पर पति के समीप जो स्त्री जाती है वह आप रोगिणी होती है और पति को भी रोगी बनाती है, और गर्भ भी नहीं ठहरता, कारण कि जैसे वहते हुये जल की धारा में कोई वस्तु ठहरती नहीं है, इसी प्रकार बहते हुये रुधिर की धारा में डाला हुआ वीर्य नहीं ठहरता है, इस कारण सन्तान की इच्छा करने वाली स्त्रियों को

उपरोक्त बातों का अवश्य ध्यान रखना चाहिये जो स्त्रियां उपरोक्त नियम के विरुद्ध चलती हैं वे रोगिणी रहती हैं, इस कारण अवश्य नियम पर ध्यान रखना चाहिये. ॥

शुद्ध रज—जो रजस्वला के समय स्त्री को किसी प्रकार का कष्ट न हो तो शुद्ध रज समझना चाहिये और जो रजस्वला समय ऋतु न बहुत हो, न कम हो, तो वह रज निरोग जानना चाहिये, तथा जो ऋतु स्राव उनतीसवें तीसवें दिन बराबर होता रहे तो वह स्वाभाविक ऋतु स्राव उत्तम जानना चाहिये, और जो ऋतु स्राव २९ । ३० दिन के आगे पीछे अधिक दिन पहले या पीछे हो तो रज में दोष जानना चाहिये, ऐसे रज में गर्भ धारण करने की शक्ति नहीं होती है, । जो ऋतु स्राव प्रत्येक मासकी एकादशी और पूर्णिमा के बीचके दिनोंमें हो,वह ऋतु स्राव निरोगी जानना चाहिये, । चन्द्रमा की कला के साथ ऋतु स्राव का सम्बन्ध है जिस प्रकार चन्द्रमा की कला बढती जाती है, वैसे ही ऋतु स्त्रीके शरीर में बढता हुआ चन्द्रमा की पूर्ण कला के अनुसार पूर्ण होकर फिर कमती होता जाता है, । परन्तु विकार वाले स्त्री

पुरुषों के शरीर पर चन्द्रमा की कला का प्रभाव नहीं होता, जिस स्त्री के रज में विकार होता है उस का लक्षण यह है कि,॥

रज दोष—डाक्टरी मत के अनुसार पुरुष के वीर्य और स्त्री के रज में एक प्रकार के कीडे होते हैं जो पुरुष के वीर्य के कीडे स्त्री के रज़ के कीड़ों में मिल जाता है उसी से गर्भ की उत्पत्ति होती है, वीर्य और रज आहार विकार के दोष से दूषित हो जाता है, उस दोष से वे कीडे नष्ट हो जाते हैं इसी कारण गर्भ नहीं रहता है,। मासिक धर्म ही स्त्रियों को मारने जिलाने में कारण है,यदि मासिक धर्म ठीक समय पर नहीं होता अथवा होता ही नहीं, तो वह स्त्री सदा रोगी और दुःखी रहती है; उसका जीवन व्यर्थ जाता है, सन्तान न होने के अतिरिक्त बांझ रहकर भी उसको किसी प्रकार सुख नहीं मिलता,।

रज दोष के कारण-प्रकृति के विरुद्ध बहुत गरम वस्तु खाने से मासिक धर्म का रुधिर सूख कर जम जाता है, किसी को बहुत ठंडक पहुंचने के कारण रुधिर ठंढा होकर जम जाता है, इससे भी मासिक धर्म रुक जाता है, अथवा योनि में घाव होकर मवाद-सूख जाता है उस से योनि की रगों के

मुख वन्द हो जाने से भी मासिक धर्म का होना बन्द हो जाता है, किसी किसी स्त्री का अधिक मोटा हो जाने से मांस बढ़कर रगों के मुख को वन्द कर देता है इस कारण से भी मासिक धर्म नहीं होता, इन सब बातों को विचार कर मासिक धर्म खोलने की औषधि सेवन करना चाहिये। जो स्त्री मोटी होगई हो अथवा पहले से ही मोटी हो उसको उचित है कि परिश्रम अधिक करै और मांस को बढ़ाने वाली वस्तुओं को नहीं खाय, और नीचे लिखी औषधि सेवन करै,

मोटी स्त्री के मासिक धर्म खोलने की औषधी—

माल कांगनी, दूधिया बच, राई, विजयसार लकड़ी, इनको कूट पीस कपड़छनकर तीन तीन माशे की पुड़िया बांधै सांझ सवेरे एक एक पुड़िया मुखमें रख शीतल जलसे उतार जावै, सात दिन खाने से मासिक धर्म होने लगता है, इस चूर्ण को खाय, और नीचे लिखी बत्ती बना लेवै। कड़ुई तोमड़ीके बीज, मुलहटी, बड़ी पीपरि, जमाल गोटा के बृक्षकी जड़की छाल, दारू हलदी का चूरा, पुराना गुड़, इन सब को बराबर लेके बारीक पीसै और थूहर के दूध में घोटकर अंगुली के बराबर

छोटी वत्ती बनाकर छाया में सुखावै फिर वह वत्ती योनि में रक्खै, तो मासिक धर्म खुलकर ठीक समय पर होता है, ।

योनि रोग स्त्री की योनि में कई प्रकार के रोग होते हैं, कुछ रोग अधिक कष्ट नहीं देते, कुछ ऐसे होते हैं, जिनके होने से महा कष्ट होता है, जो रोग उत्पन्न होते ही प्रगट करदिया जाता है, उसके होने से इतना कष्ट नहीं होता कि जितना कष्ट रोग को छिपाने से होता है. असावधानी और लज्जा के कारण प्रायः स्त्रियां रोगको छिपाये रहती हैं, अपने पति से भी नहीं कहतीं, जब रोग बढ़कर असाध्य हो जाता है तब प्रगट करती हैं, फिर क्या होता है, वह रोग प्राण के साथ जाता है, इस से उचित यह है कि रोग को प्रगट करने में लाज नहीं करै और तत्काल उचित औषधि का सेवन करै, ।

अनेक रोग ऐसे भी हैं जो जानने में नहीं आते और गर्भ को हानि पहुंचाते हैं, योनि रोगों से स्त्रियां बांझ भी हो जाती हैं, इस कारण योनि के रोगो को यहां संक्षेप रीति से लिखते हैं, ।

योनि रोगों के नाम—योनि में २० प्रकार के

रोग होते हैं, १ वातला, २ पित्तला. ३ श्ले-ष्मला, ४ सन्निपातजा, ५ रक्तजा, ६ लोहितक्षया, ७शुष्का,८वामिनी.९षंढी,१०अन्तर्मुखी,११सूचीमुखी १२ विप्लुता, १३ जातघ्नी. १४ परिप्लुता, १५ उपप्लुता. १६ प्राकचरण, १७ महायोनि १८ कर्णि-का, १९ नन्दा, २० अतिचरणा, ये बीस रोग केवल योनि के हैं, ।

योनि रोगों की उत्पत्ति—इनमें १वातला २शुष्का ३ विप्लुता, ४ परिप्लुता, ५ उपप्लुता, ये पांच रोग वायु के कोप से प्रगट होतेहैं, और १पित्तला, २ लोहिता क्षया, ३ रक्तजा, ४ वामिनी, ५ जात घ्नी, ये पांच रोग पित्तके कोपसे प्रगट होते हैं, । तथा १ श्लेष्मला (कफजा) २ नंदा, ३ कर्णिका, ४ प्राकुचरणा, ५ अति चरणा, ये पांच रोग कफ के कोप से प्रगट होते हैं, । एवं १ सान्निपातजा, २ षंढी, ३ अंतर्मुखी, ४ सूचीमुखी, ५ महा योनि, ये पांच रोग तीनों दोष (सान्निपात) से प्रगटहोतेहैं,

योनि रोगोत्पत्ति कारण

प्रकृति के विरुद्ध भोजन करने से, कुसमय के भोजन से, बासी अन्न खाने से, मिथ्या भोजन (अर्थात् बिना भूख भोजन) और स्वभाव विरुद्ध

भोजन (गरम स्वभाव होने से गरम भोजन, शीतल ही प्रकृति हो और शीतल ही भोजन) करने से, तथा मिथ्या विहार (कुसमय ऋतु के विरुद्ध सहवास करने से मासिक धर्म का रक्त गरम हो कर योनि रोगों को उत्पन्न करता है और माता पिता के वीर्य दोष के समय गर्भ में आई हुई कन्या के भी बड़ी होने पर योनि रोग प्रगट होते हैं,

योनि रोग लक्षण

१ वातला–गरम वस्तु अधिक खालेने से अधिक प्रसंग करने से वा दिनमें प्रसंग करने से गरमी पहुंच जाने के कारण मासिक धर्म का रक्त सूख जाने के कारण योनि में सुई चुभने की सी पीड़ा हुआ करती है उसे वातजा योनि रोग कहते हैं, ।

२ पित्तला—जो योनि दाह (जलन) पाक (द्वारपर छोटी छोटी फुंसी और छाले पडजांय) ज्वर, आदि पित्त के लक्षणों से युक्त हो और उस में से नीला, पीला, काला रज निकलै उसे पित्तला कहते हैं, ॥

३ श्लेष्मला–जो योनि सेमर के गोंद के समान चिकनी हो, और बहुत शीतल हो, तथा उसमें खुजली बनी रहै उसै श्लेष्मला (कफजा) कहते हैं,

४ सान्निपातजा—जिस योनिमें वात, पित्त, कफ इन तीनों के लक्षण मिलैं उसे सान्निपात जा कहते हैं,।

५ रक्तजा—जो योनि स्थान [1]भ्रष्ट हो, और वह बड़े कष्ट से बालक को उत्पन्न करै, उसको रक्तजा (प्रस्रंसिनी) कहते हैं,।

६ लोहित क्षया—जो ऋतु समय योनिसे गरम गरम रक्त गिरै और योनि के भीतर जलन हो उस को लोहित क्षया कहते हैं।

शुष्का—जो मासिक धर्म समय पर न होता हो और रुधिर थोड़ा गिरै वह भी शुद्ध नहो उसको शुष्का (वंध्या कहते हैं।

८ वामिनी—जिस स्त्री की योनि में से प्रसंग करने उपरान्त वीर्य और रज बाहर निकल आवे भीतर न ठहर सकै उसै वामिनी कहतेहैं।

९ पंढी—जो योनि में भीतर प्रसंग समय खर खरापन हो, जिस स्त्री के स्तन छोटे हों, मासिक धर्म न होता हो तो उसको पंढी कहते हैं उसके गर्भ नहीं रहता,।

१० अंतर्मुखी—दीर्घ लिंग वाले पुरुष के प्रसंग

[1] थोड़ी अवस्था वाली स्त्री पति के पास जाती है तो उसकी योनि निर्बलता के कारण बाहर निकल आती है उसको अंडनी जानना, इस रोग का जानना कठिन है,।

योनि के बाहर दोनों ओर अंडकोश के समान मांस की दो गांठें प्रगट हों उसे अंतर्मुखी कहते हैं।

११ सूचीमुखी—जो योनि का मुख बहुत छोटा हो, और प्रसंग के समय कष्ट हो, गर्भ धारण नहीं कर सके उसे सूची मुखी कहते हैं, ।

१२ पिप्लुता—जो योनिमें सदैव पीडा हो तो उसे विप्लुता कहते हैं, ।

१३ जातघ्नी—जिस स्त्री के मासिकधर्म का रुधिर गरम होकर सूख जाय और ऋतु के समय थोडा २ आवै और गर्भ रह कर थोडी ही समय उपरान्त गर्भ गिर जाय उसको जातघ्नी (पुत्रघ्नी) कहते हैं, ।

१४ परिप्लुता—जो प्रसंग समय योनि के भीतर पीडा हो उसे परिप्लुता कहते हैं, ।

१५ उपप्लुता—जो योनि में से झाग से मिला रज ऊपर के भाग में बडे कष्ट से उतरै मासिक धर्म के समय पीडा हो पेडू में पीडा हो गाँठदार रुधिर गिरै तो उसको उपप्लुता कहते हैं, ।

१६ प्राक्चरण—जो प्रसंग समय पुरुष के स्खलित होने से पहले ही रज को त्यागदे उसको प्राक्चरण कहते हैं उसके गर्भ नहीं रहता, ।

१७ महायोनि—जो योनि अधिक फैली रहै और उसमें से पानी गिरता रहै उसे महायोनि कहते हैं इसके भी गर्भ नहीं रहता,।

१८ कर्णिका—जो योनि के भीतर कफ और रुधिर के दोष से गर्भाशय के चारों ओर कर्णिका (कमल के भीतर कंद) के समान अथवा कोदों के दाने के समान मांस बढ जाय उसको कर्णिका रोग कहते हैं, इस रोग में कुछ पीडा नहीं होती और गर्भ नहीं ठहरता है,॥

१९ नन्दा—जो सर्वदा मैथुन की इच्छा वाली हो और बार बार मैथुन से भी संतोष को प्राप्त नहीं होवै उसको नन्दा कहते हैं इस रोग में भी गर्भ का ठहरना बडा कठिन बात है,।

२० अति चरणा—जो अनेक बार मैथुन करने से बडी कठिनाई से पुरुष के स्खलित होंने के उपरान्त द्रवै और प्रसंग से इच्छा पूरी नहो उसको अति चरणा कहते हैं इस रोग में भी गर्भ का ठहरना कठिन है.। योंनि के ये बीस रोग बन्ध्या पना के रोगों से पृथक हैं,।

योंनि कन्द रोग लक्षण—सदैव क्रोधित रहने से दिन में अधिक सोंने से, भारी बोझ उठाने

और अधिक परिश्रम करने से, अधिक मैथुन की इच्छा रखने से, और किसी कारण से योनि में चोट लगजाने से वातादि दोष कुपित होकर योनि में बडहड के फल के समान गांठ पडजाती है, उसको योनिकन्द रोग कहते हैं. । इस रोग में बात के कोप से रूखी और फटोसी, पित्त के दोष से जलन युक्त लाल गाठ होती है, जिसके कष्ट से स्त्री को ज्वर होने लगता है और कफके कोप से खुजली होती है, ।

योनि रोग चिकित्सा—योनि रोग की चिकित्सा शीघ्र करनी चाहिये, अधिक दिन औषधि सेवन करने से असाध्य रोग भी साध्य हो जाता है, वैद्यक शास्त्र के प्राचीन ग्रन्थों में योनि रोग की चिकित्सा कई प्रकार से लिखी है औषधि युक्त तेल का फोहा रखना, बफारा लेना, बत्ती अथवा गोली तथा पोटली बनाकर योनि में रखना, औषधियों के जल से योनि के भीतर धोना, पिचकारी लागाना, एवं औषधि का सेवन करना

बात—के कोप से योनि में जितने रोग प्रगट होते हैं उनको दूर करने के लिये; गिलोय, दातूनी

की जड, त्रिफला. इनको बराबर लेके काढा बनावे उसकाढा से दिन में दो तीन बार योनि को धोवै, तथा भटकटैया के फूल. देवदारु. तगर. कूट, सेंधा लवण इनको छटाक छटाक भर लेकर कुचले और पांच सेर पानी में चढावै जब एक सेर पानी रह जाय तब उतारले और मलकर छानै, फिर कडाही में एक पाव काले तिल का तेल डालकर उसी में काढा डालदे, और मन्द मन्द आंचसे पकावै जब केवल तेल रहजाय तब उतारले, शीतल होंने पर छानले और बोतल में भर कर रख छोडे, इस तेल का फोहा योनि में रक्खे इस प्रकार जब तक रोग न जाय तब तक बराबर फोहा रक्खे, । वात के कोप से उत्पन्न होने वाले सब प्रकार के योनि क के भीतरी रोग इस तेल के सेवन से दूर हो जाते हैं इस कारण वातके कोप से उत्पन्न हुए रोगों के लक्षण प्रतीत होते ही इस तेल को बना लेना चाहिये,

पित्त—के कोप से उत्पन्न हुए योनि रोगों पर शीतल औषधियों का सेवन करना चाहिये, योनि में जलन हो तो खांड डालकर आँवलों का रस पीवे, अथवा कमलिनी की जडको चांवलों के जल में पीसकर पीवै, ।

कफ—केकोपसे उत्पन्नहुए योंनिरोग पर काली मिर्च पीपरि और कूट सेंधालवण उड़द इन सबको बराबरले कूटकर पानी में पीस अंगूठे की बराबर मोटी बत्ती बनाकर छाया में सुखावे, इस बत्तीको योंनिमें रखने से कफसे प्रगट हुये सब प्रकार के योंनिके रोग दूर हो जाते हैं, । तथा मिर्च, पीपरि, कूट, सेंधा, उड़द और सोया को बराबर लेके पानी में पीस अंगुली की बराबर बत्ती बनाकर योंनि में रखने से कफ जनित योंनि रोग शान्त हो जाता है, ।

यदि योंनि अंडिनी हो अर्थात् अंडके समान निकल आई हो तौ उस पर घी की मालिश करै, और फिर दूधकी भाफ देकर भीतर को बिठा देवै, और सोंठ, मिर्च पीपरि धनियां, जीरा, अनार पि-पलामूल इन सबको बराबर ले पानी में पीस इससे योंनि का मुख बन्दकर पट्टी बांधदेवे इस प्रकार चिकित्सा करने से कुछही दिनों में बाहर निकली हुई योंनि ठीक हो जाती है.

यदि योंनि से राध निकलती हो तो नीमके पते सेंधा नमक के साथ पीसकर गोली बनाकर योंनि में रखने से राध का निकलना बन्द होजाता है, ।

यदि योंनि से दुर्गन्ध आती हो तो कडुये

परवल, फूल प्रियंगु, बच, अडूसा, नीम इनको बरा-बर लेके पानी में पीसकर योनि में रखने से दुर्गन्ध जाती रहती है, अथवा अमलतास के काढ़ा से योनि धोवै तो दुर्गन्ध दूर होजावै है, ।

यदि योनिमें खुजली हो तो हड, बहेडा, आंवला गिलोय, जमालगोटा इनको बराबर ले काढा बना-कर योनि को धोने से खुजली दूर होजाती है, ।

यदि योनि से पानी बहता हो तो कत्था, सुपारी, हड, जायफल, नीम के पत्ते, इनको बराबर लेके चूर्ण बनावै, और मूंगके यूष में पीसकर कपड़े से छानकर सुखा लेवै, फिर उसको योनि में डाले तो पानी बहना बन्द हो जाता है, ।

तथा—सुगान्धित बच, कालाजीरा, जवाखार, अजवायन, अडूसा, कलौंजी, जीरा, पीपरि, सेंधा नमक, इन सबको बराबर ले कूट पीस कपड छनकर चूर्ण बनावै, और उसको कुछ गरम करके खांड मिलावै और लड्डू बनावै उन लड्डूओं को नित्य प्रातः समय अपने बल के अनुसार खावै तो कुछ दिन में योनि सम्बन्धी सब प्रकार के रोग दूर हो जाते हैं ।

यदि योनि कन्द रोग हो तो आमले की गुठली,

रसौत, कायफल, वायविडंग, हल्दी, इनको बराबर ले कूट पीस छान कर चूर्ण बनावै, और शहद में मिलाकर योंनि में भरै और त्रिफला के काढा से योंनि को सेवन करै तो योंनि कन्द रोग शान्त हो जाता है, । तथा यदि योंनि में पीडा होती हो तौ नीम की निवौली और रैंडा के बीज इन दोनों को बराबर लेके नीम के पत्तों के रस में बारीक पीस आंवले की बराबर गोला बनाकर योंनि के भीतर रखने से योंनि की पीडा दूर होजाती है, ।

तथा इन्द्रायन कीजड. सोंठ इनको बराबर लेके बारीक पीसै और बकरी के घीमें घोटकर योंनि के भीतर लेप करै तो योंनि की पीडा तत्काल दूर हो जाती है यदि गरमी आदि रोग के कारण भी पीडा होती हो तौभी पीडा शान्त हो जातीहै, ।

श्वेत प्रदर रोग

जैसें मनुष्यों में प्रमेह की अधिकता देखने में आती है उसी प्रकार स्त्रियों में श्वेत प्रदर अथवा सोम रोग की अधिकता देखी जाती है. श्वेत प्रदर कठिन रोग है इसके द्वारा पीडित होकर सेकडौं स्त्रियां अपना और अपने प्रियसन्तान का सुख धूल में मिला रही हैं, यह दुष्ट रोग स्त्रियों को

प्रायः सब ही अवस्थाओं में हो जाताहै सातवर्ष की बालिका से साठि वर्ष की वृद्धातक इस रोग से पीडित देखने में आती है,।

श्वेत प्रदर रोगोत्पत्ति कारण

भोजन पचने पर फिर भोजन करने, मदिरा पीने, और प्रकृति के विरुद्ध अधिक गरम और रूखा भोजन करने से, तथा कच्चा गर्भ गिरने से, अति मैथुन से, सहवास के अनन्तर जननेन्द्रिय को साफ न करने से मार्ग चलने से; लंघन करने से सोचसे, गहरी चोट लगने से, तीक्ष्ण पदार्थों के अधिक सेवन से, ऋतु काल में नियम विरुद्ध वर्ताव करने से प्रदररोग प्रगट हो जाताहै,।

श्वेत प्रदर रोग लक्षण

योनि और गर्भाशय में सूजन होकर एक प्रकार का घाव होजाता है उसमें पहले सफेद कफ के समान चिकना और पतला पदार्थ निकलताहै, यही पुराना होने पर पीला हरा रंग और बहुत पतला पानी के समान निकलता है, अधिक पुराना होने पर दुर्गन्ध युक्त होकर निरन्तर बहता रहता है, कभी कभी यह रोग अत्यन्त भयानक रूप

धारण करता है, और प्राणों को संकट में डालदेता है, इसके बढ जाने से शरीर की सारी शक्ति घटने लगती है, और मन्दाग्नि, मूर्छा कटि पीडा, शिरमें शूल, नेत्रों और हाथ पांवों में जलन आदि अनेक उपद्रव उठ खड़े होते हैं, इस रोग के होने पर पहले तो स्त्रियां कुछ ध्यान नहीं देतीं, परन्तु पीछे से जब पीड़ा बढ़जाती है, और रोग असाध्य होने लगता है, तब रोग स्वयं हो जाता है, उचित है कि पहले ही से ध्यान देके रोग को दूर करै, ॥

श्वेत प्रदर की चिकित्सा

धातु पीडा अथवा श्वेत प्रदर रोग में इसके उत्पत्ति के सब कारणों को छोडकर चिकित्सा करना चाहिये, पहली चिकित्सा यह है कि जिन विषयों को सेवन करने से कामकी इच्छा प्रगट हो उन विषयों को त्याग देवे, मैथुन का परित्याग कर देना इस रोग में बहुत ही अच्छा है, अपने स्वभाव के अनुकूल शीघ्र पचने वाला भोजन करै, निर्मल वायु का सेवन करै, प्रतिदिन प्रातः समय स्नान करै, परिश्रम थोड़ा करै, विषम भोजन न

करै, और विरुद्ध भोजन अर्थात् कभी गरम, कभी शीतल, कभी दो चार, कभी बारबार, कभी अनेक बार, कभी बहुत थोड़ा भोजन, कभी अधिक भोजन कभी शक्कर के साथ नमक, कभी दूध के साथ खटाई, कभी दो विरुद्ध पदार्थ भोजन में कभी इच्छा नहोते हुए स्वभाव के विरुद्ध पदार्थ भोजन नहीं करै, जहाँतक होसकै पहले उचित आहार विहार करके ही इस रोग को दूर करै, यदि बिना औषधि सेवन किये ही रोग जाता रहे तो बहुत अच्छी बात है परहेज करके रोग को दूर करना अच्छा होता है, इस रोग के उत्पन्न होते ही परहेज करै और अपना आहार विहार ठीक रक्खे, गुड़, तेल, खटाई, लालमिर्च अति तीक्ष्ण पदार्थों को त्यागदे, तो रोग शान्त हो जाता है जैसे अग्नि बिना ईंधन के स्वयं शान्त हो जावै है, । यदि रोग बढ़गया हो और आहार विहार तथा परहेज से शान्त नहो तो नीचे लिखे अनुसार औषधियों के द्वारा चिकित्सा करै, ।

१—दारुहल्दी, गन्दाबिरोजा, मोंम, वरियरा के बीज, सफेद चन्दन, इनको आधपाव लेके एक मिट्टी की हांडी में पहले बालू बिछावै उसपर औप

धियों को धरै औषधियों पर फिर बालू बिछाकर दवा देवै उसी के सामने नीलका लगाकर आँच पर चढाकर तेल खींच लेवै, पहले भाफ का कुछ पानी आताहै उसको टपक जानेदे, फिर तेल आताहै उसको लेलेवै इस तेल को बताशा में ५ बूँदसे२५बूंद तक डालकर खाय और ऊपरसे बकरी अथवा गायका दूध पीवै तो लाल और सफेद दोनों प्रकार का प्रदर रोग शान्त हो जाताहै, ।

२—तथा दो तोला भर कच्च गूलर कुचल कर उस में दो तोला शहत, दो तोला मिश्री पीस कर मिलावै और पिंडिया बनाकर खाय ऊपर से बिना रोग वाली गाय का आध पाव दूध पीवै तो श्वेत प्रदर जाय, ।

३—तथा फालसे की छाल चार तोला लेके शीतल जलमें पीसकर मिश्री मिलाय शर्बत बनाकर पीवै तो प्रदर रोग जाय, ।

४—तथा कैथको भूनकर उस में से तीन माशा गूदा खाकर ऊपर से गाय का आध पाव दूध पीवै तो प्रदर रोग जाय, ।

५—तथा अशोक की छाल छटांक भर लेके पावभर पानी में शाम को भिगोवै सवेरे आंच पर

चढावै आधाजल रह जाने पर उतारले और छानै और शुद्ध आंवला सार गन्धक डेढ माशे भर खाकर ऊपर से काढा पीवै तो सप्ताह भर में प्रदर रोग शान्त हो जावै,।

६—तथा भिंडी का पंचांग दो तोला लेके पावभर पानी में पकावै आधा रहने पर पीवै तो बीस दिन में प्रदर रोग शान्त हो जावै,।

७—तथा सेमर का फूल, मिश्री एक २ तोला भर लेके पावभर दूधमें गरम करै और पीवै तो तीन सप्ताह में प्रदर रोग जाय,।

८—तथा २ तोला मसीडा लेके पाव भर दूध में पीसकर पीने से दो सप्ताह में प्रदर रोग शान्त हो जाता है।

९—तथा मीठा इन्द्रजौ, कहरुआ समई, छोटी इलायची, जहर मोहरा खताई. इनको बराबरले, सब की आधी मिश्री मिलाय चावल के धोवन में शहत मिलाय पहले तीन माशा चूर्ण फांकै ऊपर से धोवन पीवै तो प्रदर रोग दो सप्ताह के सेवन से जाता रहता है,।

१०—तथा आधपाव पानी में कस्तूरीलता की जड को भिगोवे सबेरे मलकर छानले और दो

तोला बकरी का दूध मिला कर पीवै तो सप्ताह में रोग शान्त हो जावै,।

११—तथा गिलोय का सत. कसेरू, भिंडी की जड़. आँवला, एक एक तोला लेवै सब को बराबर मिश्री लेके एक में करे आधा आधा तोला प्रातः काल सायं काल खाकर ऊपर से अशोकारिष्ट लेवै तो प्रदर रोग शान्त हो जाता है,।

१२—गूलर के फल का चूर्ण, मिश्री, शहत, दो २ तोला लेके एक ही में मिलाकर खाय ऊपर से दूध पीवै तो प्रदर रोग जाय.।

१३ तथा—गूलरफल, चौलाई की जड़. असगन्ध, फालसे की छाल, आमला; शंखपुष्पी के फूल इनको बराबर लेके पाव भर पानी में काढा छटांक भर रहने पर शहत मिलाकर सांझ सवेरे पीवै तो रोग जाय,।

१४-तथा तोला भर नागकेशर गाय के मट्ठे में पीस कर पीने से श्वेत प्रदर रोग जाय,।

१५—अथवा सेमर के फूल सेंधा नमक डाल गाय के घी में तरकारी की भांति तलकर तोला भर प्रतिदिन खाने से भी प्रदर रोग अवश्य नष्ट हो जाता है,।

१६—तथा आमला मिश्री बराबर लेके फंकी बनाय छै २ माशे प्रतिदिन सांज सवेरे गाय के दूध के साथ उतार जाने से प्रदर रोग दूर हो जाता है, ।

१७—तथा अशोक की छाल का एक तोला चूर्ण गायके दूध के साथ प्रतिदिन प्रातःसमय उतार जाय तो प्रदर रोग जाय, ।

१८—तथा ताजे आंवलों का दो तोला रस लेके उस में १ तोला शहत मिला कर चाटै अथवा सुखे आंवलों का चूर्ण छै माशा शहत एक तोला मिलाकर चाटै दिन में दो तीन बार चाटने से सफेद धातु का गिरना अथवा सफेद प्रदर रोग दूर हो जाता है, ।

१६—अथवा त्रिफला (हड १ भाग, आंवला ४ भाग) लेके चूर्ण बनाय शहत के साथ दिन में तीन बार छै२ माशे भर चाटै, ।

२०· अथवा असगन्ध विधारा चार २ माशे भर लेके पीसै गाय के दूध के साथ दिन में दोबार उतार जाय तो रोगजाय, ।

२१-अथवा त्रिफला १ तोला, गोखरू ६ माशा दोनौं को पानी में भिगो कर शहत डाल पीवै तो श्वेत प्रदर रोग जाय ।

२२—अथवा सेमल की मूसली, सफेद मूशली भिंडी की जड इनको बराबर लेके चूर्ण बनावै चूर्ण से दूनी मिश्री मिलाय चारचार माशे भर दिनमें दो तीन बार गाय के दूध के साथ सेवन करै तो श्वेत प्रदर जाय.।

२३—तथा दाल चीनी, रसौत, नागकेशर लोध, इनको बराबर लेके सबका चूर्ण बनाय चार२ माशे भर दिन में दो बार गाय के मठा के साथ सेवन करै तो श्वेत प्रदर रोग जाता रहता है।

२४—तथा मैदा लकडी, तज, माजूफल, नाचरस, इनको बराबर लेके चूर्ण बनायं चूर्ण से दूनी मिश्री मिलाय चार चार माशे भर दिन में दो तीन बार गायके दूध के साथ सेवन करने से पतली धातु का बहना बन्द हो जाताहै और प्रदर रोग भी शान्त हो जाताहै,।

२५—तुरंजवीन, मस्तगी, राल, गुर्च का सत, इनको बराबर लेके चूर्ण बनाय चार चार माशे भर दिन में दो बार खाने से श्वेत प्रदर रोग शान्त हो जाता है,।

२६—रसौत, तवासीर, लाल चौलाई की जड इनका चूर्ण चार २ माशे सांझ सबेरे चांवलों के

पानी के साथ पीने से श्वेत प्रदर रोग शान्त हो जाता है, ।

२७—तथा शतावर, कंघी की जड़, खरैटी की जड़, गोरख मुंडी, इनका चूर्ण अथवा काढा बनाय मिश्री शहत मिलाकर सेवन करने से श्वेत प्रदर रोग दूर होजाता है, ।

२८—अथवा गुर्च, गोखरू, आमला इन तीनों के तीन तोला हिममें एक तोला शहत मिलाकर पीने से श्वेत प्रदर रोग दूर होजाताहै, ।

२९—तथा आमलों का रस, केले की पक्की फली, मिश्री, शहत इन को मिलाकर सेवन करने से पानी के समान पतली धातु का गिरना बन्द हो जाता है, ।

३०—अथवा पमार की जड़को चावलों के पानी में पीसकर पीने से पतली धातु का गिरना बन्द हो जाता है, ।

३१—तथा धायके फूल, सुपारी के फूल, दारू हल्दी, त्रिफला, बेलगिरी इनको बराबर लेके पावभर पानी में शामको भिगोवै सबेरे औटावै चौथाई रहने पर शहत मिलाय पीने से श्वेत प्रदर रोग शान्त हो जाता है, ।

३२—पेठा के बीजों की मींगी, मूशली, छुहारा, बिदारी कन्द इनको पीसकर चार माशे भर मिश्री और शहत के साथ सेवन करने से श्वेत प्रदर रोग शान्त हो जाता है, ।

३३—तथा अशोक की छाल, आमकी छाल, बड़ के अंकुर इनके काढा में मिश्री शहत मिलाय पीने से प्रदर रोग जाता रहता है, ॥

३४—अथवा गुर्च का रस, अडूसे का रस, शहत एक एक तोला, इन सब को मिलाकर पीने से प्रदर रोग शान्त हो जाता है, ।

३५—अथवा मुंडी, मुलहटी दोनों को बराबर लेके दोनों के बराबर मिश्री मिलाय सेवन करने से श्वेत प्रदर रोग जाता रहता है, ।

३६—नाग केशर, लाख दो दो तोला, दाख पांच तोला, इन को पीसकर चूर्ण बनावें, बलानुसार मिश्री और शहत के साथ सेवन करने से धातु सम्बन्धी अनेक रोग दूर हो जाते हैं, ।

३७—तथा भुने उडद का चून, भुने चनेका चून इमली के भुने हुए बीजों का चून, इनको बराबर लेके खांड और घीके साथ लड्डू बनाकर सेवन करने से श्वेत प्रदर शीघ्र अच्छा होजाता है, ।

३८—अथवा सफेद मूशली, शतावर, विधारा, शिलाजीत, इनकी गोली बनाकर दूध के साथ खाने से प्रदर रोग जाता रहता है, ।

३६—अथवा एक रत्ती से चार रत्ती तक शिला जीत दूध के साथ सेवन करने से प्रदर रोग दूर हो जाता है, ।

४०—शिलाजीत चारमाशा, लोह भस्म दो माशा. सोना माखी की भस्म दो माशे लेके खरल करे, और दो दो रत्ती की गोली बनाकर दूध के साथ सेवन करे तो श्वेत प्रदर रोग दूर हो, ।

४१—अथवा त्रिफला के चूर्ण के साथ शिला-जीत की गोली बनाकर चांवलों के पानी के साथ सेवन करने से श्वेत प्रदर रोग जल्दी अच्छा हो जाता है. ॥

यदि धातु रोग और प्रदर रोग बहुत पुराना हो गया हो और उपरोक्त औषधियों से रोग न जावे तो चरक, सुश्रुत आदि वृहद्ग्रन्थों में से देखकर अथवा किसी अच्छे वैद्य से बनवाकर आमल क्यादि अवलेह, शतावरी घृत, अशोक घृत, च्यव-नप्राशावलेह, गोक्षुराघगूगल, अश्वगंधा रसायन, हिंग्वादि तैल, प्रदर नाशक वटी इन औषधियों

का सेवन करे, परन्तु पहले वमन विरेचनादि द्वारा देह को शुद्ध कर लेवै तब इन औषधियों का सेवन करै,

वात प्रदर, पित्त प्रदर, कफ प्रदर सन्निपात प्रदर ये चार प्रकार का प्रदर रोग होता है. वात प्रदर में कमर और पेडू में पीडा होकर गुलाबी रंग का कुछ फेन सहित अथवा मांसके धावन के समान रुधिर थोडा थोडा योनि से निकलता है. । पित्त प्रदर में काला, पीला, नीला और लालरंग का गर्म रुधिर पेट और पेडू में पीडा होकर योनि से निकलता है, कफ प्रदर में भात के माड़ के समान अथवा आंवके समान पीला सफेद मिले हुए रंग का कादों के धोवन सा धातु योनि से निकलता है, । सन्निपात प्रदर में चर्वी के समान वा हरताल के रंग का सा अथवा शहत घी मिले हुये रंग का सा दुर्गन्धित धातु योनि से निकलता है, यह असाध्य होता है इस में औषधी काम नहीं देती, सन्निपात प्रदरवाली स्त्री मरजाती है इसकी चिकित्सा बुद्धिमा वैद्यजन नहीं करते हैं. ।

रक्त प्रदर नाशक औषध

४२—रक्तातिसार, रक्तपित्त, खूनी बवासीर के निमित्त जो औषधि लाभकारी है वेही प्रदर रोग के

लिये हितकारी है, । पके हुये गूलर फलको सुखा-
कर उसके बराबर मिश्री मिलाय बारीक चूर्ण बनावै
सांझ सवेरे एक एक तोला चूर्ण फांककर ऊपर से
चावल का धोवन पीवै तो रक्त प्रदर रोग जाता
रहता है, ।

४३—दो तोला अशोक वृक्ष की छाल लेके
कुचलै और पाव भर दूध में पकावै । जल छटाक
भर रहजाय तब मिश्री मिलाकर पीवै. सांझ सवेरे
पीने से रक्त पिदर दूर हो जाता है, ॥

४४—चिकनी सुपारी, माजूफल, सोंठा, बड़ा
गोखरू, सफेद चन्दन, सफेद मूशली, समुद्रशोष,
रूमी मस्तंगी, इनको बराबर लेके बारीक चूर्ण करै,
चूर्ण के बराबर मिश्री पीसकर मिलावै और छै छै
माशे भर लेके सांझ सवेरे गायके कच्चे दूध के
साथ फांके तो पीडा सहित रक्तप्रदर रोग दूर होजाताहै,

४५—सफेद चन्दन, खस, कमल गट्टे की गिरी
छटाक छटाक भर लेके बारीक चूर्ण बनावै, और
तीन तीन माशे भर दिन में कई बार चावल के
मिश्री मिले धोवन के साथ खाय तो योनि से
लोहू का गिरना बन्द हो जाता है,

४६—मदार का फूल एक तोला लेके पावभर

पानी में पकावै, जब चौथाई रहजाय तब कपड़े से छान शहद मिलाकर पीवें सांझ सवेरे सात दिन पीने से उपद्रव सहित प्रदर रोग शान्त हो जाताहै।

४७—वंशलोचन, सफ़ेद इलायची, लोध, शीतल-चीनी, शुद्ध शिलाजीत, ढाक का गोंद, एक एक तोला, अनार की कली दो तोला, पक्का गूलर फल सुखाया हुआ दश तोला, इनको लेके बारीक चूर्ण बनावै, सांझ सवेरे छै छै माशे भर लेके चावल के धोवन के साथ सेवन करे तो रुधिर प्रवाह और प्रदर रोग शान्त हो जाता है।

४८—कपास के फूल को घी में तलकर खाने से अथवा गुडहल के फूल की कली खाने से अथवा भुनी फटकरी और मिश्री छटाक छटाक भर लेके बारीक चूर्ण बनाय छै छै माशे भर सांझ सवेरे गाय के दूध के साथ सेवन करने से दो सप्ताह में प्रदर रोग शान्त हो जाता है।

४९—चौराई का रस, शहद एक एक तोला, रसोत दस माशा, इनको मिलाकर पीने से सात दिनमें प्रदर रोग अवश्य दूर हो जाता है।

५०—सफेद इलायची, बैंगन की जड, चौराई की जड, पीपरि गोपीचन्दन, छुहारा, तालमखाना,

ढाकका गोंद, दो दो तोला, मिश्री चार तोला; इन सबका बारीक चूर्ण बनाय आठ आठ माशे भर सांझ सबेरे जलके साथ खाने से प्रदर रोग शान्त हो जाता है, ॥

५१—सफेद जीरा, पोस्तका दाना. इमली के बीज की गिरी, आमकी कोपल, जायफल, पठानी लोध, बेलकी गूदी, जावित्री, जायफल, मोचरस, सोंठ, मिर्च, पीपरि, अफीम, नागरमाथा. धाय के फूल, सोहागा अजवायन, इन्द्र जौ, धतूरे के फूल, धतूरे के शुद्ध बीज, एक एक तोला लेके बारीक चूर्ण बनावे और केला के पानी से घोटकर मटर के बराबर गोली बनाकर छाया में सुखावे सांझ सबेरे एक एक गोली चावल के धोवन के साथ खाय तो रक्ता तीसार और प्रदर रोग दूर होजाताहै,

५२—सफेद चन्दन, खस. लोध, जटामासी, बेलकी गूदी, कमलगट्टा की गिरी, मिश्री, नागर मोथा, हाऊ बेर. पाढ, इन्द्र जौ कुरैया की छाल, अतीस, बेतरासोंठ, धायके फूल, रसोत, जामुन की गुठली, आमकी गुठली, नील कमल, मोचरस, मजीठ अनार के फूल, सफेद इलायची, इनको तोला तोला भर लेके बारीक चूर्ण बनाय सांझ

सवेरे छै छै माशे भर चावल के शहत मिले धोवन के साथ सेवन करने से सब प्रकार का प्रदर रोग, खूनी बवासीर और रक्तातिसार रोग शान्तहोजाताहै।

अशोकारिष्ट—अडूसा, सफेद चन्दन, सफेद जीरा, आमकी गुठली, दारूहलदी, कमल, त्रिफला, स्याह जीरा, सोंठ, नागरमोथा, ये छटांक छटांक भर लेवै धाय के फूल तीनपाव लेवै, सबका बारीक चूर्ण कर अलग रक्खै फिर आठसेर अशोक की छाल कुचलकर अठगुने जलमें पकावै जब चौथाई जल रहजाय तब उतार कर छानले, और उस में दशसेर पुराना गुड मिलाकर लकडी से कुछ देर हिलावै, गुड गल जाने पर फिर कपडे से छानकर उसमें वह अलग रक्खा हुआ चूर्ण मिलाकर घड़े का मुख बन्द कर महीने भर हवादार जगह में रक्खै फिर खोलकर भली भांति मथै और मोटे कपड़े से छान पन्द्रह दिन रखने से साफ थिराना हुआ आंसव निकालकर बोतलों में भर लेवै, इसकी मात्रा तोले भर से चार तोले तक की है, सांझ सवेरे अथवा दिनमें चार बार दो दो तोले भर थोड़े शीतल जलमें मिलाकर पीवै तो सफेद प्रदर, रक्त प्रदर मन्दाग्नि, ग्लानि, कंद, अरुचि, शोथ, ज्वर,

खूनी बवासीर आदि रोग शांत हो जाते हैं।

प्रदर रोग में पथ्य।

चना, मूंग, अथवा मसूर की दाल, पुराने चावल का भात, गेंहूं अथवा जौ की रोटी, बकरी अथवा गाय का दूध, भैंस का घी, परवल, कटहल, केला, सफेद कुम्हड़ा, चौराई, लौके की तरकारी, और अनार, छुहारा, चिरौंजी, नारियल, आमला, कसेरू कैथ, आदि फल तथा शीतल जल ये सब प्रदर रोग में पथ्य (हितकारी) हैं।

प्रदर रोग में अपथ्य।

मार्ग चलना, बहुत परिश्रम, आंचके सामने बैठ-ना, मदिरा पान, मांस भक्षण, हुक्का, पीना, मल; मूत्रके वेगको रोकना, गुड, क्रोध, शोच, दही, मर सों, उडद, सिरका; तिल, अचार, लहसन आदि गरम और क्षार पदार्थ अपथ्य (अहितकारी) हैं

सोम रोग।

जिस प्रकार मनुष्यों के बहुमूत्र रोग होता है जो कुछ खाया जाता है उसका मूत्र बनकर निकल जाता है, और मनुष्य दुबला और निर्बल होकर मरजाताहै यदि रोग उत्पन्न होतेही उचित औषधि न मिल सके तो रोग दूर नहीं हो सकता, इसी

प्रकार स्त्रियों के सोम रोग होता है इस रोग के होने से स्त्रियों को यह भ्रम रहता है कि किसी कारण से मूत्र अधिक उतरने लगा है, स्त्रियां प्रायः गुप्त रोग पुरुषों से छिपाती हैं, और मूत्र अधिक उतरनेको विशेष रोग नहीं समझतीं, धोखे में ही दुर्बल और निर्बल होकर मरजाती हैं इस कारण अधिक मूत्र होने पर ध्यान रखना चाहिये कि यह रोग महा भयंकर है, शीघ्र इसको दूर करने का उपाय करना चाहिये ।

सोम रोगोत्पत्ति कारण ।

अत्यन्त मैथुन करने से अधिक चिन्ता करने से और अपनी शक्ति से अधिक परिश्रम करने से सदैव क्रोधित रहने से दूसरोंसे अधिक ईर्षा मानकर उसी चिंता में डूबे रहने से, अधिक नशा खाने पीने से, जुलाव बिगड जाने से, नित्य वासी अन्न खाने से, अधिक खटाई मिर्चा और तेल खाने से देह का रस और रुधिर तथा जलका अंश यह जो शरीर में रहते हैं वे सब अपने अपने स्थान को छोड देते हैं, और मूत्राशय (जहां मूत्र बनता है) उसमें आकर मूत्र के मार्ग से निकला करते हैं जो जल के समान साफ शीतल होने के कारण

किसी प्रकार का क्लेश नहीं होता, न उसमें किसी प्रकार की रंगत अथवा दुर्गन्ध होती है, रात दिन मूत्र रूपमे निकलते निकलते जब रोग अधिक बढ जाता है, तब मूत्र का वेग रोकने से नहीं रुकता, स्त्रियों के तो यहांतक बढ जाता है, कि मूत्र निमित्त उठते उठते कपडे बिगड जातेहैं जिस स्त्री के यह रोग होता है उसके शिरमे पीडा होती है चक्कर आता है, देह में घूमनी सी आती है, मुख सूखता रहता है, भूख प्यास बनी रहती है, खाने पीने से तृप्ति नहीं होती सदा यही इच्छा रहती है कि खाती पीती रहें, स्त्री का समस्त रजपानी होकर निकल जाता है इसी को सोम रोग कहतेहैं इस रोगसे अन्य भी भयंकर रोग उत्पन्न हो जातेहैं जिन कारणों से यह रोग उत्पन्न होता है उनबातों से बचना चाहिये और रोग उत्पन्न होतेही औषध सेवन करनी चाहिये ।

सोम रोग नाशक यत्न

शतावर का बारीक चूर्ण करें और सांझ सवेरे छे छै माशे भर लेके दूध और मिश्री के साथ सेवन करने से सोम रोग जाता रहता है, ।

तथा बिदारी कन्द, सूखा पिंडारू, भिंडी की जड,

सूखा आमला. चार चार तोला, और मुलहटी का चूर्ण उडद का चूर्ण दो दो तोला ले के सबको बारीक पीस छै छै माशे की पुडिया बनावै सांझ सवेरे एक एक पुडिया फांककर ऊपर से गाय का पावभर दूध मिश्री मिलाकर पीवे तो कुछ दिनों में सोम रोग शान्त हो जाता है, ॥

तथा तालवृक्ष की जड़, खजूर की जड़, विलाइ कन्द, मुलहटी, इनको कूट पीस छानकर चूर्ण बनावै और छै छै माशे प्रमाण प्रति दिन प्रातः काल सायंकाल गायके दूध के साथ अथवा चावल के धोवन के साथ सेवन करै तो तीन सप्ताह में सोम रोग शांत होजाता है, ।

वन्ध्या (बांझ) रोग

जिस स्त्री का रज नष्ट होगया हो मासिक धर्म न होता हो, और गर्भाधान के योग्य न हो उस को वन्ध्या कहते हैं, अनेक कारणों से भी स्त्री वन्ध्या हो जाती है, वन्ध्या के अनेक भेद हैं, परन्तु गर्भाशय के निकट बादाम के समान जो अंडकोश छिपे होते हैं वे पुरुष के समान प्रगट होजांय, योनि का छिद्र छोटा हो, कुच न हों, और रजस्वला न होती हो ऐसी स्त्री के लिये यत्न

करना वृथा है, नपुंसक पुरुष से गर्भा धान नहीं होता, इस कारण कोई स्त्री ऐसी भी हैं, कि जो एक पुरुष से गर्भवती नहीं होतीं और दूसरे पुरुष से गर्भिणी हो जाती हैं, इसकी परीक्षा तो वहीं हो सकती हैं जहां दूसरे पुरुष करने का प्रचार हो, आजकल गर्भ धारण की अवस्था कमसे कम दश और अधिक से अधिक चौसठ वर्ष तक जानना चाहिये, परन्तु रज रहने का प्रमाण पचास वर्ष तक है, जो निरन्तर सुखी हो और चौदह वर्ष की अवस्था से रजस्वला होने लगी हो, वह चौसठ वर्ष की अवस्थातक अर्थात् पचास वर्ष रजस्वला होती है नियमानुसार वर्ताव करने से यह क्रम सब स्त्रियों में समान हो सकता है, परन्तु आजकल नियम पूर्वक वर्ताव करने में स्त्री पुरुष दोनों को बड़ा कष्ट जान पड़ता है, इसी से बाल विधवा और वन्ध्या स्त्रियों की संख्या बढ़गई है, वन्ध्या होने का यह भी कारण है कि कोई स्त्री दुबली हो जाती है, कोई बहुत मोटी हो जाती है, रजोवती स्त्री का रज बन्द हो जाना ही वन्ध्यापन है,। योनि रोग जो बीस प्रकार के लिख चुके हैं उनमें से कोई रोग असाध्य होजाय और गर्भ धारण के

योग्य न रहे तो भी स्त्री वन्ध्या हो जाती है, और रज के दूषित होने पर भी गर्भ नहीं रहता, यह भी वन्ध्या होने का कारण है, वे दोष आठ प्रकार के हैं. सो इस प्रकार कि १ प्रकृति और ऋतु के अनुसार अहार विहार न करने से और किसी व्यति क्रम से पित्त दूषित होकर रजमें दोष आ जाता है, तो वह रज गर्भ धारण के योग्य नहीं रहता, । २ रुधिर में किसी प्रकार का दोष होता है तो गर्भ धारण के योग्य नहीं होता, । ३ वात विकार से रज दूषित होजाने के कारण गर्भ नहीं रहता; । ४ कफ के विकार से रज दूषित हो जाता है, । ५ वात पित्त कफ, इन तीनों के दोष से रज दूषित हो जाता है, । ६ ग्रह दोष से भी गर्भ नहीं रहता, । ७ देवता के कोप से भी गर्भ नहीं रहता, ८ बड़ों के शाप से भी गर्भ नहीं रहता, । इन आठ दोषों से पृथक तीन प्रकार की बन्ध्या और हैं वे ये हैं, कि, १ काक वन्ध्या, २ मृत वत्सा, ३ गर्भ स्रावी, ।

काक वंध्या—पहले एक पुत्र उत्पन्न होकर फिर सन्तान न हो तो उसको काक वंध्या कहते हैं, ।

मृतवत्सा—जिस स्त्री के संतान होकर मरजावे

कोई संतान न जीवै उसको मृत वत्सा कहते हैं ।

गर्भ स्रावी—जिस स्त्री के गर्भ रहकर गिरजाता हो उसको गर्भ स्रावी वंध्या कहते है ।

वात विकारसे दूषित रज का लक्षण

जब बात के कोप से रज दूषित हो जाता है, तब मासिक धर्म के समय रुधिर कम निकलता है, और रुधिर का रंग कसुम के रंग के समान होता है, कटि में पीडा होने लगती है, और योनि में भी पीडा होती है, ऋतु काल में ज्वर होने लगता है, ।

वात दूषित रज का उपाय

दोनों कटैयों की जड, जामुन की जड की छाल, आमकी जड की छाल; इनको बराबर ले के कूट लेवै और छै छै माशे की पुडियां बांधै ऋतु काल में एक एक पुडिया गाय के दूध के साथ पीसकर पीवै प्रातः समय जबतक ऋतु रहे तबतक पीवै. । अनन्तर लक्ष्मणा बूटी को गायके दूध में पीस कर बारह दिन तक पीवै और सूंघै तो बात के कोपसे दूषित रज शुद्ध हो जाता है और गर्भ धारण शक्ति होती है, ।

पित्त दूषित रज लक्षण—जब पित्त के कोप से

रज दूपित हो जाता है, तब ऋतु काल में जामुन के पके हुये फल के समान काला रंग का रुधिर निकलता है, और पेट में जलन, कटिमें पीडा, हाथ पांवोंमें गरमी, मासिक धर्म रुधिर गरम जलन के साथ निकलता है, ।

पित्त दूपित रजका उपाय—सफेद चन्दन, मुलहटी, तगर, कूट, कमलगट्टा, ये सब औषधियाँ बराबर लेके कूटे, और ऋतुकाल में तीन माशेभर लेके बकरी के दूधमें पीसकर कपडे से छानकर सायंकाल और प्रातः समय तबतक पीवे कि जब-तक ऋतु का रुधिर जारी रहे, ऋतु शुद्ध होजाने पर लच्मणा बूटी को गायके दूध में पीस छानकर बारह दिनतक पीवै और सूंघे तो पित्त से दूपित रज शुद्ध होजाता है और गर्भ धारणी की शक्ति होती है, ।

कफ दूपित रज लक्षण— जब कफके कोप से रज दूपित होजाता है तब ऋतु काल में चिकना और प्याजी रंगका रुधिर निकलता है बहुत लाल नहीं होता है, और नाभिमें बहुत पीडा होती है, ।

कफ दूपित रज का उपाय ।

हड बहेडा, आंवला, चीता, सोंठ, काली मिर्च,

इनको बराबर लेके कूट पीस कर चूर्ण बनावे और तीन तीन माशे की पुडिया बनाय ऋतुकाल में प्रतिदिन प्रातःसमय बकरी के दूध में पीसकर जितने दिन ऋतु रहे उतने दिनतक पीवै. । अथवा मदार की जड, नागकेशर, खरैटीकी जड, मेंहदी, गंगेरन की छाल लौंग, इनको बराबर लेके कूट पीस तीन तीन माशे की पुडिया बनावै, जितने दिन ऋतु रहे उतने दिन प्रातः सायं एक एक पुडिया बकरी के दूध में पीस कपडे से छानकर पीवै, फिर रज शुद्ध हो जाने पर लक्ष्मणा बूटी को गायके दूध में पीस छानकर बारह दिन पीवै और सूंघे तो दूषित रज शुद्ध हो जाता है, और गर्भ धारण शक्ति होती है. ।

त्रिदोष (सन्निपात) से दूषित रज के लक्षण—जब वातादि तीनों दोषों से युक्त रज होता है तब ऋतु कालमें ज्वर वेग से बढ आता है, ऋतु का रुधिर बहुत गरम काले रंगका जलन के साथ निकलता है, सुस्ती बहुत रहती है. सब देह में हड फूटन होती है, कटि, योनि, और कोख में पीडा होती है. ॥

सन्निपात से दूषित रज का उपाय—अंडे की

छाल, सफेद चन्दन, आमकी छाल, तगर, निशोथ, कूट, कमलगट्टा, मुलहटी. इनको बराबर लेके कूट पीसकर तीन तीन माशे की पुडिया बनावै ऋतु कालमें प्रातःसमय एक पुडिया बकरी के दूध में पीस छानकर जबतक ऋतु रहे तबतक पीवै, परंतु पांच दिन से कम न पीवै, ऋतु काल व्यतीत होजाने पर छोटी कटाई की जड, सफेद आककी जड, बांझ ककोडा, सफेद फूल की विष्णुकान्ता और लक्ष्मणा बूटी इनको कूट पीस छै छै माशे की पुडिया बनाय गाय के दूध में डाल कपडे से छानकर तीन दिन नाक के दाहिने छेद से पीवै तो पुत्र और बायें छेद से पीवै तो कन्या होवै, ।

ग्रह दोष का उपाय—यदि ग्रहों के दोष से सन्तान न होती हो तो ग्रहों का दान जप हवन आदि कराना चाहिये, ये इस से ग्रह दोष दूर हो जाता है, ।

देव दोष का उपाय—यदि रोग का कोई लक्षण न हो और चित्त सावधान न रहे तो देवता का दोष जानकर जप हवन कथा श्रवण आदि उपाय से देवता को प्रसन्न करना चाहिये. ॥

बडों के शापका उपाय—यदि किसी अपने से

बड़े ने शाप दिया हो तो उसको प्रसन्न कर आशीर्वाद लेना चाहिये तो दोष दूर होजाताहै. ॥

विलंब से ऋतु होने का उपाय—कोई कोई स्त्री महीना से अधिक हो जाने पर रजोवती होती है. और गर्भ नहीं रहता, उसका उपाय यह है कि ककोडा का फल, काला जीरा, सफेद जीरा, खुरासानी बच, इनको बराबर लेके छै माशा भर प्रति दिन चावल के धोवन के पानी में पीसकर ऋतु काल के उपरान्त सात दिन प्रातः समय पीवै, और दूध भात खाय पथ्य से रहे, तो अवश्य सब दोष दूर होकर गर्भ रहता है. ॥

तथा अन्य दोषों का उपाय—जिसकी योनि से प्रसंग समय पानी बहै और विषय की इच्छा सदैव रहै, कभी तृप्त न हो, क्षुधा बनी रहै भोजन से तृप्ति न हो उसके भी गर्भ नहीं रहता, क्यों कि गर्भाशय में गया हुआ वीर्य बाहर निकल आता है उसका उपाय यह है सफेद जीरा, स्याह जीरा, ककोडा का फल खुरासानी बच, इनको बराबर लेके कूटै और चावल के धोवन के पानी के साथ छै माशा प्रति दिन प्रातः समय तीन दिन ऋतु के उपरान्त पीवै, । तथा जिस स्त्री की योनि से

सफेद पानी आता हो उसके भी गर्भ नहीं रहता है, यदि रहता है तो गिरजाता है, और न गिरै तो अल्पायु हो उसके उपाय में प्रदर रोगकी अनेक औषधियां लिखी जा चुकी है, ।

काक वन्ध्या चिकित्सा—असगन्ध की जड, पुष्यनक्षत्र युक्त रविवार के दिन लावे और भैंस के दूध के साथ चार तोलाभर प्रति दिन सेवन करै सात दिनमें काकवन्ध्या दोष दूर हो जाता है, अथवा अपराजितालता की जड सहित उखाड लावे और पीसकर भैंस के दूधके साथ भैंस का नैनू मिलाय ऋतु काल में प्रातः समय सेवन करै सात दिन सेवन करने से काक वन्ध्या दोष दूर होजाता है, परन्तु पथ्य से रहै, ।

मृत वत्सा चिकित्सा—मृतवत्सा स्त्री को उचित है कि कृत्तिका नक्षत्र में पूर्व सुख होकर पीत पुष्पा की जड लावै और जलमें पीसकर दो तोला भर नित्य पीवै, । अथवा बिजौरा नीबू की जड दूधमें सिद्धकर घी मिलाय पीवै, । अथवा पद्माख, सफेद इलायची के दाना, सुगंध बाला, पित्तपापडा, देवदारु, हल्दी, सफेद वच, हड, चीता, पीपरि, मुनक्का, बायविडंग, कचूर, कुसुम के बीज, अज

मोद, रसौतये एक एक तोला लेके कूट पीस कपड़ छनकर चूर्ण बनावे गर्भ धारण होने पर पहले महीने में प्रति दिन प्रातः समय एक माशाभर दूसरे महीने में प्रति दिन दो माशा भर तीसरे महीने में तीन तीन माशेभर. चौथे महीने में चार चार माशा भर, पांचवे महीने में पांच पांच माशे भर प्रति दिन प्रातः समय सेवन करें तो मृतवत्सा दोष दूर हो जाता है, ऋतु के फल इसमें खावे और छटे महीने से औषधि सेवन नहीं करै, पांच महीने तक औषधि सेवन करै तो मृतवत्सा दोष दूर होकर दीर्घ जीवी पुत्र उत्पन्न होता है, ।

सिद्ध घृत—मजीठ मुलहटी, मुनक्का, हड, आंमला, बहेडा, शक्कर. बरियरा. मेदा स्वर्ण क्षीरी, काकोली जड, असगन्ध, अजमोद हलदी, दारू हलदी, प्रियंगु, कुटकी, लाल कमल, कुमुद का फूल कूट क्षीर काकोली, लाल चन्दन, सफेद चंदन, ये सब दो दो तोला भर लेवै, इन को चार सेर गाय के घीमें पचावै, यहां गाय एक रंगकी, जिसका बछरा जीता हो उसका घी और दूध लेना चाहिये, शतावरी का रस सोलहसेर, गाय का दूध सोलह-सेर लेवै, अथवा शतावर को कुचल कर सोलहसेर

पानी में पचावे चौथाई रह जाने पर दूध मिलावे और पूर्व पचाई हुई घी सहित औषधियों को पचा कर घी को जंगली उपलों की धीमी आँच से सिद्ध कर लवे यह बलानुसार तीन माशे से दो माशे तक खाया जाता है, प्रायः चिकित्सक इस घी को सिद्ध करते समय लक्ष्मण बूटी की जड़ को भी डालते हैं, इस घी को यदि मनुष्य सेवन करे तो अधिक बलवान होवे. और स्त्री सेवन करे तो सब प्रकार रज दोष, योनि साफ, वन्ध्यापन दोष दूर होजाता है और सुन्दर पुत्र उत्पन्न होता है जिस स्त्री के बालक होकर मर जाते हैं, अथवा जिस स्त्री के बालक थोड़े ही समय तक जीते हैं तथा जिन स्त्रियों के गर्भ गिर जाते हैं उनके सबदोष इस घी के सेवन से दूर हो जातेहैं,।

आर्तव दोष में पथ्या पथ्य—जिन स्त्रियों के मासिक धर्म न होता हो, अथवा आर्तव में दोष हो उनको उचित है कि काले तिल कुल्थी, दही, काँजी, मठा, और मूंग, मसूर, चना की दाल इन का सेवन करै, और गरम बस्तु, दिनमें सोना, रात में जागना, आँच के सामने रहना, अधिक परिश्रम करना इनबातों से बचाकर रक्खे,।

साध्य बन्ध्या चिकित्सा १—गंगेरन की जड की छाल, अपराजिता की जड, सफेद कुलथी, इनको बराबर लेके कूट पीस छानकर छै छै माशे की पुडिया बनावै और कपिला गाय के दूध के साथ सात दिन पीवे, ।

२—अथवा स्याह जीरा, सफेद जीरा, वटकी जटा पीपल की जटा खुरासानी बच, काकोली की जड और फल, शतावर, इन सबको बराबर कूटपीस कपड छन कर छै छै माशे की पुडिया बनावै और ऋतु काल में बछडे वाली गायके साथ पीवै, दूध चाँवल खाय पथ्य से रहै तो बन्ध्या स्त्री के गर्भ धारण शक्ति होकर गर्भ रहता है, ।

३—तथा सफेद कटाई की जड, मोरशिखा कीजड इनको बराबर लेके चूर्ण बनाय छै छै माशे भर गाय कै दूध कै साथ सेवन करै, तो बाँझ स्त्री के गर्भ धारण शक्ति उत्पन्न होती है, ।

४—अथवा कूट, नागौरी असगन्ध का चूर्ण छैछै माशे भर ऋतु स्नान के उपरान्त तीन दिन गाय के दूध के साथ सेवन करै तो बन्ध्या स्त्री गर्भ धारण शक्ति वाली होती है और गर्भ रहता है, ।

५—तथा हल्दी की जड मेढासिंगी, इन का बारीक चूर्ण छै छै माशे भर ऋतु स्नानोपरान्त तीन दिन गाय के दूध के साथ पीने से वन्ध्या स्त्री गर्भ धारण शक्तिवाली होजाती है और गर्भ रहता है, ।

६—तथा बिजौरा के बीज, अँढा की मींगी, आवला, सफेद कटैया की जड, इनको बराबर लेके बारीक चूर्ण बनाय तीन तीन माशे भर गाय के दूध के साथ ऋतु स्नान के उपरान्त तीन दिन सेवन करने से वन्ध्या स्त्री गर्भ धारण शक्तिवाली होती है और गर्भ रहता है, ।

७—तथा मुलहठी, खरेंटी, सहदेही, मिश्री इनको बराबर लेके बारीक चूर्ण बनाय तीन तीन माशे भर गाय के दूध में थोडा घी और घी से कुछ अधिक शहत मिलाकर ऋतु काल में सात दिन सेवन करने से गर्भाशय के सब विकार शान्त होजाते हैं और गर्भ रहता है, ।

८—शंख का चुना, आंवलासार गन्धक इनके बराबर मैनशिल लेके तीनों को पानी में पीसकर योनि के बीचमें रक्खे तो योनि की पीडा दूर हो जाती है, सूजन और खुजली भी दूर हो जाती है, ।

९—तथा हल्दी, दारु हल्दी, नागरमोथा, सोंठ,

हींग, सौंफ, खरैटी, गूगल इन सब औषधियों को बराबर ले कूट पीस कर कपडछन पानी में पीस कपडे पर लेप कर वत्ती बनाय योंनि में धरै तो योंनि शुद्ध होकर उसमें गर्भ धारणशक्ति उत्पन्न होती है, ।

१०—देवदारु, गूगल, लाख, पीपरि इनको बराबर लेके कूट पीस कपडछन करके पानी में पीस आठ अंगुल की बत्ती बनाय योंनि में ऋतु काल पर्यन्त रक्खै इससे योंनि शुद्ध होकर उसमें गर्भ धारण शक्ति उत्पन्न होती है, और गर्भ रहताहै, ।

११—आंवला, हड, वहेडा, मुनक्का, पीपरि, पुराना गुड इनको बराबर ले कूट पीस कपडछन कर पानी में पीस कपडे पर लेपकर तीन अंगूठा की मोटाई और आठ अँगुल की लंबी वत्ती बनाय ऋतु समय योंनि में रक्खै, जितने दिन ऋतु रहै उतने दिन रात दिन बत्ती बदल२ कर रक्खै तो गर्भाशय के दोष दूर होकर गर्भ धारण की शक्ति उत्पन्न होती है, और गर्भ रहता है, ।

मासिक धर्म की रुकावट—मासिक धर्म बन्द होजानें के अनेक कारण हैं, ऋतु बंद हो जानेका कारण जबतक भली भांति न जान लेवै तबतक

कोई औषधी न खाय, अत्यन्त गरम प्रकृति होने से रुधिर सूखकर ऋतु का होना बन्द होगया हो तो पुष्ट और रुधिर को बढाने वाली औषधियों को खाकर मासिक धर्म को खोलने का उपाय करै, ।

मासिक धर्म का खोलने का उपाय—एक महीना पर्यन्त ऋतु खोलने वाली औषधि का सेवन करै, परन्तु पहले प्रति दिन प्रातःसमय गरम जलसे भरे हुये कुंड में आध घंटा तक स्त्री बैठै नीचे का अंग जलमें डूबा रहे, कई वार गरम दूध पीवे तब नीचे लिखी औषधि सेवन करै, । माल कांगनी के बहुत कोमल पत्ते अग्नि में भून कर गुडहर के फूलों के साथ पीस लेवै और घरमें रक्खे हुये घडे के पानी के साथ पीवे तो मासिक धर्म रुका हुआ भी फिर खुलजाता है अर्थात् वह स्त्री रजावती होती है, । अथवा दूव और चावल बराबर लेके पीसै फिर पकाकर खाय तो नष्ट हुआ पुष्प (रज) फिर प्राप्त होता है, । अथवा तिलके वृक्षकी जडका काढा बनाकर उसमें ब्रह्मदंडी की जड, सोंठ, मिर्च, पीपरि, मुलहटी, इनका काढा मिलाकर पीवै. । अथवा भारंगी की छाल, तिल, सोंठ, मिर्च, पीपरि, इनका काढा बनाकर पीवै तो रक्त गुल्म रोग दूर

हो जाता है और नष्ट हुआ रज फिर खुलजाता है,

रज दोष परीक्षा—यदि मासिक धर्म ठीक समय पर न होता हो और गर्भाधान न होता हो तो रज में विकार समझना चाहिये, उसकी परीक्षा यह है कि एक कूंडा में सोया के बीज बोवै जब उगि आवें तब उसमें स्त्री पेशाव करै यदि वृक्ष मुरझाय जाय तो रज दोष सहित जानना, और जो न मुरझावै तो रज को दोष रहित जानना, रज में दोष हो तो उपाय करै ।

रज शोधक उपाय—नीमकी छाल, पुराना गुड़; दो दो तोला, सोंठ चार माशा; कुचलकर पावभर पानी में पकावै, तिहाई रहने पर उतार ले और छानकर पीवै तो रज साफ होने लगता है; ।

तथा—शतावर, असगन्ध पांच पांच तोला, बबूल का गोंद तीन तोला, सफेद इलायची, एक तोला, इनका वारीक चूर्ण बनाय तीन माशे से एक तोला तक बलानुसार सांझ सवेरे गाय के दूध के साथ सेवन करने से रज शुद्ध होजाता है, जब रज शुद्ध हो जाय तब गर्भाधान करै, । तथा बिनौरे दो तोला, पुराना गुड, तीन तोला औटा-कर पीने से बन्द हुआ मासिक धर्म खुलजाता है,।

तथा—मूर्वा, केशर, मुसव्वर तोला तोला भर लेके बारीक चूर्ण बनाकर पानी के साथ घोटकर चना बराबर गोलियां बनावै, सांझ सबेरे एक एक गोली पानी के साथ खाय तो सात दिनमें मासिक धर्म खुल जाता है। तथा—ऋतु के समय लौकी के बीज लेके गायके दूध से शिलपर पीसकर दूध में घोल मिश्री मिलाय पीने से अवश्य गर्भ धारण शक्ति होती है,। तथा दो तोला असगन्ध पावभर गाय के दूधमें पीसकर घोले उसमें एक तोला गाय का घी मिलाकर पकावै और शीतल कर ऋतु स्नान के अनन्तर पांच दिन पीने से बन्ध्या स्त्री भी गर्भ धारण करती है,।

काले बेंगन की जड़, असगन्ध एक एक छटाक, नागकेशर, विजयसारकी छाल आधी आधी छटाक आधसेर पानी में औटाय चौथाई रहने पर उतार ले और छानकर एक तोला पुराना गुड़ मिलाकर पीवै सात दिन पीनेसे मासिक धर्म खुलकर होताहै,

तथा—प्याज के बीज, पुदीना, काले तिल, बरा-बर पुराने गुड़ के साथ मिलाकर खाय और गरम पानी से उतारै, अथवा इन्द्रायन की जड़, कुचलकर लुगदी बनाकर योनि में रखने से मासिक

धर्म खुलजाता है, । तथा आंवले का स्वरस दो तोला शनावर का चूर्ण डेढ तोला, भारंगी का चूर्ण नौ माशा, गुर्च का सत नौ माशा, सबको मिलाकर तीन मात्रा करै एक एक मात्रा आधा आधा तोला शहद के साथ तीन बार दिनमें चाटै, इस प्रकार तीन दिन चाटने से मासिक धर्म खुल-कर होने लगता है, । तथा मुचकुन्द के फूल, पुराना गुड, आधा आधा तोला लेक सांझ सवेरे शहद के साथ चाटै तो मासिक धर्म का कष्ट दूर हो जाता है, । ओंगाकी जड चार माशेभर पीस-कर बत्ती बनाकर योनिमें रखने से एक ही दिनमें मासिक धर्म होने लगता है. । तथा कांटोंदार बास ब्रह्मदंडी का फूल. मोरफली की जड, हत्थाजोडी, कमलगट्टा की मींगी, नागेरि असगन्ध इन सब को दो दो माशे भर लेके पावभर पानी में पकावै छटाक भर रहजाने पर पीवै तो मासिक धर्म खुल-जाता है, ॥ अथवा बेल की छाल एक तोलाभर लेके पावभर पानी में काढा करै एक छटाक रह जाने पर उतार कर छाने और एक तोला पुराना गुड मिलाकर पीवै जो तीन दिन में रजो दर्शन न हो तो सात दिन पीवै, । अथवा कहरुआ एक

तोला, रूमी मस्तगी एक तोला, सफेद इलायची, बंश लोचन इन्द्र जो एक एक तोला. आम की कोंपल दो तोला, मिश्री चार तोला, इनका बारीक चूर्ण बनाले इसको पांचदिन सेवरे शाम चावलों के धोवन के साथ सेवन करने से कष्ट से होने वाले मासिक धर्म का कष्ट दूर हो जाता है और शुद्ध मासिक धर्म पूर्वकहोने लगताहै

गर्भवती रोग—गर्भवती स्त्री यदि असावधानी करती है और नियम से नहीं रहती तो रोगिणी हो जाती है गर्भिणी स्त्री की चिकित्सा करना सहज काम नहीं है, बहुत सोच समझ कर गर्भवती को औषधी देना चाहिये, किसी भी स्त्री की चिकित्सा करै और वह सौभाग्यवती हो तो अवश्य इस बात का ध्यान रक्खै कि यह गर्भवती तो नहीं है, गर्भवती होनेपर बहुत सोच समझ कर औषधी देवे, एकबार हमारे घर में स्त्री गर्भवती थी उसके पांव में फोड़ा निकला, डाक्टरने दश पन्द्रह दिन मरहम लगाकर जुलाब देना चाहा, हमने संकेत किया ऐसी दशा में जुलाब देना ठीक नहीं, डाक्टर ने कहा बहुत हलका जुलाब देदेंगे कुछ हानि नहीं होगी, यह कहकर हलका जुलाव दे दिया जुलाब देते ही

पेट में गडबडी मची। डाक्टर से कुछ भी उपाय न हो सका दूसरे दिन गर्भ गिर गया तात्पर्य यह कि गर्भवती स्त्री के लिये भूल करके भी कोई विरेचन औषधि नहीं देनी चाहिये। यदि गर्भवती के हृदय में शूल हो तो गोखरू डाभ कास अंडइन की जड को साफ करके दूधमें औटाकर छान ले और पिलावे तो हृदय शूल शान्त हो जाता है। २ यदि गर्भवती को ज्वर आने लगे तो अनन्तमूल पुहकरमूल लालचन्दन मुलहठी ये दो दो तोला ले के छै मासे बनावै एकमात्रा को पावभर जल में औटावै चौ... रहने पर छान ले और शकर अथवा शहत मिला पिलाने से गर्भवती का ज्वर शान्त हो जाता है ३तथा नीम पर की थोडी सी गिलोय बांटकर दू... में मिलाकर मिश्री डालकर पिलावै ।४अथवा कासन... की जड दशमासे घोट छानकर पिलावे ।५अथवा लालचन्दन महुआ किसमिस गौरीसर मुलहठी नेत्रवाला धनियां खस मिश्री इनको बराबर लेके पावभर पानी में औटाय छटाकभर रहने पर पिलावै तो सात दिनमें गर्भवती का ज्वर दूर हो जाता है। ६यदि शीतलगकर ज्वर आता हो तो चाय बनाकर उसमें दो तोला गुलकन्द डालकर पिलावै ७अथवा

ला लावै। तोला बन्द बने गहू पर

तोलाभर बादाम का तेल पावभर गरम दूध में डाल कर पिलावे। ८ अथवा अंडी का निर्मल तेल एक तोलाभर ले के गरम दूध में डालकर पिलावे तो गर्भवती का ज्वर शांत होजाता है, । ९ यदि गर्भवती को दस्त आने लगें तो आंवले का मुरब्बा खिलावे अथवा दही चांवल और साबूदाना खिलावे,।१० अथवा आम और जामुन का काढा पिलावे और सत्तू खिलावे तो दस्तों का आना बन्द हो जाता है, । ११—यदि गर्भवती का मूत्र रुक गया हो तो कासनी का अर्क और मकोइ का अर्क मिलाकर पिलावे, । १२ अथवा दूब की जड, डाभ, और इनको दूध में औटाय छानकर पिलावे तो गर्भवती का मूत्र उतरता है, । १३ यदि गर्भवती का लेस बहता हो तो फटकरी, गुलनार धायके फूल इनको बराबर लेके पीसे और एक तोलाभर लेके एक सेर बासी पानी में मिलाकर पिचकारी लेवे, तो लेसका आना ही बंद हो जाता है, ॥ १४ यदि गर्भवती को वमन होने लगे तो कलशिया और कपूर को पीसकर मूंग के बराबर गोलियां बनावे एक एक गोली वमन होने से पहले और पीछे खिलावे, । १५ अथवा बडकी जटा की

भस्म को शहत में मिलाकर चटावै तो वमन होना बन्द होजाता है,। १६ यदि गर्भवती का कोष्ट वृद्ध होजाय तो दो तोला गुलकन्द खिलाकर ऊपर से पावभर दूध पिलावै,। १७ अथवा बादाम का रोगन दूध के साथ देवै, तो कोष्ठ वृद्ध अच्छा हो जाता है,॥ १८ यदि गर्भवती को खांसी आने लगे तो प्यास लगने पर कच्चा जल न देवै अर्क गावजवां पीने को देवै तो खांसी जाय,। १९यदि गर्भवती के हृदय में धडकन हो तो दो तोला आंवले का मुरब्बा सोने के वर्क लपेट कर खिलावै,। २० अथवा तीन तोला सेव का मुरब्बा सात तोला अर्क बेद मुश्क मिलाकर खिलाने से धडकन बन्द हो जाती है,। २१ यदि गर्भवती का शिर दुखने लगै तो सफेद चन्दन, कपूर दो दो माशा, काहू दो तोला लेके गुलावजल में घिसकर मस्तक पर लेप करै तो शिर पीडा शान्त हो जावै,। २२यदि आधा शीशी हो अर्थात् आधा शिर दुखने लगै तो हलका भोजन करै. जिससे भूख बनी रहे पेट हलका रहै, जलेबी और दूध धीरे धीरे देर में खावैं, अथवा बकरी के कच्चे दूधमें मिश्री मिलाय बासी रोटी भींजकर सवेरा होते ही देर तक खाय तो

आधाशीशी जाय, ॥ २३ यदि गर्भवती को मूर्च्छा हो तो वस्त्र ढीले कर देवै और चूना नोसादर बराबर लेके जलके साथ शीशी में मिलाकर सुंघावै और मुखपर गुलाब का छींटा देवै, तो मूर्च्छा जाय, ॥ २४ यदि गर्भवती को नींद न आती हो तो भांग के बीजों को भैंस के दूध में पीसकर रात को सोते समय पांवके तलुओं पर लेप करै और शिरपर बादाम का तेल मलै, कद्दू और कुलफा की भाजी खाय । २५ यदि गर्भवती के कुच दुखने लगै तो गरम पानी में चमेली का तेल मिलाकर कुचों पर मलने से कुचों का दुखना बन्द होजाता है, ॥ २६ यदि गर्भवती के दांत दुखने लगैं तो अदरख छीलकर उसपर लवण लगाय गरम करके खिलावै तो दांतों की पीड़ा शान्त होजाती है, । २७ यदि गर्भवती के बहुत थूक आता हो तो कीकरकी छाल उबाल कर उसमें थोड़ी फटकरी पीसकर मिलावै और कुल्ली करै, गरम वस्तु मसाला आदि न खाय तो बहुत थूक आना बन्द हो जाता है, ।

गर्भ स्राव यत्न—गर्भ स्थिति से चार महीनेतक यदि किसी प्रकार का गड़बड़ हो जाय और गर्भ

गिरजाय तो उसको गर्भ स्राव कहते हैं, जिस प्रकार चोट लगने से अथवा आंधी आदि के झकोरें से वृक्षों में कच्चा फल टूटकर गिरजाता है, इसी प्रकार बिषय भोजन करने अथवा चोट लगने से बिना समय गर्भ गिरजाता है. । नागर मोथा इन्द्र जौ, मोचरस, अतीस, सुगन्ध बाला छै छै माशे भर लेके कुचलै और पावभर पानी में औटावै जब चौथाई रह जाय तब छानकर शीतल हो जानेपर पिलावैइस काढासे चलित गर्भ,गर्भ पीडा और प्रदर रोग शान्त होजाता है. ।

गर्भ पात यत्न—यदि पांच महीनें से गर्भ में किसी प्रकार का गडबड हो जाय तो उसको गर्भ पात कहते हैं, पांचवें महीने में यदि गर्भ स्थबालक नहिं लै डुलै तो जानना चाहिये कि पेटमें बालक मरगया है. ऐसी दशा में गर्भपात हो जाना अच्छा है, और जो गर्भ पात का लक्षण जान पडै अर्थात् गर्भस्थ बालक हिलता डुलता हो और गर्भवती की पींठ में पीडा होने लगै, देह में निर्बलता और आलस्य आजाय, मनमें व्याकुलता हो, वमन आने का भ्रम हो तो गर्भवती को अच्छे कोमल बिछौने पर करवट के बल लिटा देवै, और

बहुत ठंडे पानी में कपडा भिगोकर पेडू से नीचे तक रक्खे फिर आधसेर शीतल जलमें तीन तोला फिटकरी पीसकर मिलावे और उसमें महीन कपडा भिगोकर योनि में ऊपर तक रक्खे उस समय गर्भवती को उठने बैठने नहीं देवै, और बहुत हलका भोजन देवै पीने को ठंढा पानी देवै, गरम वस्तु कोई भी नहीं देवै, तो गर्भ पात नहीं होता है, ।
तथा यदि दुष्ट पवन से गर्भ टेढा होकर अनेक प्रकार से योनि के मुखपर आकर अडजाता है. कोई उदर से कोई मस्तक से, कोई दोनों हाथों से, कोई एक हाथसे, कोई नीचा मुख होकर: कोई तिरछा होकर, कोई पसलियों को टेढाकरके योनि द्वार को रोक लेता है ऐसे मरे हुए विकारी गर्भ को गिराने के लिये लाल चीते की जड और नागदौन की जड को जलमें पीसकर पिलाना चाहिये, बहुत दिनों का अथवा थोडे दिनोंका मरा हुआ विकारी गर्भ पतित हो जाता है, और उस स्त्री का प्राण बच जाता है, ।

गर्भ रक्षा—बरियरा, कुमुदकी जड, शहत, घी गायका दूध, शक्कर इन सबको पकाकर पंखे की हवासे ठंढा करके सात दिन खाय तो वायु दोष,

त्रिदोष, वमन, सूजन, गर्भ स्राव और सब प्रकार की गर्भ वेदना दूर हो जाती है, । नील कमल की जड काले तिल शहत, शक्कर, इनको सेवन करने से गिरता हुआ गर्भ रुक जाता है, ! तथा इन्द्र जौ, अतीस सुगन्ध बाला, मोचरस, मोथा इनका काढा बनाकर दूध और मिश्री मिलाय गर्भवती स्त्री पीवै तो प्रदर रोग और कुक्षि रोग के सब दोष दूर हो जाते हैं, । तथा मोथा जीरा, सिंघाडा, कसेरू, शतावरी, एरंड, इनको गाय के दूध में पकाकर शकर मिलाय खाने से गर्भ स्थिर रहता है, ॥ तथा गर्भवती स्त्री का गर्भ सूखजाने पर उसको शान्त और स्थिर करने के निमित्त मुलहटी और गाम्भारि (कंभारि) के फलका चूर्ण बराबर लेके गायके दूधके साथ पीवे, तथा गायके दूधमें शकर मिलाकर पीना चाहिये, । १. गर्भवती स्त्री के यदि पहले महीने में शूल हो तो नील कमल, नागकेशर, लोध, मुलहटी, लाल चन्दन, कसेरू, सिंघाडे, इनको छे छै माशे लेके बारीक चूर्ण बनाय प्रातः समय गायके दूध के साथ पीवै, । २ दूसरे महीने में यदि गर्भ शूल हो तो कपूर, केशर, तगर बेलगिरि को दूध में पीसकर दूध के साथ पीवे, अथवा

जीरा, खजूर, फसेरू, बेलपत्र, सिंघाडे, इनको ठंढे पानी में पीस दूधके साथ पावै तो गर्भ स्थिर रहता है । ३ यदि तीसरे महीने में गर्भ शूल हो तो तगर, सफेद चन्दन खस पद्माख,इनको छै छै माशे भर लेके ठंढे पानी से पीसकर बकरी के दूधके साथ पीवै, ४ यदि चौथे महीने में गर्भ शूल हो तो अनारदाना, केले के पत्ते, केले की जड़, मुनक्का, सिंघाड़े, इनको ठंढे पानी में पीस बकरी के दूध में छानकर पीने से गर्भ पीडा शान्त हो जाती है, । ५ यदि पांचवें महीने में गर्भ पीडा हो तो कमल गट्टे की गिरी, कमल की नाल, कुमद के फूल, नागकेशर, इनको गाय के दूध में पीसकर पीवै. । ६ यदि छटे महीने में गर्भ पीडा हो तो सफेद इलायची, बालछड़, किशमिस, मुनक्का, नागकेशर कमलगट्टा की गिरी, इनको शीतल जलमें पीस कर बकरी के दूध के साथ पीवै, । ७ यदि सातवें महीने में गर्भ पीडा हो तो कमल की नाल और शतावर को गाय के दूध में पीस कर दूध ही के साथ पीवै, । अथवा कैथ का फल, इन्द्र जौ, धान की खील, शालमामिश्री को बकरी के दूध में पीस बकरी के दूध के साथ पीवै, । ८ यदि आठवें महीने

में गर्भ पीडा हो तो कमल गट्टा की गिरी, पद्माख, कमल फूल, गज पीपरि, धनियां इनको शीतल जल में पीस दूध में मिलाकर पीवै तो गर्भ सुरक्षित रहता है ॥ ६ यदि नवें महीने में गर्भ पीडा हो तो वायविडंग सपेद इलायची, गज पीपरि, सपेद जीरा इनको बकरी के दूध में पीस कर बकरी के दूध के साथ पीवै परन्तु नवें महीने में प्रायः स्त्रियां बालक जनती हैं, यह ध्यान रहै ॥ १० यदि दशवेंमहीने में गर्भ पीडा हो तो कमल गट्टा, मुलहटीकमलकाफूल, पद्माखमिश्रीवनकाठंडेपानीमें पीस दूधके साथपीवै वैद्य ११ यदि ग्यारहवें महीने में गर्भ वेदना होतो खस, चन्दन, सिंघाडा, मजीठ, गुर्च, कसेरू, इनकी फंकी दूध के साथ सेवन करने से भर्ग सुरक्षित रहता है । १२ यदि बारहवें महीने में गर्भ पीडा होतो नील कमल का फूल, कमल गट्टा, कमल की दंडी, सिंघाडे इनको पानी में पीस गाय के दूध के साथ पीवै तो गर्भ पीडा शान्त होती है, नवें महीने के अन्त में और दशवें महीने के आदि में सब ही स्त्रियां गर्भ जननी हैं, परन्तु एक वर्ष तक गर्भ धारण का प्रमाण है, ॥

गर्भ भ्रम—कभी गर्भ न होने पर भी गर्भ के

लक्षण जान पडते हैं, अधिक बादी पदार्थ खाने, घर का काम आलस्य के कारण न करनेसे गर्भाशय फूलजाने पर भीतर मांस का लोथडासाहोजाताहै,उसके बढ जाने पर रज बन्द हो जाता है, तो यह भ्रम होता है कि यह स्त्री गर्भवती है, परन्तु पांचवें महीने में यदि गर्भ न फडके और भूख कमती हो जाय, नाडी दूनी फडकने लगै, प्रसन्नता जाती रहे, तो जानना कि मिथ्या गर्भ है । प्रातः समय कुये से जल लाते ही उसमें दो तोला शहद मिलाय स्त्री को पिलावै जो पीते ही पीडा होने लगै तो गर्भ जानना चाहिये, और यदि पीडा न हो तो रज दोष जानना चाहिये, इस को दूर करने के लिये छै सात दस्त कराना चाहिये. और रज दोष नाशक तथा वात बिकार नाशक औषधि देना चाहिये, अवधि बीत जाने पर मिथ्या गर्भ का मांस पिंड स्वयं मेव गिर जाता है, ॥

प्रसव दोष निवारण—जो बालक उत्पन्न होने के समय गर्भवती को अधिक पीडा हो, और बालक जनने में कठिनता हो तो सफेद गंदा पुरैना की जड का चूर्ण बनाय योनि के भीतर रक्खै तो सुख पूर्वक बालक होवै । अथवा दश मूल का काढा सैंधा और घी मिलाकर पीने से गर्भवती स्त्री सुख

बच्चा जनती है,। अथवा मदार का फूल घुंघुची और आधी सुपारी जल के साथ पीसकर पीवै तो स्त्री सुख से बच्चा जनती है,।

ॐ मन्मथ मन्मथ वाहि निलम्बोदर मुंच मुंच स्वाहा, इस मंत्र से मनुष्य पवित्रता पूर्वक जल लगाकर गरम करै और गर्भवती को पिलावे,, अथवा एक हाथ से भरा हुआ जल इस मंत्र से अभि मंत्रित कर पिलाने को देते हैं, गायत्री मंत्र से जल को अभिमंत्रित कर के पिलाने को दिया जाता है, कोई कोई 'अस्ति गोदाव रीति रे जम्भलाना भराक्षसी। तस्याः स्मरण मात्रेण विशल्या गर्भिणीभवत्' इस मंत्र से जल को अभिमंत्रित कर देते हैं, चक्रव्यूह यंत्र भी दिखाया जाता है।

प्रसूतिका रोग निवारण यत्न—बालक उत्पन्न होने के उपरान्त गर्भाशय में मल रह जाने से प्रायः प्रसूतिका स्त्री को ज्वर आने लगता है, सो यदि प्रसूतिका को ज्वर आने लगै तो आंवला हड़, बहेड़े के काढा को भले प्रकार छान कर इसकी पिचकारी लगाकर गर्भाशय को शुद्ध करै, और सोंठ १ तोला, मिर्च २ तोला, पीपरि ३ तोला, हरा नीला थोथा २ तोला इनके चूर्ण को संभालू

के पत्तों के रस में खरल कर चने के बराबर गोलियां बनावे, प्रातः समय १ गोली गाय के दूध के साथ खाय तो प्रसूतिका ज्वर शान्त हो जाता है, ।

यदि दूध उतरने के कारण ज्वर आने लगे तो दूध को निकलवा देवे, अथवा किसी दूसरे बालक को पिला देवे, और रोगन गुलके बाबूना को खरल कर स्तनों पर लेप करै, अथवा बादाम का तेल जल में मिलाकर पिलावे, जिससे दस्त आकर पेट शुद्ध हो जाता है और स्तनों का तनाव ढीला होकर ज्वर उतर जाता है. । यदि प्रसूतिका स्त्री के दूध कमती हो तो प्रसूतिका को चाहिये कि सोंठ न खाय, मक्खन और दूध अधिक खाय, । पेठा के बीज, मूली के बीज, गाजर के बीज, सलगम के बीज, पोस्त, तालमखाना, मुंडी को बराबर लेके चूर्ण करै नौ माशे चूर्ण की फंकी प्रातः समय लेके ऊपर से दूध पीवे, अथवा जैतून का तेल कुचों पर मलै, । यदि प्रसूतिका का दूध शुद्ध न हो तो दूध को शुद्ध करै. । बुरे दूध की पहचान यह है कि यदि दूध का स्वाद कषैला हो और जल में डालने से ऊपर तैरै तो बात दोष वाला जानना, । और यदि कडुआ, खट्टा अथवा निम्-

कीन हो और जल में डालने से पीली धारियां देख पड़ें तो पित्त दोष वाला जानना, और यदि लसदार गाढा हो और जल में डालने से डूबजाय तो कफ दोष वाला जानना, दोष वाला दूध बालक को नहीं पिलाना चाहिये, । यदि दूध स्वाद हो, पीलाई लिये हो, जल में डालने से मिलजाय तो उस दूधको शुद्ध जानना चाहिये, । प्रसूतिका स्त्री को उचित है कि पथ्य से रहै, तौ दूध बिकारी नहीं होता है, दूध को शुद्ध करने के लिये बबूल का गोंद घी में भूनै और घी में भुनी हुई मेवा के साथ शक्कर की चासनी में कतरी बनाकर खाय, । गेंहू की रोटी, पुराने चावलों का भात, मूंग की दाल खाय, । यदि दूध बहुत बढ गया हो तो मसूर, जीरा, काहू के बीज, सिरके में पीस कर छातियों पर लेप करै तो दूध कम हो जाता है, ।० यदि प्रसूतिका स्त्री को कफ युक्त खांसी हो तो एक तोला पीपरि कपड़े में लपेट मूसल में घंटा भर कूट हाथों से मल कर दाने निकाल लेवै और भुना सुहागा एक तोला, कुलंजन एक तोला काली मिर्च एक तोला, अकरकरा छै माशे इन सब को पीसकर घी ग्वार के गूदे में आठ पहर

खरल कर मटर के बराबर गोली बनावे और सुखा कर रख छोडे, और एक प्रहर उपरान्त एक एक गोली मुख में रख कर चूसे। यदि सूखी खांसी हो तो खूबकलाँ बिहीदाना, उनाब, छिली हुई मुलहटी, जूफा, ये तीन तीन माशा, बनफशा छै माशा लेके आध सेर पानी में औटावै, जब छटाक भर रहजाय तब छान कर दो तोला अच्छा शहद मिलाकर पिलावै,।

यदि प्रसूतिका को जुखाम हो तो मुलहटी बिही दाना तीन तीन माशा बनफसा गावजबां छै छै माशा, पावभर पानी में औटाय छटाक भर रहजाने पर एक तोला मिश्री मिलाकर पिलावे,। यदि पेट में पीडा हो तो पिपरमेंट तीन बूंद दो तोला पानी में मिलाकर पिलावै,। अथवा सौंफ, गुलाबफूल, बनफशा, छै छै माशा भर लेके जलमें औटाय छानकर मिश्री मिलाकर पीवे, यदि बवासीर होगई हो तो जिमीकन्द पाक बनाकर खिलावे और ऊपर से गाय का दूध पिलावै, भोजन करने उपरान्त बादाम और मुनक्का खिलाकर दूध पिलावे, और मस्सोंपर रसौत, कत्था और अफीम को महीन पीसकर मलै तो बवासीर रोग शान्त हो जाता है,

इसी प्रकार प्रसूतिका को जो रोग हो उसका उपाय कर लेना चाहिये, ॥

सौभाग्य सुन्दर पाक—तेजपात, चीता, चव, जावित्री, पिपलामूल, स्याह जीरा, एक एक तोला, सौंफ विधारा सवा सवा तोला, सोंठ धनियां, अक-रकरा, सफेद जीरा, नागकेशर, कमलगट्टा की गिरी डेढ २ तोला, सफेद इलायची, वरियरा की जड, त्रिफला दो दो तोला लेके सबको अलग अलग पीसकर रक्खै, फिर बकरी के पांच सेर दूध को कडाही में आंचपर चढाकर अघौटा करै परन्तु मन्द मन्द आंच देवै, अघौटा हो जाने पर सोंठ के बारीक चूर्ण को उसमें डालै जब खोया बनजाय तब आंचपर से उतार ले, और दूसरी कडाही में गाय का एक पाव घी डालकर मन्द आंच से उस में खोवा को भून कर लाल करै अनन्तर ढाई सेर शकर की चासनी बनाकर पिसी हुई सब औष-धियों को खोवा सहित चासनी में छोडै औरबादाम पिस्ता, चिरोंजी कतर कर उस में डालै, फिर उतार कर आधी आधी छटाक के लड्डू बना लेवै, प्राति दिन प्रातः समय एक लड्डू खाकर ऊपर से पाव भर दूध में मिश्री मिलाकर पीवै जो एक लड्डू

चल से अधिक हो, अर्थात् कब्ज करै तो आधा लड्डू खाय और ऊपर से दूध पीवै दूध गाय का होना चाहिये, यह सौभाग्य सुन्दर पाक रोगवाली और बिना रोगवाली सब ही स्त्रियों के लिये गुण कारी है। इस पाक के सेवन से पांडु रोग, क्षयी रोग, मूलका कम हो जाना, खांसी, रक्त गुल्म, मस्तिष्ककी निर्बलता, नेत्रों की कमजोरी, कटिपीडा हृदय की धडकन, चक्कर आना, प्रदर रोग सोम, रोग आदि अनेक रोग दूर होजाते हैं और चित्त प्रसन्न रहता है।

दो०—नारायण धरिध्यान उर, सीताराम सुधार।
लिखि नारी रोगोपची, क्रिया पूर्ण अधिकार॥

इति श्री बृहद्यमराज महोदधौ द्वितीय भागे नारी रोग चिकित्सा वर्णनो नाम द्वितीयाधिकारः ॥२

अथ बालरोग चिकित्साऽधिकारः

दो०—सुश्रुतादि मुनिमत निरखि, धन्वन्तरिपदध्याय
बाल रोग औषधि कछुक, लिखत सुअवसरपाय

बाल रोग—बालकों के रोग का जानना कठिन है, जो बालक बोल नहीं सकते और संकेत द्वारा कुछ बतला नहीं सकते उनका रोग कैसे जाना जा सकता है, परन्तु बुद्धिवान् जनों ने बालकों से

संकेत से बालकों के रोग को जानने के उपाय अनुमान से लिखे हैं, सो उनका अनुमान ठीक है; जगत् में कोई ऐसी बात नहीं है जो बुद्धि से जानी न जा सके, बुद्धि से सबही कुछ जान लिया जाता है, प्रथम तो बालकों के नवग्रह ही जुदे होते हैं, जो इन सूर्य आदि नवग्रहों से भिन्न है, जो स्त्रियां अपवित्र रहती हैं और अपने बालको को अपवित्र रखती हैं उनके बालकों को बालकों के नवग्रह पीड़ित करते हैं. बालकों का मन बहुत ही कोमल होता है; थोडी भी अपवित्रता और दुर्गन्ध उनको हानि कारक होती है, जहां तक हो सके दुर्गन्ध और अपवित्रता से बालकों को बचावें बालकों के जो नवग्रह पृथक् हैं उनके नाम ये हैं, १ स्कंद, २ स्कन्दापस्मार, शकुनि, रेवती, पूतना. गन्ध पूतना, मुख मंडिका, शीतपूतना, नैगमेय, इन नवग्रहों का लक्षण पृथक पृथक रावणकृत कुमार तंत्र में लिखा है, विस्तार भय से यहां लिखना उचित नहीं समझा, इस ग्रन्थमें तो बालकों के रोगों की कुछ औषधियां लिखेंगे. । दुर्गन्ध और अपवित्रता से बालकों को अनेक रोग होते हैं, इस कारण पहले ही से सूतिका स्थान में अपवि-

त्रता न होने देवे, दुर्गन्ध न होने पावै, वायुका प्रवेश रहे, और वायु का निकास भी रहे, सरदी न पहुंचने पावै, नालको सावधानी से काटे, वहां किसी प्रकार की मैली वस्तु न रहने दे, स्थान में सुगन्धित पदार्थों की धूनी देवै, आंच बनी रहे, इन सब बातों से सावधानता रक्खे, धात्री शिक्षामें अनेक प्रकार की शिक्षायें लिखी होती हैं, वह विद्याही निराली है, ।

जिस बालक का दस्त पतला हो. पीलेरंग का न हो, दस्त में दुर्गन्ध हो तो बालक के पेट में विकार जानना चाहिये. यदि दस्त थोड़ा उतरै और सूखासा हो और दस्त होने के समय बहुत बल करता हो तो दूध पचने में बाधा जाने, एवं यदि बालक सहसा उबकानें लगै तोभी पेट में विकार जानना. यदि बालक अपनी मूत्रेन्द्रिय को छूये और बारबार खींचे सोते समय दांत किट किटावे बारबार नाक और गुदा को छुये तो पेट में चुन चुने जानना, यदि बलक का मूत्र लाल रंग का हो तो शरीर सम्बन्धी विकार जानना, । इसी प्रकार अनुमान से जिस अंग को बार बार छुये उसी अंग में विकार जानना चाहिये, परमात्मा ने सबकी

रक्षा का पूर्ण प्रबन्ध कर रक्खा है, पशु पक्षियों को देख कर परमात्मा के प्रबन्ध का अनुमान कर लेना चाहिये, देखो शीत उष्ण देश के अनुसार उनके शरीर में त्वचा, केश और पंख दिये हैं, बच्चों की पालना करने के लिये उनमें मोह उत्पन्न किया, जिस प्रकार पशु पक्षियों का प्रबन्ध परमात्मा ने किया उसी प्रकार मनुष्यों को उत्तम बुद्धि दी, और उनके सुखके निमित्त अन्न जल, औषधी और पवन आदि सुख मय सामग्रियों का विस्तार किया, तो भी जो मनुष्य अपनी बुद्धि से उचित अनुचित विचार कर ठीक प्रबन्ध करने में आलस्य करते हैं, और परमेश्वर को दोष देने लगते हैं, उन को वारम्वार धिक्कार है, । बालक की रक्षा माता पिता के आधीन है, इस कारण माता पिता को उचित है कि बालक की रक्षा का पूर्ण प्रबन्ध करते रहें, । आगे तंत्र-मतसे बाल रक्षा लिखते हैं।

प्रथमदिने बाल रक्षा—पहले दिन बालक को नँदिनी नाम वाली देवी ग्रहण करती है, उसका लक्षण यह है कि पहले ज्वर चढता है, सूजन सी जान पडती है, पसीना आता है बालक दूध नहीं पीता, वमन और मूर्च्छा आती है, शरीर कांपना

है, धीरे धीरे श्वांस लेता है, नँदिनी के छोड़ने की विधि यह है कि नदी अथवा सरोवर के दोनों किनारों की मिट्टी लाकर मूर्ति बनावे और चावल आदि सफेद चन्दन, फूल, पाच ध्वजा पांच रुधि-या, पांच दीपक से पूजा करे पहर दिन चढे पूर्व दिशा में जाकर एकाँत में मूर्ति को स्थापित कर पूजन करे, । और सरसों, धूप, राई, शिव निर्माल्य फूल, घी, बिल्ली के बाल, मनुष्य के बाल, इनकी धूप बनाकर बालक को तीन दिन देवै, चौथे दिन अभिमंत्रत जलसे बालक को स्नान करावे, फिर ब्राह्मण अथवा भिक्षुक को दूध पिलावे, स्नान, पूजन मार्जन और बलिदान का मंत्र यह है; मंत्र' ओ३म् ह्रीं खं खः स्वाहा, ॥१॥

द्वितीय दिन बाल रक्षा—दूसरे दिन सुनन्दना नामवाली देवी बालक को पकड़ती है, जिससे पहले ज्वर आता है, बालक हाथ पांव सिकोड़ता है, श्वास लेता है, मुंह चलाता है आंखें बन्द कर लेता है दूध नहीं पीता, बहुत रोताहै, वमन करता, बारम्बार डरजाता है विधि यह है, सेरभर चावलों के चूर्णका पुतला बनाकर तरह ध्वजा, १२ दीपक रोटी, भात, सरसों, मांस उड़द, तिल इन करके

संध्या समय पूर्व दिशा में जाकर पहले दिनके मंत्र से पूजन करै, वही धूप देवै दूध पिलावै, ।

तृतीय दिने बाल रक्षा—तीसरे दिन घंगाली नाम देवी बालक को पकडती है, जिससे बालक कांपने लगता है, डरता है, खांसता है, रोता है, श्वास बहुत लेता है. उसके छोडने की विधि यह है कि नदी के दोनों किनारों की मिट्टी लाकर मूर्ति बनाकर सायंकाल में नैऋत्य कोण में जाकर फूल, धूप, बड़े, मालपुये, भात, गुड, दही, चार रंग की ध्वजा, चार दीपक, चन्दन, अक्षत, इन करके पूजा और बलि प्रदान करै, मंत्र। ओंनमो भगवते रावणाय मुंच मुंच स्वाहा इस मन्त्र से पूजा करै, और हाथीदांत, गौका दांत, घुसियारी इनको बकरी के दूध में पीसकर बालक के लेप करै और सरसों, राई, नीम की पत्ती की धूनी देवै.।

चतुर्थ दिने बाल रक्षा—चौथे दिन कटकोली नामा देवी बालक को पकडती है, जिससे बालक चारों ओर देखता है, डकार आती है मुख से फेन आता है, दूध नहीं पीता, रोता है, उसके छोडने के लिये पहले दिनमें कही विधिके अनुसार बलि देवै और पूजन करै, हाथीदांत, सांप

की केंचुली, राई इनको पीसकर लेप करै, नीम के पत्ते, सरसों, मनुष्य के बाल इनकी धूनी देवै।

पंचम दिने बाल रक्षा—पाँचवें दिन अहंकारी नामा देवी बालक को पकडती है तब बालक श्वास बहुत लेताहै,बार२ जंभाई लेताहै मुट्ठी बांधता है,ऊपर को देखता है, उसके छोडने के लिये पहले दिनमें कही हुई विधि के अनुसार पूजा करै बलि देवै, मैनशिल, हरताल, लोध, बच, मेंढा सिंगी, इनको पीसकर लेप करै, लहसन, नीमके पत्त, सरसों और घी की धूप बालक को देवै।

षष्ट दिने बाल रक्षा—छटे दिन बालक को खट्वांगी नामा देवी पकडती है, तब बालक उचकता है रोता है, कभी हंसता सा है इसके छोडने की विधि तीसरे दिन में कही हुई विधिके अनुसार पूजा करै बलि देवै, हाथी दाँत, सरसों, कूट, गूगल, इनको पीस घीमें मिलाकर लेप करै अथवा धूनी देवै,

सप्तम दिने, बाल रक्षा—सातवें दिन सिंहिका नामा देवी बालक को पकडती है, तब बालक श्वास बहुत लेता है, मुट्ठी बांधता है, जंभाई लेता है, उसके छोडने के लिये पहले महीने में कहे अनुसार विधि से पूजा करै और बच, लोध, हरताल

मनशिल, मेढासिंगी, इनको जलमें बारीक पीसकर लेप करै, ।

अष्टमदिने बाल रक्षा—आठवें दिन भीषण नामा देवी बालक को पकडती है, तब बालक शरीर को सिकोडता है, श्वास अधिक लेता है, खांसता है, इसको छोडने के लिये पहले महीने में कहे अनुसार विधि को करै, और ओंगा, खस, पीपरि, चीता, इनको बकरी के मूत्र में पीसकर लेप करै, गौका सींग, केशर, नख इनकी धूनी देवै, ।

नवम दिने बाल रक्षा—नवे दिन मेषा नामा देवी वालक को पकडती है तब बालक दोनों मुट्ठी बांधकर मुंह में देता है, डरता है, कांपता है, इसके छोडने के लिये तीसरे महीने की विधि के अनुसार पूजा करै, और कूट चन्दन, राई, सरसों, बच इनको जलमें पीसकर वालक के लेप करै और वानर के वाल तथा नखकी धूनी देवै, ।

दशवें दिने वाल रक्षा—दशवेंदिन रोदना नामा देवी बालक को पकडती है, तव वालक रोता है, खांसता है, दोनों मुट्ठी वांधता है, उसके छोडने के लिये पहले महीने में कहे अनुसार पूजन और बालिदान करै, पहले महीने के मंत्र से एक सौ

आठ बार मार्जन करे, मिर्च, राल, सरसों, कूट इनको पीसकर लेप करे, नीम के पत्तों की धूनी देवे, । मांस, मछली, मदिरा का बलि रात को देवे । ओंगा के अंकुर, चन्दन, खस का काढ़ा बनाकर उस जल से बालक को छिड़काय देवे । दश दिन के उपरान्त पहले महीने से वा छ महीने तक बारह दशी, और पहले वर्ष से सोलह वर्ष तक सोलह पूतना बालक को पीड़ा पहुंचाने वाली हैं उनका लक्षण पृथक पृथक है, उनके पूजन और बलि देने को भी कही है सो अपने पंडित से पूछकर पूजनादि करना चाहिये ।

जनार्दनी धूप—चन्दन १ तोला, केशर १ तोला, तगर २ तोला, अगर २ तोला, कस्तूरी १ रत्ती, अंबर २ रत्ती, प्रियंगु १ तोला, शिलाजीत का पतला, रस २ तोला, लोबान १ तोला, कंकोल और लौंग ६।६ माशा, नख १ तोला, कूट २ तोला, काला अगर १ तोला, गुड़ १ तोला, नागर मोथा छै माशा, लोबान १ तोला, जायफल छै माशा, प्रियंगु न मिलै तो मालकांगनी लेना, इन में से कस्तूरी और शिला रसको छोड़ बाकी सब को पीसकर कपड़े से छान कर बारीक चूर्ण बनावै,

और शिला रसमें कस्तूरी मिलाकर चूर्ण को सान देवे, अनन्तर बांसकी छड़े चावा में भिगाकर उनमें यह मसाला लगाय छाया में सुखावे, इन बत्तियों को पूजन के समय अथवा घरमें प्रातः काल सायं काल जलाने से दुर्गन्धित वायु दूर होती है।

जनार्दनी धूप—शिला रस को छोड़कर बाकी वस्तुओं को घी में मिलाने से यही जनार्दनी धूप है, दो तोला देवदारु कूटकर और मिला देवे।

माहेश्वरी बत्ती—अगर, देवदारु, नख, लोबान एक एक छटाक शकर चोबचीनी आधी आधी छटाक, मालकांगनी, ब्राह्मी १॥ तोला, छंबर छै माशा, मलयागिरि, चन्दन, काला अगर, कस्तूरी तीन तीन माशे, इनका बारीक चूर्ण बनाय आध पाव अच्छे शहत में सानकर बांसकी पतली छड़ों में लपेट कर सुखा लेवे यह बत्ती जलाने से दुर्गन्धित वायु दूर हो जाती है।

माहेश्वरी धूप—शहत को छोड़कर बाकी सब वस्तुओं को कूटकर घी में मिलादेने से माहेश्वरी धूप हो जाती है, जनार्दनी और माहेश्वरी धूपकी धूनी से भूतादि बाधा दूर हो जाती है।

अगर बत्ती—छीला अगर, चोब चीनी, ब्राह्मी,

आधी आधी छटाक, जटामासी, नख एक एक छटाक. शिलारस, लोबान, नागरमोथा, शहत, गुलाबकली तीन तीन माशा, खस छै माशा, सबका बारीक चूर्ण कर सिलारस और शहत में सानकर बांसकी पतली छडों में लपेट कर छाया में सुखावे, इस अगरबत्ती के जलाने से दुर्गन्धित वायु दूर हो जावे है, ।

बाल रोगोत्पत्ति कारण—बालक के लिये माता के दूध से बढकर और कोई वस्तु नहीं है, यद्यपि बालक के जन्म होनेपर पहले थोडा ही दूध उतरताहै तथापि बालक के लिये उतना ही बहुत है, दो तीन दिन बालक को भूख से अधिक प्यास होती है, तब यदि औटा हुआ जल एक दो बार थोडा सा देदिया जाय, तो कुछ हानि नहीं परन्तु प्रायः ऐसा देखा जाता है कि बालक के पेट को साफ करने की घुटी पहले दी जाती है, रेडी का तेलशहतमें चटायाजाताहै इनके देने कीकोईआवश्यकता नहीं, । परमात्मा ने माता के दूध ही में बालक की सब आवश्यकताओं का प्रबन्ध कर प्रबन्ध कर दिया है दूध पिलाने से बालक और माता दोनों का लाभ है, । पूर्व समय में घरकी

बड़ी बूढ़ी बालक के साधारण रोगकी चिकित्सा करलेती थी, जब से स्त्रियों में आलस्य आगया और अपने कर्तव्य को स्त्रियों ने छोड़ दिया तब से घर घर बालक प्रायः रोगी ही रहा करते हैं, इसी से निर्बल होजाते हैं बालकों के रोगोत्पत्ति का मुख्य कारण यही है कि उनकी मातायें अशिक्षिता हैं, उनको इस बातका ज्ञान नहीं कि बालक को किस प्रकार रखना, दूध पिलाना और सुलाना चाहिये. जहां बालक रोया कि समझलिया कि भूखा है तुरन्त दूध पिलाने लगीं बालक के रोने के अनेक कारण होते हैं केवल भूख ही मानकर जल्दी जल्दी दूध पिलाने से बालक को और अधिक कष्ट होता है, पेट में पीड़ा होने लगती है, अजीर्ण, दस्त बार बार उलटी होना, पेचिश, पेट में गुड़गुड़ाहट आदि रोग वे समय दूध पिलाने से हो जाते हैं, कि जिससे माता और बालक दोनों को क्लेश होता है. असली बीमारी की ओर ध्यान नहीं जाता, आरम्भ ही से दवा पिला पिलाकर आयु भर के लिये बालक को रोगी बना देती हैं, प्रायः यह भी देखा जाता है कि बालकों को दस्त बन्द करने और सुलाने के लिये अफीम अथवा

अफीम पड़ी हुई गोली खिलाई जाती है, अफीम का प्रभाव बालक पर बहुत ही निकृष्ट पड़ता है।

बाल रोग लक्षण—बालकों की औषधी वैद्यभी ठीक ठीक नहीं करसक्ता क्यों कि जो बालक बोल नहीं सकते उनके रोगका पहिचानना बड़ा कठिन है इसकारण छोटे बालक के रोग को पहचानने के लिये बालक की माताको बहुत सावधान रहना चाहिये, बालक के रोग को पहचानने की साधारण रीति यह है. इसी को लक्षण जानना चाहिये. । बालक के जिस अंग में पीड़ा होती है उसको बार बार छूकर रोता है, अथवा उस अंगको जो कोई छूता है तो रोने लगता है, बालक के मस्तक में जब पीड़ा होती है, तब आंखें बन्द रखता है, मूत्र स्थान में पीड़ा होनेपर मूत्र करते समय बालक चीहता और कराहता है, तथा दूध नहीं पीता है, सब शरीर में पीड़ा होने से बालक रोता ही रहता है, । पेट में पीड़ा होनेपर बालक पैरों को पेट की ओर समेटता और रोता है, । जब बालक सोकर उठै और रोवै मुंहको इधर उधर घुमाकर जीभ निकालै तब बालक को भूखा समझना चाहिये, । गुदा में पीड़ा होने से बालक को प्यास बहुत लगती है

सर्वदा श्वेत सा रहता है, मलमूत्र रुकजाता है आंतों में गुड़गुड़ शब्द होने लगता है स्वास अधिक चलने लगती है. । जब बालक मुंह से कुछ झाग गिरावै और रोवै तो समझना कि जूं अथवा चींटी ने काटा है उसी समय देखकर बिछौना और वस्त्र को झाड़कर साफ कर लेना उचित है, इस प्रकार लक्षणों को जानकर माता को उचित है, कि रोग को जानते ही उपाय करै. ।

औषधि देने की रीति—बालकों को औषधि तीन प्रकार से देनी चाहिये, । जो बालक केवल दूध पीता हो उसकी माता को दूध देने से बालक का रोग दूर होता है, । और जो बालक दूध भी पीता है और अन्न भी खाता है, उस बालक की माता को और बालक को भी औषधि देना चाहिये, तथा जो बालक माता का दूध नहीं पीते केवल अन्न ही खाता है उस बालक को औषधी देना चाहिये, बालक को औषधि बलानुसार देनी चाहिये;

पसुली रोग—माता के कुपथ्य से दूध दूषित हो जाता है जिसका लक्षण स्त्री रोग चिकित्साधिकार के अन्त में हम लिख चुके हैं उस दूध के पीने से बालक के पेट में जब विकार उत्पन्न हो जाता है

और वही विकार धीरे धीरे बढ़जाता है, उसी से पसली रोग प्रगट होजाता है, जब दूध विकारी होता है उसके दश दिन पहले ही से बालक की माता के पेट में जलन पड़ने लगती है, और ऐसा जान पड़ता है कि पेट के भीतर कोई नोंच रहा है, पेट में जलन होते ही गायके दूध में मिश्री मिलाकर पीना चाहिये, इससे दूध नहीं बिगड़ेगा। दूषित दूध के पीने से बालक के पक्वाशय में वात कुपित हो पित्त के साथ मिलजाने से छाती का कफ सूख जाता है, तब श्वास का आना जा; ना कम हो जाने से बालक को हांफी आने लगती है, और पेट उछलने लगता है; इसी को पसुलीका रोग जान लिया गया है।

यह रोग दो प्रकार से होता है एक वात और पित्त के कोप से, दूसरा केवल वात के कोप से होता है। वात और पित्तके कोप से उत्पन्न होने वाले रोगमें पेट अधिक नहीं उछलता है, दस्त पतला होता है, मूत्र बहुत गरम और कमती उतरता है; गले में कफ घुर्घुराने लगता है, प्यास के कारण होंठ चाटता है पानी को देखते ही पीने की इच्छा करता है, कपड़ा मुंह पर नहीं रख सकता, कभी कभी

घवराइट से दूध नहीं पीता है, । जो केवल वातके कोपमे रोग होता है तो मल के सूख जाने से दस्त नहीं होता. पेट बहुत उछलता है, मूत्रकम और गरम होया है, गला सांय सांय करता है, कफ घुर्घुराता है, नाकके छेद सूख जाते हैं, कुछ पेटभी फूल जाता है, श्वास मुख स आती है, ।

रोग नाशक यत्न—वात और पित्त के कोप से होने वाले रोग में पहले बालक का दस्त गाढा और कम करदेना चाहिये, इसकी औषधि यह है. पुराने आमकी गुठली की गिरी ४ माशा, वेल की सूखी गिरी ६ माशा, इनको बारीक पीस ४ माशा मिश्री मिलाकर सबकी आठ पुडियां बनाकर चार चार घंटे पर माता के दूधमें घोल कर बालक को पिलावै, जब तक दस्त और कम न होजाय, तब तक औषधि देनी चाहियें, । यदि आमकी गुठली न मिले तो केवल वेल का मुरब्बा २।२ माशेभर दिनमें चार बार पानीमें घोलकर पिलावै, इस प्रकार उपाय करने से तीसरे दिन दस्त कम और गाढा होजाताहै. अनन्तर पांच पांच दाना शीतल चीनी का चूर्ण बनाय दो दो घंटे पर पानीमें घोलकर पिलाने से मूत्र की गरमी कमती होजाती है, । जब दस्त

और मूत्र ठीक होजाय तब कफके निमित्त कार्बोनेट आफ सोडा अथवा साफ किया हुआ सज्जीखार ६ रत्ती, मिश्री चार रत्ती दोनों को मिलाकर चार मात्रा बनावै और पानी में साथ दिन में चारबार पिलावै यह उपरोक्त मात्रा दो वर्षसे अधिक अवस्था वाले बालक के लिये है यदि अवस्था कम हो तो आधी मात्रा देनी चाहिये, माता को चाहिये कि गरम वस्तु न खाय, ॥ और जो केवल वायु के कोप में रोग उत्पन्न हुआ हो तो पहले बालक को दस्त खुलासा करावे, उसकी औषधि यह है कि, चार माशा गुलकन्द गुलाब को थोडे से पानी में घोल मलकर छानले फिर उसमें २ रत्ती सोडा डाल कर पिलावे इसी प्रकार दिन में चार वार पिलावै, यदि इससे एक दिन में दस्त न आवे तो दूसरे दिन प्रातः समय अंडी का तेल २ माशा, तारपीन का तेल २ बूंद थोडे से दूध में मिलाकर पिलावे, दस्त आने के उपरान्त ऊपर कहे अनुसार शीतल चीनी का चूर्ण पानी में घोलकर पिलावे जिससे मूत्र ठीक होजाय, यदि, बालक कुछ खाता हो तो मूंग और पुराने चावल की मुलायम खिचडी अथवा साबूदाना बालक को खिलावे, इस प्रकार सात

दिन में बालक अच्छा हो जाता है. ॥

बालक को दूध पिलाने का समय — बालक को दूध पिलाने का समय जानकर उसी नियम के अनुसार दूध पिलाना चाहिये, यह नहीं कि जब बालक रोया, दूध मुंह में दे दिया. जिन बालकों को समय पर दूध दिया जाता है, वे दूध पीकर सोजाते हैं अथवा पडे पडे हाथ पांव चलाया करते हैं, जब दूध पीने का समय आता है तब फिर भूख लगती है, इस प्रकार बालक प्रसन्न रहकर आरोग्य रहता है, माता को भी सावकाश रहता है दूध पिलाने के नियम यह है कि जो बालक आरोग्य और हृष्ट पुष्ट होता है वह एक बार भली भांति दूध पीकर अधिक समय तक रह सकता है और जो बालक निर्बल होता है. वह थोडा दूध पीकर सोजाता है जगने पर उसको जल्दी भूख लगती है, बालक की दशा को देख समझ कर दूध का समय नियत करना चाहिये, दूध पिलाकर बालक को सुला देना चाहिये, । गरमी में से निकल कर. घबडाहट, क्रोध. और महादुःख के होने पर बालक को दूध नहीं पिलाना चाहिए इससे बालक चिडचिडा हो जाता है और

कभी रोगग्रस्त भी हो जाता है, यदि किसी कारण से दुःख अथवा क्रोध हो तो कुछ समय ठहर कर चित्त सावधान कर के दूध पिलावे, दूध पिलाते समय बालक को गोद में इस प्रकार लिटावे कि मुंह ऊंचा रहे और दूध सुगमता से पेट में पहुंचे दूध पीते पीते जब बालक मुंह हटाले तब दूध नहीं पिलावैं और समझले कि बालक दूध से तृप्त होगया। पन्द्रह दिन तक दिन में डेढ़ डेढ़ घंटापर रात में तीन तीन घंटेपर बालक को दूध पिलावै, । अनन्तर तीन महीने तक दिन में दो दो घंटेपर रातको तीन तीन घंटेपर दूध पिलाना चाहिये, चौथे महीने से छै महीने तक के बालक को दिनमें तीन तीन घंटेपर रात में चार २ घंटेपर दूध पिलाना चाहिये, । सातवें महीने से एक वर्ष भर तकके बालक को दिन में चार चार घंटेपर रात में केवल एक बार दूध पिलाना चाहिये, ॥ वर्ष के उपरान्त रातको दूध पिलाने की आवश्यकता नहीं, रात के नौ बजे से सवेरे तक सोने की आदत डाल देनी चाहिये, यदि गरमी की ऋतु हो और रातको बालक रोवै तो थोडा जल दे देवै, छै महीने उपरान्त यदि

बालक का स्वास्थ्य अच्छा हो तो थोडा गाय का दूध भी दिन के समय पानी मिलाकर देने में कुछ हानि नहीं परन्तु पहले जो वस्तु बालक के दीजाय उसके लियेनिश्चय करले कि इस वस्तु के देने में बालक के लिये कुछ हानि तो नहीं है, ॥ गाय के दूध को पिलाने का नियम यह है कि तीन महीने आधा दूध आधा पानी मिलाकर देवै, फिर तीन महीने दो भाग दूध एक भाग पानी, फिर तीन महीने तीन भाग दूध एक भाग पानी, फिर जब बालक उस दूध को हजम कर जाय तब निरा दूध देना चाहिये, परन्तु दूध गरम करके सदैव देना चाहिये. कच्चा दूध औषधि में कहा हो तो देना चाहिये, ॥ दूध पिलाने के नियम निराले हैं, ॥

दूध डालने का रोग—दूध डालने का रोग कई प्रकार से होता है, माता के कुपथ्य से जब दूध में अधिक गरमी पहुंच जाती है तब बालक दूध पीते ही उलट देता है, । रसोई से निकलते ही, अथवा चक्की पीसते समय, मार्ग चलकर थकावट की गरमी के समय अथवा परिश्रम करके बालक को दूध नहीं पिलाना चाहिये, क्यों कि

इन्हीं कारणों से माता का दूध गरम होजाता है, प्रायः स्त्रियां चक्की पीसते समय बालक को गोद में डालकर दूध पिलाती हैं और पीसती जाती हैं उनके बालकों को दूध डालने का रोग हो जाता है, उचित है कि कुछ देर सुस्ता कर दूध पिलाना चाहिये, परिश्रम करके आध घंटा विश्राम लेकर दूध पिलाना चाहिये, जो स्त्रियां हर समय बकरी की भांति मुंह चलाया ही करती हैं अर्थात खाती रहती हैं उनको अजीर्ण रहता है, इससे भी दूध दूषित होजाता है, दूध के दूषित होने में अन्य भी अनेक कारण हैं जो लिखे जा चुके हैं, दूषित दूध को पीकर बालक वार वार दूध उलट देता है, वार वार खाने वाली माता को उचित है कि नियमित समय पर खाय जिससे अजीर्ण न होने पावे, और बालक को नीचे लिखी दवा देवै, । जो बालक दूध डालता हो तो थोडा पानी औटाय कुछ गरम रहने पर बोतल में भरे और छै माशा चूना डालकर चार पहर बन्द रक्खै जब चूनानी बैठ जाय तब दूसरी बोतल में उस जल को भली भांति निकाल लेवै वह पानी दूध में मिलाकर बालक को पिलावै ।

दूध न पचता हो तो सौंफ का अर्क पिलावे, अथवा शर्बत बनफ्शा चटावै, । अथवा ककडासिंगी, पीपरि, मोथा, अतीस, सबको समान भाग लेके पीसे और शहद के साथ बालकको चटावै, दिन में तीन बार चटाना चाहिये, । अथवा आम की गुठली की मींगी, से धान लक्कटधान की खील इनको बराबर लेके पीसै और दिन में तीन बार शहद के साथ बालक को चटावै, तो बालक के दूध डालने का रोग दूर होजाता है, ॥

अफरा (बालक का पेट फूलना—बालक के अफरा रोग अजीर्ण से हो जाता है, इस रोग को दूर करने का उपाय शीघ्र करना चाहिये. सेंधा नमक, भारंगी, सोंठ, भुनी हींग, इलायची इनसब को बारीक पीसकर गरम पानी में घोलकर पिलाने से पेट का फूलना आराम होता है, । अथवा सफेद इलायची, पीपरि, सूखा पोदीना, काली मिर्च काला नमक, इनको बराबर ले बारीक पीस तीन दिन खिलावै, । अथवा हींग का फूलाकर पानी में घिस गरमकर बालक की नाभि पर चारौ ओर लेप करै तो अफरा रोग दूर होजाता है, ॥

बालक के लिये गूला और घुटी—तोखासर गुड

में कुछ अजवायन और पानी डालकर मिट्टी की कुल्हिया में कंडे की आंचपर चढावे जिससे मन्द मन्द चुवै, चुर जाने पर छानके बालक को पिलावै, इसको गूला कहते हैं, । और घुटी कई प्रकार की होती है, मुगलानी घुटी जन्म घुटी आदि, ।

मुगलानी घुटी—अमिलतास, मुलहठी- मुनक्का, बनफसा, सौंफ, तुरंजबीन माशा माशा भर, शक्कर सफेद चार तोलाभर जलमें डालकर औटावे और छानकर बालक को पिलावे, शीतकाल में अजवायन बढा देवै, गरमी के दिनों में गुलकन्द बढादेवै,।

जन्म घूटी—अमिलतास, सौंफ, मरोडफली. पित्त पापडा, पोदीना, सनाय, सफेद जीरा, पांचों नमक, ये चार चार रत्ती, सोंठ, पलाशपापडा. मिश्री, सोहागा, नरक चूर, दो दो रत्ती. उन्नाव एक दाना, इन सबको पानी के साथ कुल्हिया में औटाकर बालक को पिलावे, अथवा अमिलतास, मरोड़फली, पलाशपापडा, एलुवा, सौंफ, काली मिर्च, छोटी हड, बडी हड सोवा के बीज, बच, गोखरू, इनको कुल्हिया में औटाकर गुन गुना पिलादेवै । अथवा, सनाय, सोंठ, छोटी हड, बडी हड, किरमाला, सौंफ, अजमोद, अजवायन, इन्द्र जौ,

नौसादर, सोहागा, पांचौ नमक दो दो रत्ती, खांड छै माशा, इनको मन्द मन्द आंचसे कलैया में औटाकर बालक को गुनगुना पिला देवै, आठवें दिन यह घुट्टी पिलावै; । अन्य भी कई प्रकार की घुट्टी होती हैं किसी किसी घुट्टी में चालीस औषधियां होती हैं, किसी में बत्तीस, किसी में चौबीस चीजें होती हैं । इसी प्रकार बालक को चौरंजी गोलियां बनाकर दी जाती हैं. तथा बालक की दशा के लिये पुरानी बड़ी बूढ़ियों के मुखसे सैकड़ों प्रकार की दवाइयां दूध पिलाने के नियम पालन पोषण के नियम, बालक को बिठाने उठाने उससे बातें करने तथा उसके लाड प्यार और उसको सुलाने के नियम सुने हैं, जिनका लिखे तो ग्रन्थ बढ जाय, यहां तो बालकों की रक्षा के लिये कुछ रोगों की संक्षेप औषधी लिखेंगे, । बालपोषण, बाल शिक्षा पुस्तक ही निराली है, ।

आभूषण पहराने से लाभा लाभ—बालकों को आभूषण (गहिना) पहिराने का अधिक प्रचार है, इस प्रकार के प्रचार से बहुत हानि है, लाभ कुछ नहीं है, प्राचीन समय के बालक जन्म ही से हृष्ट पुष्ट और बलवान् होते थे, आजकल के

बालक पेट ही रोगी देखने में आते हैं, फिर उनके हाथ पावों में छोटे ही दिनसे बोझा लाद दिया जाता है, जिससे रुधिर वाहिनी नसों में बाधा पहुंचती है, इसी प्रकार गंडा तावीज आदि पहिराने से उनमें मैल जम जाता है कि जिससे हर समय बालक घिनौना रहता है, मैल जम जाता है, दुर्गन्धि आने लगती है, । बहुत छोटे बालकों के पेट की आंत लटककर प्रायः अंडकोष में आ जाती है उन की नसको दबाने के लिये कटि में कर्धनी पहिराई जाती है. कोई कोई आभूषण औ, षधि के समान मानकर पहिने जाते थे जैसे कान की नाड़ी न सदैवी रहने के लिये सोने की वाली पहिनने का प्रचार था अथवा उनका प्रचार होगया, बडे बडे बाले तक लटका लिये जाते हैं, । बालकों को गहने पहिराने से अंग शिथिल हो जाते हैं, नसें दबजाती हैं, उत्तेजन शक्ति मन्द हो जाती है, 'नराणां भूषणं विद्या' मनुष्यों का आभूषण विद्या है, । नारीणां भूषणं शीलम्' स्त्रियों का आभूषण शील है इस कारण बालकों को विद्या औरकन्या ओं को शील सम्बन्धी शिक्षा देनी चाहिये, । बालकों के हृदय में जीव और शिर में बुद्धिका

वास है, प्रायः लोग बालकके शिर पर चपत लगा-देते हैं पीठ पर घूंसा जमादेते हैं यह महान अनुचित बात है, शिर में आघात पहुँचाने से बुद्धि मन्द होजाती है, और हृदय में आघात पहुचाने से जीव विकल होजाता है, जो लोग बालक को हाऊ हाऊ कहकर भय पहुंचाते हैं हर एक वस्तु से अथवा भूत चुडैल बतलाकर उनको डराते हैं यह बडा अनुचित बर्ताव है इससे बालक का हृदय निर्बल होजाता है, ॥

बाल चिकित्सा—बालकों को रोग होजाने का कारण अधिकतर अपवित्रता है. सौरै में कई बातों का ध्यान रक्खा जाय तो बालक रोगी नहीं होता है. बालक के नार को बहुत सावधानी से काटे, सरदी न पहुँचे, वहां मैला न रहे, और जन्म लैने उपरान्त एक दस्त करादे. बालक की माता थोडा सा दूध पिलादे, फिर दो दिन अपना दूध न पिलावै, अथवा अंडी का साफ तेल दश बूंद शहद में मिलाकर चटावे तो दस्त आजाता है. इस दस्त के न आने से अनेक रोगों के प्रकट हो जाने का भय रहता है. प्रायः ऐसा होता है बालक का शरीर शिथिल होजाता है, बार बार दूध डालता

है. सोता नहीं ज्वर, हिचकी, खांसी, उलटी, दस्त, रंग पीला पड़जाना, गले में घुर घुराहट, मुख में झाग, कफ आदि रोग हाजाने से स्त्रियां भूत प्रेत मसान का कारण समझकर झाड़ फूंक कराने लगते हैं, हुक्का, चरस गांजा, चुरट चंडू शराब पीने वाले, माँस, लहसन, मछली आदि अमानुषी यपदार्थ ग्रहणकरने वाले लोगों को बुलाकर उनके मुंह की अपवित्र फूंक बालक पर डराकर बालक के रोग को और भी बढाती हैं, कदाचित आरब्ध वश बालक चंगा होगया तो समझ लिया कि अमुक की झाड़ फूंका से फायदा हुआ, शहरों में तो यह रिवाज कुछ कम है परन्तु देहातों में प्रायः यह रिवाज है, सच्ची बात तो यह है कि बिना कारण पीड़ा नहीं होती और रोग हो जानेपरऔषधि करना चाहिये, व्याधिस्थ स्यौसधं मित्रं, रोगी का हित औषधि से ही है. स्याने नोते की झाडा फूंकी और गंडा तावीजों के भरोसे पर बालकों की रक्षा नहीं समझना चाहिये, सौर से ही बालकको बहुत ही स्वच्छ प्रकार से रक्खे, और नीचे लिखे हुये उबटन और काढा से स्नान करावे, । चन्दन, हल्दी को कूट पीसकर उबटना करे, खस और

गोरखमुंडी के काढा से स्नान करावै, अथवा कटैया पीपरि पिपरामूल का काढा गाय के घी में पचावै जब घी रहजाय तब उस घी को बालक के शरीर पर मलकर स्नान करावै, । अथवा गाय भैंस घोड़ी, बकरी, भेड़, इनके मूत्र को तेल में पचाकर तेल रह जाने पर छानले और बोतल में रख छोड़ उस तेल से बालक के शरीर पर मालिश कर स्नान करावै, । तथा गुगल, हलदी, खस, राल इनकी धूनी बालक को देवै, अथवा सरसों, नींव के पत्ते, सांप की कचुली, बकरा के बाल, शहत, वचः इनको पीसकर धूनी देवे, ॥ जो बालक दूध न पीता हो तो नीव, अडूसा गिलोय, पंटोल, इनके पत्तों के काढा से स्नान कराना चाहिये, ॥

मसान रोग—मसान रोग प्रायः सौरही में प्रकट होजाता है, यह कोई भूत प्रेत आदि बाधा नहीं होती है मैला कुचैला रहने से यह रोग हो जाता है, इसमें ज्वर हो आता है, पसलियों में कफ जम जाता है, इस कारण पसली चलने लगती है बालक मूर्छित रहता है, कभी दस्त भी आने लगते हैं और नहीं भी आते हैं, इस रोग की उत्पति के मुख्य कारण ये हैं, वस्त्र अपवित्र और मैले होने से,

तंग और अंधेरा होने से दूध पिलाने में असाव धानी होजाने से, थोड़ी थोडी देर में दूध पिलादे ने से, अपच पदार्थ खाने खिलाने से, पूरे वस्त्र न पहिनने के कारण अधिक सरदी लगजाने से, किसी कारण दूध में गरमी आजाने से यह रोग उत्पन्न हो जाता है.। इस रोग में यदि दस्त न आते हों तो दस्त करादेने से बालक अच्छा होजा- ता है.। यह रोग यदि सरदी से हो तो औषधि यह है, कि, बेहडे का छिलका बड़ी हड, चूना, क बीला, नीलाथोथा, पपरिया कत्था, इनको बराबर लेके कूट पीस कर गोली बनावे और घी में मिला कर पसली पर लेप करे। और नीला थोथा १ रत्ती कंजे का बीज एक, इनको पीस गोली बनाकर नित्य १ गोली खिलावे.। अथवा पीलू का बीज केंचुआ, लौंग इनको पीस बाजरे के बराबर गोली बनावे और १ गोली नित्य खिलावे,। अथवा सूखा केंचुआ पानी में पीस बालक के मुख में १ बूंद टपकादे, अथवा जमाल गोटा, एलुआ को बछिया के मूत्र में पीस मूंग बराबर गोलियां बनाय एक गोली नित्य खिलावे,। बालक का नाल जिस सम य काटा जाय उसी समय चावलभर अच्छी कस्तू

री कोयले में बारीक पीसकर जले कटे हुये स्थान पर लगादे तो यह रोग नहीं होता है. । जमालगोटा की मींगी, गोलिया रांलिया थूहर के दूध में पीसकर तोंदी पर लेप करदे, । अथवा बालक के पेट पर अंडी का तेल मलकर बकायन के पत्ते गरम करके बांधदे, । अथवा थोडे से तेल में मदिरा को मिलाकर पेट पर और नशों पर लेप करदे, । अथवा चार बूंद मदिरा बालक के गले में दो दो घन्टा उपरान्त चार बार डालदे तोकंठमेंघिरा हुवा कफ दूर होजाता है । यदि बालक के शरीर में ज्वर होकर अंगोंमें जहां तहां लाल लाल फफोले पढने लगेंतो वस्त्रोंकोबदलकरस।फकपडेपहिननापहिनानाचाहिये, जो सरदी से कफ घर घराता हो तो बैतरा सोंठका आधपाव चूर्ण गाढा दही छटाकभर छोटी पीपरि छटाकभर, इनको मिट्टी की हांडी में भरकर हाथ भर लंबे चौडे और गहरे गड्ढे में रख बिनुआ कंडे नीचे ऊपर रहें फिर आग लगादे जबकंडे जलजांय तब फिर नीचे ऊपर कंडे रखकर आंच करदे ऐसे तीन बार आंच देके हांडी में से औषधी निकालले और शीशी में भरकर भली भांति डाट लगादे, एक चावल प्रमाण औषधि माता अपने दूध में

देवै, । जो रोग बढगया हो तो एक रत्तीभर अदरख के रसमें छै रत्ती शहत मिलाकर दोनों समय तीन दिन तक देवै, । यदि पसली चलती होतो चार रत्ती तुलशी के रसमें चावल भर सोंठ एक माशेभर शहत मिलाकर देवे, । और लहसन, अदरख का दो दो तोला रस आधी छटाक मीठे तेल में पकावै, जब तेल रहजाय तब शीशी में भरले इस तेल को पेटपर लगाकर मन्द सेकदेवै, ॥ बालक की माता जायफल खाय कभी कभी बालक को भी अपने दूध में घिस कर पिलावै, । जिसके बालकों को यह मसान का रोग होजाता हो उसको चाहिये कि कबूतर पाले जिससे कबूतरों के पंख की वायु बालक के शरीर में लगै सांझ सबेरे कबूतर के पंख की वायु बालक के लिये अच्छी होवे है, । बालक की माता को यदि अपने पुरुष से प्रसंग का योग आ पड़ै तो पहर से एक पहर उपरान्त बालक को दूध पिलावै, क्योंकि प्रसंग करने से दूध दूषित हो जाता है उसमें सरदी गरमी का योग हो जाता है. ॥

हंसली का जाना—यदि बालक के हंसली जाय तो किसी चतुर धाय से हंसली को सुतवा देना

चाहिये, और घुंघची की माला पहिराकर नींब क पत्तों की धूनी देना चाहिये, इसली का राग झटका लगने से हो जाता है. और कंधों के समीप गर्दन में पीडा होने लगती है, ।

टुंडी का आना—गुदा के नीचे की नस जब हटजाती है तब यह रोग हो जाता है, इसमें बालक दस्त आने के समय रोता है दस्त के समय फिट फिट शब्द होकर दस्त पतला आता है, । जो टुंडी उठाने में चतुर हो उस धाय से उसनस को को ठीक करादेना चाहिये, ।

कागका लटक आना—तालू के मांसमें प्रकुपित हुये कफसे तालू रोग प्रगट हो जाता है इसमें बा- लक से रोया नहीं जाता और दूध पीकर डाल देता है, इसमें माता को चाहिये कि गरम वस्तु नहीं खाय माजूफल अथवा मुलतानी मिट्टी को सिरका में पीस अंगुली से तालू पर लगाकर काग को उठादेवै, अथवा काली मिर्च और चूल्हे की राख पीसकर अंगुली से लगाकर काग को उठा देवै, । हड कूट, पचका काढा शहत में मिलाय चावलों के जल के साथ पिलाने से तालु रोग अच्छा होजाता है, ।

खाल का लगना—बगल, कोहनी आदि जहां बालक की खाल चिपक जाती है वहां मैल जम जाता है खाल कच्ची होने से लगकर पीडा करती है, इस कारण कडुआ तेल लगाकर मैल को दूर करके गरम जल से भली भांति धोकर साफकर दिया करै, ।

तोंदी का पकना—जो बालकी की तोंदी सूज गई हो तो आग में पीली मिट्टी को गरमकर दूध में बुझाकर सुहाना सेक देवै, अथवा आंच पर कपड़े का गरम कर करके सूजन पर सकै तो सूजन दूर हो जाती है. । जो तोंदी नार के खिंचने से पकगई हो तो गाजा के तेल में अथवा कडुए तेल में काहा भिगाकर लगादे, अथवा मोम का मलहम काड़ा पर लगाकर तोंदी पर धरै, अथवा इनकी पुलटिस बांध देवै, । अथवा लोध, हलदी प्रियंगु के फूल को शहत में बारीक पीसकर तोंदी पर लेप करै, ॥ चन्दन का चूरा तोंदी पर रक्खै अथवा बकरी की लेंडी को जलाय उसकी राख तोंदी पर धरै, ।।

गला आना—बालक के गला आजाने से दूध पीने में कष्ट होता है उसकी शान्ति के लिये बालक को बहुत थोडा थोडा कर बडी देर तक शहतूत

का शर्वत चटा देना चाहिये, इस शर्वत से बालक का गला अच्छा होजाता है ॥

फुंसियां और चकत्ते—बालक के शरीर में सफेद फुंसियां होजाती हैं वे फफोलों के समान भरती फूटती रहती हैं उनकी झिल्ली बहुत पतली होती है, फफोलों के चारों ओर लाली होती है यह रोग छूने से होता है उडकर दूसरे बालक के भी होजाता है, इसका उपाय जल्दी करे. अफ़ोह वृक्ष की पत्ती पानी में औटाकर उस पानी से बालक को स्नान करावे, । और जो फुंसियां वर्षा काल में लाल लाल चकत्ते से बालक के शरीर में प्रायः पीठ और छाती में होवे है उनमें कोई कोई फुंसियां सफेद मुंह की होती हैं, उनको दूर करने के लिये आंवरे और मसूर के छिलके जलाकर उनकी बराबर कवीला और मेंहदी पीसकर घीमें मिलाकर उस अंगपर मलैजहां फुंसियां अधिक निकलती हों और मेंहदी को पानी में उबाल छानकर उस जल से स्नान करावे ॥

अधिक प्यास—जो बालक को प्यास बहुत बढ जाय तो जहरमोरा खताई को जल में पीसकर पिलावे, । अथवा मुनक्का को धोकर साफ कर और बीज निकाल कर फेंकदे फिर सेंधा नमक के साथ

घोट पीस प्रातः समय बालक को चटावे । अथवा नीमकी पत्ती के साथ कमलगट्टाकी मींगीको घोटकर पिलावे । अथवा चनाकी दाल भिगो कर खिलावे ॥

चुनचुने—दूध न पचने से बालक के पेट में अजीर्ण होने, तथा दांत निकलते समय प्रायः बालक के पेट में चुनचुने हो जाते हैं. जब पेट में चुनचुने कीडे काटते हैं, तब बालक दांत किरीता है, गुदा को बार २ खुजाता है, आंखें घुमाता और मीचता है, मुख पीला हडजाता है, नाक सिकोडता है, इन लक्षणों से चुनचुने जान लेना चाहिये, अधिक चुनचुने होने पर बालक के मल के साथ सूतसे वारीक कीडे रेंगते देख पडते हैं, इनको दूर करने के लिये अनार की जडकी छालको जलमें औटाकर छानले और सांझ सवेरे थोडा थोडा पिलावे, । अथवा अंडी का तेल तीन माशा भर गरम दूधमें मिलाकर पिलावे, । अथवा राई को पीस दही में मिलाकर पिलावे । अथवा मुनक्का में बायविडंग रख पांच सात दाने खिलावे, । अथवा हींग के पानी में कपडा भिगोकर, गुदा पर धरै । अथवा आमकी गुठली की गिरि का चूर्ण दो रत्तीभर खिलावे । अथवा इन्द्र जौ पीसकर । अथवा खाने

का नमक ४ रत्ती डरी कशा.ल १ रत्ती आधी छ-टांक शीतल जल में पीसकर गुदा में पिचकारी ल-गाने से कुनचुने मरजाते हैं, । गरिष्ट भोजन बालक की माता न खाय और मीठा न खाय. नमकीन वस्तुयें खाय. ॥

गंज—जो शिर में गंज होगया हो तो गाय के घी को धोकर उसमें मुर्दाशंखी, तूतिया कबीला पीसकर मिलावै और गंज पर लगावै, परन्तु पहले नीव की साफ पत्तियों को पानी में औटाकरउस से शिर को धोकर औषधि लगावैं, । मक्खियों की सूखी बीठ को थाली में धोय उसमें कपड़ा भिगोकर गंज पर धरदे,।अथवा चूना गन्धक एक एक तोला लेके सवा पाव पानी में डाल मिट्टी की हांडिया में औटावै और छानकर रक्खै, उसमें कबूतर के पंख को भिगोकर गंज पर लगानेसे रोग जातारहताहै।

हिचकी वमन—जो बालक को हिचकी आने लगे तो थोडी पीपरि पीसकर शहत में मिलाकर चटावै । अथवा कुटकी का चूर्ण शहत में मिलाकर चटावे तो हिचकी और वमन जाय । अथवा गीला कपड़ा तलू पर रक्खै. ॥

लार बहना—जो बालक के लार बहुत गिरती

हो तो आधपाव शकर की चासनी में बड़ी इलायची के बीज, मस्तंगी तोलातोला भर पीसकर डाले और जमाले उस में से बालक को एक दो माशे भर खिला दिया करे, ।

पेट बढ़ना—यदि बालक का पेट बढ़ने लगै तो थोड़ा पानी शहद में मिलाकर पिलावे तो थोड़े दिनों में पेट का बढ़ना दूर होजाता है ॥

कांच निकलना—यदि बालक के कांच निकल आती हो तो जामुन और आम की छाल और पत्ती को जल में औटाकर उस जल से शौच करावे, अथवा बालक के मूत्र से ही शौच करावे, । कड़ुवे तेलको लगाकर जलाकर पिसा हुआ सोडा लगावे।

चिनग—जब बालक के चिनग होती है तब बालक मूत्र करते समय रोता है और मूत्र स्थान को पकड़ कर खींचता है, उसकी शान्ति के लिये हजरुल यहूद (यहूद देश का पत्थरका बेर) जो पंसारी और अत्तार के यहां मिलता है उसको पानी में घिसकर पिलावे, । अथवा बबूतर का गोंद कपड़े में बांधकर भिगोवे फिर उस में मिश्री पीसकर डालै और दिनमें पांच बार पिलाव तो चिनग रोग जाता रहता है, ।

खुजली—कड़ुआ तेल चूना के पानी में डालकर हिलावै जब गाढ़ा होजाय तब उसमें रूई के फोहे को भिगोकर खुजली के स्थान पर रक्खे तो खुजली दूर होजाती है, ॥

जल जाना—जो बालक आग से जल जाय तो खुजली के लिये जो तेल कह चुके हैं वह लगावै, । अथवा गाय के घी में इमली की छाल को जलाकर मिलावै और लगावै , । यदि उसी समय आगपर सेकदे वा शकर मलै तो छाला नहीं पडता है, जो घाव होजाय तो कडुये तेल को चुपड कर पत्थर का कोइला बारीक पीसकर कईबार बुरकावै ।

विशूचिका—यदि बालक को हैजा होजाय अर्थात् दस्त और कै हो तो अर्क कपूर पिलावें अथवा कपूर खिलावे, । अथवा काली मिर्च, हींग, कपूरअफीम बराबर लेकर पीसे और दो दो रत्तीकी गोली बनाय कर चार घडी पर बालक को खिलावे ॥

नकसीर—जो बालक की नाक से रुधिर बहने लगै तो फटकरी का पानी नाक में सुंघावे । अथवा सफेद दूब का रस और अनार के फूल का रस लेके दिन में तीन बार नास देवै, ॥

मक्खी काटना—जो बालक को मक्खी काटजाय

तो मक्खी ही की बीठ पानी में घोल कर लगावै। अथवा लोहे में घी को घिसकर लेप करै ॥ जो जीव काटै उसी की बीठ लगा देने से उसका विष दूर होजाता है, ॥

अफीम के विष का उपाय—जो बालक को अफीम का विष चढ़गया हो तो चौकिया सुहागा घी में पीसकर पिलावे । अथवा पानी में हींग घालकर पिलावे । अथवा नारी के साग का रस पिलावे । अथवा अरहर और चौलाई के पत्तों का रस पिलावे। अथवा अंडी और नमक मिलाकर पिलावे, । अथवा प्याज का रस सुंघावे ॥

शीतला (विस्फोटक रोग) यह रोग प्रायः चैत्र वैसाख (वसन्त ऋतु) में होता है इस कारण बंगवासी वैद्य लोग इसको वसन्त रोग कहते हैं. यह रोग प्रायः सब बालकों को होता है, इससे कोई बालक नहीं बचता; यह उडकर लगने वाला एक प्रकार का चेपी रोग है रोगी के मल, मूत्र, पसीना थूक और वस्त्र आदि के स्पर्श से यह रोग दूसरों के लगजाया करता है और इसका बीज वायु में मिलकर इसका फैलाव करता है. श्वास के द्वारा और पसीना आदि शरीर के मैल के साथ वही बीज

बाहर आकर वस्त्र आभूषण भोजन पान आदिपदार्थों में मिलजाता है कभी कभी यह बीज़ अणुरूप से विभक्त होकर वायु में उड़ने लगता है तथा ऊपर कहे अनुसार जिस शरीर में रोग होने कीसम्भावना होती है, उस में आक्रमण कर माता को प्रगट करता है, । कभी कभी विरुद्ध और विषम भोजनों से और दूषित जलके पीने से शरीर में बात पित्त और कफ अत्यन्त उद्धृत होकर तथा दुष्ट रुधिर के साथ मिलकर माता रोग को प्रगट करते हैं माता के उदर में बालक रुधिर द्वारा पलता है उसी का यह विचार है उसी की यह गरमी फूटकर निकलती है इसी से इसको माता रोग कहते हैं, । माता का बीज जितना अधिक बलवान् होता है उतनी ही शीघ्र माता की पीड़ा मालूम होती है, जितना बीज निर्मल होता है उतनी ही देर में पीड़ा के लक्षण मालूम होते हैं शरीर की स्वाभाविक रोग बाधक शक्ति बलवती होने से शरीर में कभी कभी माता का बीज व्यर्थ हो जाता है, कभी हीन लक्षणों वाली पीड़ा को प्रगट करता है. । जब यह रोग सामान्य रूप से प्रगट होता है तब इसमें थोड़े बहुत दाने निकलकर सहज में आराम हो जाताहै,

परन्तु जब यह विकट रूप से प्रगट होता है तब रोगी के सम्पूर्ण शरीर में शीतला की बड़ी बड़ी फुंसियां निकलती हैं और वे फुंसियां परस्पर मिल कर छाला बन जाती हैं। शरीर की भीतरी श्लेष्मल त्वचा में भी फुंसियां निकल आती हैं, मुखमें, नाक में और आंखों में भी फुंसियां दिखाई देती हैं, परन्तु फेफड़ा पक्वाशय आदि के भीतरी अंगों में जो फुंसियां प्रगट होती हैं वे आंखसे नहीं देखी जा सकतीं। फेफड़े के भीतर की त्वचा में सूजन अथवा पीब मालूम होती है, पक्वाशय की भीतरी त्वचा में भी शीतला की फुंसियां प्रगट होती हैं उसी प्रकार आंतों में भी फुंसियां प्रगट होती हैं। फेफड़ा आदि में सूजन होने से बड़ा भयंकर परिणाम होता है उस समय रोगी सन्निपात से पीड़ित होकर मरजाता है कदाचित् कोई रोगी बचजाय तो किसी का कोई अंग किसी का कोई अंग मारा जाता है, कोई बहरा हो जाता है कोई अन्धा हो जाता है, किसी की आंखें फूलजाती हैं, किसी का सब अंग काला पड़जाता है, किसी का मुख मंडल बिगड़ जाता है, इस प्रकार इस शीतला रोग में अनेक प्रकार के भयंकर उपद्रव उत्पन्न होते

है, । इस रोग का मुख्य उपाय यही है कि टीका लगावे यदि टीका (गास्त न शीतला) की विधि यहां सविस्तार लिखी जाय तो एक ग्रन्थ बन जाय, उसके लिखने की आवश्यकता नहीं क्यों कि टीका के आविष्कार कर्ता डाक्टर जेनर साहब ने टीका का प्रचार करके बड़ा उपकार किया है, टीका लगवाने से इस देश के बालकों में माता का जोर बहुत कम होजाता है, यद्यपि कभी कभी पहले वक्सीनेटरों की अयोग्यता से टीका का परिणाम अच्छा नहीं होता था परन्तु अब दयावान् गवर्नमेंट ने टीके में अच्छे प्रकार सुधार कर दिया है. । आजकल वैद्यों द्वारा इसकी चिकित्सा न कराकर माली आदि से झाड फूंक और ऊट पटांग इलाज कराते हैं यह बड़ी भूल है, वैद्यक शास्त्र में शीतला रोग की बड़ी सहज और शीघ्र आराम करने वाली चिकित्सा लिखी है. ॥

शीतला रोग चिकित्सा—इस रोग में चिकित्सा का सबसे पहला काम यह है, कि वमन और विरेचन द्वारा शरीर को शुद्ध करै वमन (कै) कराकर आमाशय को और विरेचन (दस्त) कराकर कोष्ट को शुद्ध करावै, । बालकों को बहुत

हलकी औषधी के द्वारा वमन करानी चाहिये परंतु जो बालक बहुत निर्बल हों उनको वमन कारक औषधि देनी उचित नहीं, । वमन कारक सब औषधियों में मैनफल अधिक प्रसिद्ध है, मैनफल के द्वारा विधि से वमन करावे, नीब, अडूसा, परवल इनके पत्ते और वच, इन्द्र जौ, मुलहठी ये एक २ तोला लेके कूट पीस चारसेर पानी में औटाय चौथाई रहजाने पर पावभर काढा में कुछ मैनफल का चूर्ण डालकर पिलावै, बालक को थोडा करके कई बार पिलावै, दो तीन वार पीने से वमन अवश्य होवै है, ब्राह्मी के पत्तों के रसमें अथवा जल नीम के रसमें अथवा हुलहुल के रसमें शहत डालकर पिलाने से वमन और विरेचन होकर कोठा साफ हो जाता है. । अथवा करेले के पत्तों के रसमें हल्दी का कुछ चूर्ण डालकर पिलाने से वमन विरेचन होकर कोठा शुद्ध हो जाता है, । वमन कारक औषधि देकर रोगीको सोने नहीं देवे वमन होजाने पर जब शरीर और मन सावधान हो तब हलका पथ्य देवे, । इस रोग के उत्पन्न होने के दिनों में यदि बालक की माता पथ्य से रहे तो बालक को यह रोग ही नहीं होगा, दूध पिलाने वाली को

चाहिये कि उन दिनों मे पहले बसंत पंचमी से ही गुड़, खटाई, तेल, लाल मिर्च, उड़द और बादी वस्तुयें नहीं खावै, गोला खाने से शीतला के दाने बहुत कम निकलते हैं. शीतल वस्तु खाय. और रुधिर शोधक जैसे चिरायता को भिगो कर सवेरे छानकर शहद मिलाय पीवै. बालक को रुद्राक्ष के दाने को पानी में घिसकर पिलावे अथवा अनारदाना और मुलहटी बराबर लेके कूट के औटावै और शहतराके अर्क में मिलाकर पिलावै. । इस रोग के आरम्भ में बालक को ताप चढता है; उसको औषधि नहीं देवै अनन्तर पोस्त १ भगकन्द २ भाग का शर्बत पिलावै ॥ तीसरे दिन शीतला के दाने निकल आते हैं सफेद और थोडे दाने निकलने में कोई हानि नहीं उनको खसरा कहते हैं, परन्तु काले और नीले रंग के दाने निकलने पर बालक बहुत कम बचता है, । इसके होने से वायु दुर्गन्धित हो जाती है, जहां यह रोगी हो उस स्थान को बहुत साफ रखना चाहिये सुगन्धित वस्तुओंकी धूनी देनी चाहिये, पिंडोर से उस स्थान को पोतना चाहिये शीतला स्तोत्र का पाठ कराना चाहिये, । बालक को अंधेरे घर में रक्खे जिससे उस पर किसी की

परछाहीं नहीं पडे परछाहीं पडने से मुख व शरीर पर दाग पडजाते हैं, खुजलाने से भी दाग पड़जाते हैं इस कारण बालक के हाथ में कपड़े की थैली बांध दे, जिससे वह खुजला न सके, खुजली के स्थान पर कबूतर के पर से मलाई अथवा मक्खन लगादे, अथवा नारियल के तेल को चूने के पानी में मिला कर लगा देवे, रातको ऐसे स्थान पर सिरहाने रक्खे कि परछाहीं न पडे, । जबसे शीतला के दाने निकलने लगें तबसे काला सुरमा गुलाबजल में घिसकर आंखों में लगावे जब माता निकल कर भर जावें तब कपूर, काला सुरमा धनियां के पानी में घिसकर आंखों में टपकावे जिससे नेत्र फूट जाने का कोई रोग न होजाय,। और सफेद चन्दन धनियां के पानी में पीसकर मुँह में डाले जिससे कंठ में सूजन न हो,। जब दाने मुरझा जावें तब रसौत मुलतानी मिट्टी पानी में पीस शरीर पर लेपे और साँभर नमक के पानी में कपड़ा भिगोय सुखाले वह कपड़ा शरीर पर डाले रहे। जब दाने फूटजायँ तब गूलर; लसोडा, पीपल, सिरस की छाल को जलाय पीस छानकर घी में मिलाय फफोलों पर लगावे,। जब दानों की पपड़ी गिरजाय तब

सादा तिल्ली का तेल लगावे और झरबेरी के पत्ते और हरे माजूफल तथा रेशाखतमी कुचलकर पानी में उबाल उससे स्नान करावें, बालक के आराम होने तक बालक की माता मूंगकी खिचड़ी अथवा मूंग की दाल, पुराने चावलों का भात, और जौ गेहूं की रोटी के सिवाय और कुछ न खाय, यदि बालक बड़ाहो दूध न पीताहो तो बालक को पथ्य भोजन देना चाहिये, माता को विशेप पथ्य नहीं चाहिये, ॥ जब बालक इस रोग से अच्छा होजाता है तब भी बालक को गरमी के कारण बहुत गरमी लगती है. उसके निवाणार्थ मीठे अनार का शर्बत पिलाना चाहिये एक महीना तक शर्बत पिलावे । शीतला के दिनों में बालक की माताको शाहतरा.सरफोंका अथवा खूबकलांका अर्क और शर्बत उन्नाव प्रति दिन पैसे२भर सांझ सवेरे पीना चाहिये,

अर्क बनाना—सरफों का शाहतरा, खूबकलां इनमें से जो मिल सकै छटांक भर लेके सेर भर जल में दिन रात भिगाकर दूसरे दिन औटावे पावभर रहे जाने पर मलके छानले और बोतलमें भरकर रख छोड़े,

शर्बत बनाना—छटांक भर उन्नाव सेर भर पानी में रातभर भिगोकर सवेरे औटावे जब आधसेर रहे

जाय तब उतार कर छानले और उसमें आधपाव शकर वा बताशा डाल आंच पर चढाकर शर्बत बनालेवै

टीका लगने पर सावधानी—बालक को टीका लगवाने में डरना नहीं चाहिये जो टीका चतुराई से युक्ति पूर्वक लगाया जावे तो यह रोग बालकों को कभी नहो, और यदि होवै तो बहुत ही कम । टीका लगाने वाले कर्मचारियों में कुछ कर्मचारी लोग ऐसे भी हैं कि प्रायः गरीबों के बच्चे उनकी लापरवाई से विकल होजाते हैं. इस कारण टीका लगने के पहले सात दिन से दूध पिलाने वाली माता को अथवा बिना दूध पीने वाले बालक को खटाई मिठाई लाल मिर्च तल आदि औगुण वाली वस्तुयें नहीं खानीचाहियें. टीका लगाने से पहले किसी अच्छे डक्टार अथवा वैद्य को दिखला लेना चाहिये कि दूध पिलाने वाली माता अथवा बालक को ज्वर आदि कोई रोग तो नहीं है, यदि कुछ रोग जान पडे तो टीका नहीं लगवावै, यदि कोई रोग न हो तो प्रसन्नता से टीका लगवालेवे टीका लगवाले के उपरान्त पन्द्रह दिन तक दही तेल गुड़ मिर्च खटाई छाछ आदि से परहेज करै टीका लगवाने के समय से जबतक पपडी न गिरै तबतक

बालक को बहुत सरदी गरमी से बचावे, न स्नान करावे, न धूप में जाने दे, असावधानी न होनेपावे,।

दांत निकलना—बालक के सातवें महीने से दो वर्ष तक दूध के दांत और दाढें निकलने से बालक को बड़ा कष्ट होता है, सातवें वर्ष से दूध के दांत गिरते जाते हैं और सच्चे दांत निकलते हैं उनको नाज के दांत कहते हैं, बाईसवीं वर्ष में सच्चे दांत निकल चुकते हैं, जब बालक के दूध के दांत और दाढें निकल चुकें तब चौथी वर्ष जानना चाहिये कि अब बालक का नया जन्म हुआ, क्यों कि दांत निकलते समय असावधानी के कारण सैकड़ों बालक निहत हो जाते हैं,॥

दांत निकलने के लक्षण—जब बालक के दांत निकलने आरम्भ होते हैं, तब लार बहुत गिरती है, मसूडों में ललाई और गरमाहट रहती है, प्यास की अधिकता से बालक बार बार दूध पीने की इच्छा करता है, परन्तु पीडा के कारण स्तन को मसूडों से दबा दबाकर छोड देता है, और मुंहमें अंगुली डाले रहता है,रोने के समय बालक के गालों पर ललाही आ जाती है, ये लक्षण दांत निकलते समय के हैं,।

दांतों की चिकित्सा—दांत निकलने के लक्षण

जब ज्ञान पड़े तब थोड़ा सा चूने का पानी अच्छे निर्मल शहत में मिलाकर बालक के मसूड़ों पर मलदे । अथवा नमक सुहागा अथवा शोरा बराबर लेके महीन पीसे और शहत में मिलाकर दिनमें तीनबार मसूड़ों पर मल देने से दांत जल्दी निकल आते हैं, । अथवा पीपरि और धाय के फूल बराबर लेके आंवले के रसमें घिसकर बालक के मसूड़ों पर दिन में कई वार लगावै तो दांत जल्दी निकलते हैं, । दांत निकलते समय माता अपना दूध न पिलाकर ऊपर का दूध पिलावे यदि बालक अन्न खाने लगा हो तो अन्न खिलाना कम करदे, खटाई की वस्तु कभी खाने को न दे, । बालक को दस्त आने लगे तो दस्तों को रोकने का उपाय न करे, । दांत निकलने में दस्तों का आना अच्छा है, यदि पेट में अजीर्ण ज्ञान पड़े तो कभी कभी अंडी का तेल दे दिया करै, और यदि दस्त अधिक आने लगें तो ईसबगोल और बेल गिरी बराबर ले बारीक पीसकर रत्ती रत्ती भर दिन में दो तीन बार खिला देवै, । दांत निकलने के दिनों में बालक हरएक छोटी वस्तु लेके मुखमेंडालकर चूसने लगता है, इसकारण इनदिनों बालक की निगाह रक्खे जिससे कोई छोटी

बस्तु मुखमें डालकर निगल न जाय, जो बालक की मृत्यु का कारण बन जाय, ॥ दांत निकलने में बालक का शिर दूखा करता है, इसके लिये गुल रोगन शिरतर रक्खै, । अथवा बादाम का तेल, व आंवले का रस, वा अच्छा शहत मसूडों पर धीरे धीरे रगडै, । खांसी आने लगै तो मुलहटी की डंढी छीलकर बालक के गले में डोरे में बांधकर लटकादे और उसको चूसने दे, । ज्वर आजाय ता कास्टैल का हलका जुलाब देदेवै, । बारीक सेंधा लवण पीस छानकर शहत में मिलाय मसूडों पर मलै, । अथवा छातौना की जड, धाय के फूल, पीपरि, मुलहठी आंवले के रसमें मिलाकर चटावै, दांत निकलने के समय उत्पन्न रोग धीरे धीरे सब शान्त हो जाते हैं, ।

आंख दुखना—बालक की आंख दुखने के चार कारण होते हैं, १ सरदी से, २ गरमी से, ३ बालक की माता की आंखें दुखनेसे, ४ दूध विकार से अथवा दांत निकलने से, ।

चिकित्सा—आंख दुखने पर तीन दिन तक कुछ दवा न करै दूध पिलाने वाली माता को नियम से रहना चाहिये, खटाई, बहुत नमकीन बस्तु और

चना व उडद की कोई वस्तु न खानी चाहिये, । बालक के कान में कडुवा तेल डाले, और तलुये पर भी मले, कभी कभी एक बूंद आंख में भी डाल दे, । नीम की कोंपल पीस टिकिया बनाय कोरे घडे पर लगाकर शीतल करें और रात को वा दो पहर को बांध देवै, । तथा रसौत का पानी आंख में डाल देवै, । घी को गरम कर रुई के फोहा को नमक के पानी में भिगोकर घी में छांडे जब छन-छन शब्द बन्द होजाय तब उतारकर सुहाता सुहाता आंखों पर बांध देवै, । अथवा पानी में गेरूकोघिस कर उसमें रुई को भली भांति भिगोकर बांध देवै. । अथवा रुई का फाहा बकरी के दूधमें भिगोकर बांधै, अथवा घीग्वार का रस आंख में टपकावै । अथवा लोहेपर अमचुर पीसकर लेप करे, । अथवा गुलाव जल डेढ तोला लेके उसमें छै रत्ती फिटकरी पीस कर मिलावै और मोरपंख अथवा पंखकी लिखने वाली कलम में उस जलको भरकर चार चार दिन में तीन बार आंखमें टपकावै, । अथवा लोध और आंवला को घी में भून पानी में पीसकर लगावै अथवा खौलते जलमें फटकरी डालकर उतार ले उतारते ही फटकरी को निकाल डाले, और उस

जल में सहते सहते आंखों को धोवे। और मिश्री फटकरी, पठानी लोध, एक एक तोला अफीम छै माशा, लेके सबको पानी में बारीक पीसकर आगपर चढाकर पकावे और तीनबार दिन में पलकों पर लगावे, इसका अंश यदि भीतर पहुंचेगा तो कुछ हानि नहीं, बालक की माता के दूध के दोष्य से बालक के पलकों में कुकूरणक रोग होजाता है जिससे आंखों में पीडा और पलकों में खुजली होती है पानी बहता है, इससे बालक धूप की ओर नहीं देख सकता, आंखों को बन्द रखता है, इस रोग के होने से बालक अपने मस्तक और नाक व आंखों को हाथों से मलता है, इसके निवारणार्थ हड, बहेडा, आंवला, सोंठ, लोध को बराबर लेके बारीक पीसकर गुनगुना कर सहता सहता पलकों पर लेपै,। जो आंख दुखने लगै तो तीन दिन कुछ दवा इस कारण न करै कि गरमी निकल जाय, गरमी रुकजाने से फिर महीनों आंख अच्छी नहीं होती,। दूध की मलाई रातको तीन दिन बांधने से आँख दुखना बन्द होजाता है और आंखों की ललाई जाती रहती है,॥

कोथियों का यत्न—यदि बालक की आंखों में

फोथियां होगई हों तो पुनर्नवा वन मेथा, लोध, सिंघाड़े, कटैया इनका लेप बनाकर गुनगुना पलकों पर लगावे, ॥

मुहां रोग निवारण—यदि बालक के मुहां रोग होगया हो तो शीतल चीनी कपूर, पीसकर मुहां पर लगावे, अथवा शीतल चीनी और पपरिया कत्था पीसकर शहत में मिलाकर चटावे, . जो मुख में सफेद दाने हों और लार वहुत गिरती हो, मुख का रंग लाल हो तो बालक को घुट्टी देना चाहिये जो पहले लिखी जा चुकी है, और वंश लोचन पपरिया कत्था, सफेद इलायची के दाने पीसकर मुहां पर बुरकावे. जो फफोले पड़गये हों तो गेहूं का सत छै रत्ती. सुहागा दो रत्ती पीस छानकर मुहां पर मले, । मुहां रोग में सफाई का भली भांति ध्यान रक्खै; स्थान और वस्त्र साफ रहें, और भुनी हुई सौंफ ईसबगोल तोला तोला भर, वडी इलायची, सुहागे का फूल छै छै माशा, पोस्त का डोडा तीन माशा, इनको बारीक पीसकर छानले, और जितने महीने का बालक हो उतनी ही रत्ती प्रमाण औषधी तीन वार लगावे, । और दो तोला सोडा पाव भर पानी में मिलाकर दिन में आध आध घंटे पर

फुरहरी से बालक के मुहां को धोवै, इस प्रकार चार छै दिन में आराम होजाता है, मुंह को सोडा के पानी से साफ रक्खै, दूध पीने से पहले और पीछे मुंह साफ करै यह सफेद मुहां की मुख्य दवा है, । लाल मुहां तो दांत निकलने के समय होता है, उसमें भुना सुहागा शहत में मिलाकर दिन में कई बार लगावै, और सौंफ ईसबगोल वाली औषधी लगावै, ॥

खांसी—यदि बालक को खांसी आने लगे तो मुलहठी का सत्त एकमाशा, कतीरा १ माशा, खस १ माशा, कीकर का गोंद १ माशा इनको बारीक पीस २ तोला शर्बत जूफामें मिलाकर थोडा थोडा बालक को चटावै, । अथवा काला जीरा पीस चूर्ण बनाकर अच्छे शहत में मिलाकर थोडा २ बालक को चटावै,। एक कहावत है कि, रोग का घर खाँसी—लडाई की जड हांसी, खाँसी कई कारणों से होती है, सरदी से काली वा कुकर खांसी होती है. छूत से भी खांसी हो जाती है, खांसी आने वाले बालक का जूठा खाने पीने से दूसरे बालक कोभी खांसी आने लगती है अथवा खांसी वाले बालक की सांस मुँह में चली जाने से भी खाँसी आने

लगती है ऐसी खांसी बहुतदिनों में अच्छी होती है, खाँसी बढ़जाने से प्रायः बालक मरजाते हैं इस कारण खाँसी की दवा जल्दी करनी चाहिये खांसी बढ़कर दमा होजाती है दमादम के साथ जाती है: जिस खांसोसे बोली बैठ जाती है (बोला नहीं जाता) वह खाँसी बहुत बुरी होती है, इस खाँसी में साँस देर में आता है, गले में साँय सांय शब्द होता है, जो धुयें के लगने से धांस जाय तो तालु सुर्सराने से यह धाँस जाती रहती है। और जो कंठ में गरद गुब्बार चलागया हो और उससे खाँसी उठे तो छाती पर तेल मलने से अथवा कण्ठ सुहलाने से खाँसी जाती रहती है, जो खुश्की से गले में फांस पड़गई हो तो बिहीदाने के लुआव में मिश्री मिलाकर पिलावै, अथवा शहतूत का शर्बत चटावै, वा छाती और गले में तेल मलै, ॥

खाँसी की औषधि—वंशलोचन पीसकर शहत में मिलाकर बालक को चटावै, अथवा अनार का छिलका और नमक पीसकर चटादिया करै, अथवा पान के रसमें रत्ती भर जायफल घिसकर पिलावै। अथवा बैंहडे को मूसल में भूनकर नमक मिलाकर चटावे। जो खांसी सूखी हो तो मुलहटी का सत

चूसने से खाँसी अच्छी होती है बालक को सत दूध में घोलकर चटावै यहां माता का दूध कहा है, बबूल का गोंद भी चूसने से खांसी जाती है, अडूसा पीपरि, ककड़ासिंगी, अतीस पोहकरमूल इनको बराबर लेके पीसै और अच्छे शहत में मिलाकर चटाने से बालक की सब प्रकार की खांसी दूर होती है, । अथवा अतीस, नागरमोथा मुलहठी इनको बराबर ले बारीक पीस छानकर आधरत्ती से चार रत्तीतक बालक की अवस्था के अनुसार शहत में मिलाकर चटावै यदि बालक न चाट सकै तो माता के दूध में मिलाकर चटावै. ।। अथवा कटेली के फूलों के रस में केसर को पीस शहत में मिलाकर चटाने से पुरानी खांसी अच्छी हो जाती है,। अथवा कटेली के फूलों की केसर को शहत में मिलाकर चटाने से खाँसी और ज्वर अच्छा होजाता है। जो खाँसी और ज्वर दोनों हों तो काकड़ासिंगी पीपरि, अतीस को बारीक पीसकर शहत में मिलाकर चटावै,। यदि खांसी ज्वर और वमन हो तो अधभुना सुहागा, कालीमिर्च बराबर लेके पीसै और घीग्वार के रस में चना के बराबर गोलियां बनावै और दिन में दोवार बालक को खिलावै, । यदि खांसी और

श्वांस हो तो मुनक्का, पीपरि, हड, अडूसा, इनको बराबर लेके बारीक पीस शहद में मिलाकर चटावै, यदि खांसी के साथ दस्त हो तो पीपरि, अतीस, मोथा, काकड़ासिंगी को पीस शहद में मिलाकर चटावै, तथा कालीमिर्च, लौंग, बहेड़े, इनको बराबर लेके सब के बराबर कत्था लेके बारीक पीस छान बबूल की छालका काढा बनाय उसी में सबको खरल करै और चार चार माशे की गोलियाँ बनावे। एक गोली मुंह में रखकर चूसै बालक बहुत छोटा हो तो एक गोली को कई बार माता के दूध में घिसकर चटाने से बालक की सब प्रकार की खांसी जाती रहती है, ॥

कान बहना—माता की असावधानी से जो दूध बहकर बालक के कान में जाता है वह भीतर जाने से कान में फुंसियां निकल आती हैं वही बढ़ने पर कान बहने लगता है, यदि औषधी नहीं की जाती है तो बालक बहिरा होजाता है इस कारण माता को चाहिये कि लेटकर दूध न पिलावै, और बालक सोकर उठा हो और वरहा हो तो दूध न पिलावै, बालक को गोद में लेकर दूध पिलाना चाहिये. ॥

कान की दवा यदि बालकका कान बहता हो तो

सुदर्शन के पत्ते का अर्क निकाल कुछ गुनगुना कर कर कान में डालै, ॥ अथवा सोंठ को बारीक पीस कान में डारै । अथवा मसुरके, कथा सु पारी की राख, इनको बराबर ले बारीक पीस कागज की चोंगी बनाय उसमें दवा रखकर कान में फूंकदे जिससे दवा कान में पहुंच जाय, ॥ जो कान बहने के साथ कान में पीड़ा हो तो माता का दूध दोनों समय (सांझ सबेरे) बालक के कान में चार बूंद डालदे, । कडुवे तेल में मोटी सांप जलाकर वही तेल कानमें डाले । बेर के पत्ते को जलाकर उसकी राख कान में डाले । नीमके कोमल पत्तोंका रस शहत में मिलाय कुछ गरम करके कानमें डाले गडुआ में पानी और चावला को डालकर गडुवे का मुंह बन्द कर औटावे उसकी भाफ गडुवे की टोटी के द्वारा कान में पहुंचावे तो पीड़ा शान्त हो जाती है, । अथवा नीम की कोमल पत्तियों को साफकर पानी में उबाल कर उस पानी से पिचकारी के द्वारा कान को धोवै, । जो कान में अधिक पीड़ा होती हो तो मदार की जड़को मीठे तेल में भली भांति औटावे जब जड़ जलजाय तब तेल को छानले और नित्य चार चार बूंद कान में डाले

तो कान की पीड़ा शान्त होजाती है, ॥

मूत्र रोग—जो बालक का मूत्र न उतरता हो तो मूसे की लेंडी मट्ठे में पीस गर्मकर नाभिसे पेड़ू तक लेप करै। अथवा टेसू के फूल पीसकर पिलावे,। अथवा रेहू गरम करके लेपै। और धवं के फूल, काली मिर्च पीपरि, मिश्री इनको पानी में पीस शहत में मिलाकर पिलावै तो मूत्र खुलै, यदि मूत्र स्थान में सूजन हो तो आवाहल्दी पानी में घिस गुनगुना कर लेप करै। यदि मूत्रेन्द्रिय पकगई हो तो सपारी घिसकर लेप करदे ॥

पेट फूलना—यदि बालक का पेट फूलगया हो तो सोंठ, इलायची, सैंधानमक, भारंगी, हींगभुनी, इनको बारीक पीस गरम पानी में पिलावै। अथवा सूखा पोदीना, सफेदइलायची, पीपरि, कालीमिर्च, सौंधानमक, बराबर लेकै पीसै और तीन दिन खिला देवै तो पेट फूलना बन्द होजाता है,। और हींग भूनकर उस कालेप तोंदी के चारों ओर करदेवे,। यदि बालक बहुत छोटा हो तो हाथ आगपर सेक-कर बालक का पेट हाथ से मन्द मन्द सेकदे,। पुरानी रूई के फाहा से बहुत सुहाता सेकदेवे,। दो दो घंटेपर दोदोबूंद पादीना और सौंफका अर्कपिलादेवै

पूरा ज्ञानी नहीं होसकता, गीता शास्त्र के बिना जाने ज्ञान अधूरा रह जाता है, और कोक शास्त्र बिना पढे समझे पशुवत केलि करके प्रायः मनुष्य अपना और अपनी स्त्री का जन्म निरर्थक कर देते हैं, और सन्तान को निर्बल बनाते हैं, कोक शास्त्र के पहले भाग की शिक्षा के अनुसार मनुष्य बर्ताव करें तो मनुष्य काम देव के समान स्वरूप वान् बृहस्पति के समान बुद्धि मान् और भीम के समान पराक्रमी होसकता है, उपरोक्त दोहा के उत्तरार्द्ध के उत्तर में किसी ने एक दोहा कहा है,

दो०—रहनि कबूतर की रहै, गहनि गहै जसबाज ।
अंग अंग मर्दन करै, कहा कोकसों काज ॥

इस दोहे के बनाने वाले ने कोक शास्त्र के भाव को पूर्ण रीति से नहीं समझ पाया, केवल एक ही बात को कोक शास्त्र का तत्व समझकर यह दोहा रच दिया, प्रायः कामी जन यही जानते हैं कि कोकशास्त्र में केलि की रीति को अच्छे प्रकार वर्णन किया है, उसके पढने से हमको विजय सुख का आनन्द प्राप्त होगा, उनका विश्वास ठीक है क्यों कि उस में जहां अन्य सब बातें कही वहां कोकि की रीति भी वर्णन की गई है, परन्तु

कि प्रायः लोग समझ रहे हैं कामी जनों ने कोकार्ज के कोकसार को कुछ का कुछ समझ रक्खा है, यद्यपि के कारामजी के ग्रन्थ में विद्वता भरी हुई है; तथापि कामी जन उसमें न जाने क्या ढूंढ रहे हैं, । प्रायः लोग ऐसे भी हैं कि जिनके पास कुछ अंश लिखा हुआ है वे उसीको असली समझते हैं और उसी के अभिमान में मग्न होकर व्यर्थ कुतर्क करने लगते हैं, अस्तु जो हो — अब हम आगे कोकसार का कुछ सार लिखते हैं । कोकसार के विषय में एक दोहा प्रसिद्ध है, कि,

दो०—बिन पिंगल छन्दहि रचैं, बिन गीता कौ ज्ञान।
बिना कोक जे रति करैं, ते नर पशू समान ॥१

दोहार्थ—बिना पिंगल पढे जो छन्द रचते हैं और बिना गीता पढे जो ज्ञान कथन करते हैं तथा बिना कोक पढे जो रति करते हैं वे मनुष्य पशु के समान हैं. ॥ १ ॥ यद्यपि पिंगल को बिन पढे हुए प्रायः लोग कविता करते हैं. गीता को बिना पढे ही ज्ञान की बातें करते हैं, और कोक को बिना देखेही कामकेलि करते हैं तथापि बिना पिंगल शास्त्र पढे छन्द रचना का पूर्ण नहीं हो सकता; गीता शास्त्र को बिना पढे समझे को

उसमें आसनों के श्लोक अनंगरंग ग्रन्थ के लिखे हुये थे, उन्हीं श्लोकों के अनुसार नग्न चित्र (नंगा तस्वीरें) बनाकर और कोकसार की कुछ औषधी और पद्मिनी आदि स्त्रियों और शशक आदि पुरुषों के चित्र बनाकरछोटी पुस्तक नागरि उर्दूमें अलग अलग छपी थीं उस पुस्तक का छापना अब सरकार की आज्ञा से बन्द करादिया गया है, क्यों कि उसमें अश्लील चित्र छपे थे उस पुस्तक में स्त्री पुरुषों के कुछ लक्षण, नग्न चित्र और कुछ औषधियों के सिवाय और कुछ नहीं था, यद्यपि कल्याण में जो वैद्यक भाग छपा है वह पूरा है, तथापि उसमें जो नग्न चित्र नहीं है इस कारण लोग कुतर्क करने लगते हैं बुद्धिमान जन तो समझ लेते हैं कि जिस पुस्तक से स्त्री पुरुषों का भला हो, अच्छी अच्छी बातें जिसमें लिखी हों. जिन बातों से जन्म सुधर जाय, सन्तान की वृद्धि हो वही पुस्तक ठीक और असली समझना चाहिये. पंडित कोकारामजी ने कोक शास्त्र में कोई अश्लील बात नहीं लिखी वे बड़े शान्त स्वरूप, परोपकारी दयालु. और नीतिज्ञ पंडित थे उनके मुखार विन्द से उच्चारण हुआ ग्रन्थ ऐसा नहीं हो सकता, जैसा

हाराज ने उसको आद्यो पान्त देखकर कहा कि इस ग्रन्थ का नाम हमने कोकशास्त्र रक्खा, और इसमें जो छै गुच्छे हैं वही इसके छै भाग हैं, तबसे कोक मंजरी का नाम कोकशास्त्र प्रसिद्ध हुआ कोकशास्त्र में जो छै भाग हैं वे १ वैद्यक भाग २ शकुन भाग ३ ज्योतिष भाग ४ तंत्र भाग ५ मंत्र भाग, ६ यंत्र भाग नाम से प्रसिद्ध थे, वैद्यक भाग में स्त्री पुरुषों के लक्षण और औषधियां हैं,। शकुन भाग में पक्षियों की बोली आदि द्वारा सकुन वर्णन किये हैं,। ज्योतिष भाग में भूगोल और खगोल विद्या है,। तंत्र भाग में अनेक तंत्र और रसायन विद्या है,। मंत्र भाग में अनेक प्रकार की सिद्धियों का वर्णन है। यंत्र भाग में अनेक प्रकार की कलाओं का वर्णन है,, आज कल पूर्ण ग्रन्थ अनेक यत्न करने पर भी प्राप्त नहीं होता है महाराज की आज्ञा के अनुसार बातें तो पहले ही भाग में आ गईं।

वैद्यक भाग तो लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस कल्याण में छपा है, वैद्य भाग में से कुछ अंश लेकर चौंसठि काम आसनों सहित संग्रह कर कोकसार नाम रख एक पुस्तक हाथ की लिखी जहां तहां मिलती थी

पानी दूध में मिला कर दिन में चार बार पिलावै, तो बालक की संग्रहणी दूर हो जाती है,।

ज्वर और प्यास—जो बालक के दस्तों के साथ प्यास और ज्वर हो तो अतीस, इन्द्रजौ, सोंठ, सम इनका काढा पिलावै तो ज्वर और प्यास दोनों शान्त हो जाते हैं,।

बालकों के हितार्थ अन्य भी अनेक औषधियां प्रसंग वश इस ग्रन्थ में लिखी जा चुकी हैं और आगे भी लिखी जायगी,।

दो०—नारायण धरि ध्यान उर सीताराम सुधार।
लिखि शिशु रोगोपधि कछुक, कियौ पूर्ण अधिकार॥

इति श्री बृहद्रसराज महोदधौ—

द्वितीय भागे बालरोग चिकित्सा

वर्णको नाम तृतीयाऽधिकार॥ ३ ॥

अथ कोकसाराऽधिकार ॥ ॥

दो०- शंभु गौरि पद ध्याय उर, नरायण मनलाय।
कोक ग्रन्थको सार कुछ, लिखतसु अवसरपाय॥

पंडित कोकाराम जी ने एक कोक मंजरी ग्रन्थ रचा उसमें छै गुच्छे लिखे, छै महीने में ग्रन्थ को लिखकर महाराज शंभूसिंह को समर्पण किया, म-

रक्तातिसार यत्न—जो दस्तों के साथ खून आता हो तो पापड़ खार मद् और सोंठ को पानी में घिसकर पिलावै, अथवा कुडा के बीज, सफेद जीरा पानी में पीस मिश्री मिलाकर पिलावै,। अथवा धायके फूल, कमल के फूल, मोचर रस, मंजीठ को पीसकर साठी चावल के माड में देवै,।

आँव और रुधिर युक्त अतिसार का यत्न—सोंठ का मुरब्बा खिलावै,। अथवा मरोरफली सेंधा नमक के साथ घिसकर देवै,। अथवा कच्ची पक्की सोंठ का चूर्ण शकर में मिलाकर देवै तो आँवलोहू मिले हुए दस्तों का आना बन्द होजाताहै,।

पेट चलना—जो पेट बहुत चलता हो तो बेल-गिरी, बड़ी पीपरि, कत्था, धाय के फूल, लोध इनको पीसकर शहत में मिलाकर चटावै,। अथवा सोंठ अतीश; मोथा इन्द्रजौ, इनका काढा देवै। अथवा कुडा के बीज का ककासिगी. हलदी बड़ी हड, इनको पानी में भिगोकर वह पानी पिलावै. तो पेट चलना बन्द हो जाता है,।

संग्रहणी का यत्न—एक परात में सबागेर पानी की पतलीधार आधी छटाक चूना पर छोडैं जब चूना घुलजाय और पानी थिराजाय तब वह निर्मल

के रोकने का उपाय नहीं करना चाहिये, उस समय दस्त रोकने से हानि पहुंचती है। अतिसार के कई भेद हैं १ ज्वर तिसार, आमातिसार, ३ रक्तातिसार, । जो बालक को दस्त आते हों और ज्वर भी होतो उसको ज्वरातिसार कहते हैं, । जो दस्त के साथ आंव आवै तो उसको आंव अतिसार कहते हैं, । जो दस्त आने के साथ रुधिर आजाता होतो उसे रक्तातिसार कहते हैं. ।

ज्वराऽतिसार यत्न—जो बालक को दस्त आते हों और ज्वर भी हो, तो बेलगिरी इन्द्रजौ, पठानी लोध, धायके फूल, नेत्र बाला, धनिया, अतीश, इनका दो माशे भर का काढा देने से ज्वरातिसार रोग अच्छा हो जाताहै । अथवा पीपरि, अतीश नागर मोंथा, काकड़ासिंगी इनको कूट छान चूर्ण कर शहत में तीनबार दिनमें चटावै इससे खांसी भी जाती रहती है,

आमातिसार यत्न—जो दस्त में आंव आता हो तो भुनी हींग, अतीश, सोंठ, चीता, कुड़ा, मोथा, इनका चूर्ण गरम पानी के साथ देवैं. अथवा पीपरि, वायविडंग अजमोद इनका बारीक चूर्ण चावल के पानी में देवै ।

पिला देवै. ॥

ज्वर—ज्वर आने के अनेक कारण होते हैं ज्वर आने पर शीघ्र उपाय करना चाहिये क्यों बालक का चित्त बहुत कोमल होता है, दूध पिलाने वाली को चाहिये कि जब बालक के ज्वर हो तब बहुत हलका भोजन करै. नीम पर की गिलोय का काढा पीवे, अपने दूध नहो तो बकरी का दूध बालक को पिलावै, । हडकी छाल, परं वलके पत्ते, नागरमोथा मुलहठी इनको बराबर लेके १ माशे भर का काढा पिलावै और आपभी पीवै तो ज्वर कफ सप्ताह में में समूल नष्ट हो जाता है, । अथवा बालछड, मुलहठी, खील, महुवा इनको पीस कर चूर्ण करै और शहद के साथ देवे, । बालक के ज्वर के लिये तुलसी की पत्ती से बढकर अन्य कोई औषधि नहीं है, सो तुलसी के गुणमें लिख चुके हैं, ॥

अतीसार—अतीसार (दस्तों का आना) बहुत बुरा रोग है सब रोगों की जड पेट का बिगड जाना है, अतीसार रोग कई कारणों से होता है, सरदी से, गरमी से, और अजीर्ण से . बालकों को दस्त आने लगते हैं दांत निकलने के समय तो प्रायः सब बालकों को दस्त आते हैं उन दस्तों

कोकशास्त्र को पढ़ कर उसका आशय भलीभांति समझे बिना समझने में भेद हो जाता है, कुछका कुछ समय झलिया जाता है इस कारण कोक-शास्त्र का पढाना, जानना और समझना परम आवश्यक है, परमात्मा ने इस संसार में कामदेव सबसे अधिक बलवान् बनायाहै: जिसने प्रत्येक नर नारी को अपने वश में कर रक्खा है जैसा कि कहा है कि,।

शम्भु स्वयम्भु हरयो हरिणे क्षणानांये नाक्रियन्त सततंगृह कर्म दासाः । वाचामगोचर चरित्र विचित्रतायतस्मै नमो भगवते कुसुमायुधाय ॥१॥

अर्थ—जिसने अपनी क्रिया से शिव, ब्रह्मा और विष्णु को मृगनियों के गृहकर्म निमत्त निरन्तर दास बना रक्खा है, वाणी के द्वारा जिसका विचित्र जरित्र वर्णन नहीं किया जा सकता, ऐसे कामदेव भगवान को नमस्कार है, ॥ १ ॥ जिसके प्रभाव से सुन्दर सन्तान और परमानन्द रूप विषय सुख प्राप्त होता है इस सुखको जिसने नहीं जाना, उसका जीवन जगत में व्रथा है, । जैसा कि रम्भा ने मुनिवर शुकदेवजी के प्रति उत्तर दिया है, कि

'आनन्द रूपतरुणी नतांगी सद्धर्म संसाधन सृष्टिरूपा । कामार्थदा यस्य गृहे न नारी वृथागतं तस्य नरस्य जीवितम् ॥२॥

अर्थ—आनन्द स्वरूपिणी. युवती; कोमलांगी, पतिव्रतादि श्रेष्ट धर्मों का साधन करने वाली, और सन्तान उत्पन्न करने वाली तथा काम और अर्थ को देने वाली स्त्री जिसके घर में नहीं उस मनुष्य का जीवन संसार में वृथांही गया, ॥२

कविवर कालिदासजी ने शृंगार तिलक में कहा है, ।

'कहू द्वे पद्मणा लसास्य कमलं लावण्यली लाजलं श्रोणीतीर्थ शिलाच नेत्र शफरं धम्मिल्ल शैवालकम् ॥३॥ कान्ता या स्तन चक्रवाक युगलं कन्दर्पवाणानलै र्दग्धानाम वगाहनाय विधि नारम्यं सरो निर्मितम् ॥३॥

अर्थ—दोनों भुजा कमल की दंडी हैं, मुख ही कमल है, जो सुन्दरता है वही लीलारूप जल है, जंघायें सीढ़ीहैं.नेत्र मछली हैं, केश सेवार हैं, दोनों कुच चकई चकवा हैं, ऐसा स्त्री रूप सुन्दर सरोवर विधाताने कामदेव के वाणरूपी अग्नि से दग्ध हुए जनों को स्नान करने के निमित्त बनाया है ॥

विषयी लोग तो विषय सुख को ही परम सुख

मानते हैं, परन्तु बहुत विषय सुखभोगने से अनेक प्रकार के रोग प्रगट हो जाते हैं, ।

कामदेव सम्बन्धी वार्ताओं को जानलेने का प्रयोजन यह नहीं है, कि काम के वशहोकर निरन्तर उसी में मग्न हो जावै किन्तु मुख्य पिरोजन उसका यह है कि ग्रन्थ में कहेनुसार वर्ताव करते हुवे अपने शरीर की रक्षा करै और कामको अपने वशमें रखने का सर्वदा प्रयत्न करै, ॥

वीर्य रक्षा—कोकशास्त्र के प्रथम भाग का सारांश यह है कि ब्रह्मचर्य पूर्वक वीर्य की रक्षा सभी करना चाहिये. केवल सन्तान निमित्त स्त्री प्रसंग करै, सो भी नियमानुसार उक्त दिनों में करना चाहिये. नियमानुसार वर्ताव करने से शरीर आरोग्य रहता है, सुन्दर सन्तान होती है, स्त्री पुरुष दोनों परम सुखी रहते हैं, वीर्य रक्षा करने से शरीर में बल, पराक्रम और सौन्दर्य और आयु की वृद्धि होती है. वीर्य ही मनुष्य के शरीर का पूर्ण अंश है. आहार किया हुआ अन्न क्रमशः एक महीने में वीर्यबनता है, और वीर्यही में जीव का निवास है, जैसा कि श्रुत में लिखा है कि जीवो वसति सर्वस्मिन्देहे तत्र विशेषतः वीर्ये रक्ते मले यस्मिन् क्षीणेयाति क्षयं क्षणात् ॥४

जीव सब शरीर में वास करता है, तहां विशेष करके वीर्य, रुधिर और मज्जा में विशेषता से रहता है, जिनके क्षीण होजाने से जीव क्षण भर में देह से निकल जाता है, ॥ ४ ॥ विचारना चाहिये कि एक महीने में बनाहुआ वीर्य जो शरीर में बल पराक्रम तेज को बढाता है, प्राणोंको स्थिर करता है, आयुको बढाता है. उसी वीर्य का क्षणमात्र के विषय सुख के लिये व्यर्थ नष्ट करदेना कितनी भारी मूर्खता का काम है, । ऋतु काल में अपनी ही स्त्री के साथ सम्भोग करना सन्तानोत्पत्ति निमित्त उचित है. यही पूर्वाचार्यों का मत है, इसी से पूर्वसमय के लोग अधिक बलवान्, कांतिमान्, तेजस्वी और बडी आयु वाले होते थे, और उनका अभिमान था कि हम इच्छानुसार सन्तान उत्पन्न करेंगे. गर्भाधान का मुहूर्त ज्योतिषी पंडित से पूछकर गर्भाधान करते थे, और अपनी ही स्त्री में मग्न रहते हुये सुख से अपना जीवन व्यतीत करते थे, कमसे कम बीस वर्ष तक पुरुष और चौदह वर्ष तक स्त्री को ब्रह्मचर्य व्रत धारण करना चाहिये वीर्य और रज की रक्षा रहने से सन्तान भी सन्दर होता है, और बहुत कालतक सुरक्षित रहता है, इन बातों को समझकर

भली भांति वीर्य की रक्षा करनी चाहिये, वीर्य की रक्षा करने से वीर्य शुद्ध रहता है जिस प्रकार अच्छा बीज और अच्छे खेत के होने से धान्य आदि पदार्थ अच्छे प्रकार उत्पन्न होते हैं उसी प्रकार रज और वीर्य के उत्तम होने से सन्तान भी परमोत्तम होती है. आजकल समय ऐसा पलटगया है कि

दो०—बैठे जोनी डारपर, काटत सोई डार ॥
जियनमरनका नहिं डरत, यह गति है संसार॥

इस दोहे के अनुसार वर्ताव करते हुये सैकड़ों छुवाली जन अपने जीवन को निरर्थक करते हैं, उनकी बुद्धि से किसान की बुद्धि अच्छी है जो अपने ही खेत में बीज डालता है जो मनुष्य अन्य क्षेत्र में अपने वीर्य को कुसमय नष्ट करता है, वह पशु से भी बढकर है. क्यों कि पशुओं में भी नियम है; ॥

कातिक कुत्ता माघ बिलाई, चैत चिड़ी बैसाख गधाई

परंतु मनुष्यों के लिये जो ऋतु काल का नियम है वहआगे लिखा जायगा क्यों कि वृक्ष, आदि जड पदार्थ भी जब नियमानुसार चलते हैं तब सब प्राणियों से उत्तम मनुष्य क्यों न नियमानुसार वर्ताव करें, । शरीर में बल, वर्ण (रंग) रुधिर,

ओज, तेज, चंचलता, और स्मरण शक्ति का तीव्र होना यह वीर्य शक्ति का गुण है। वीर्य रक्षा की इच्छा वाले पुरुषों को योग्य है कि वीर्य रक्षा के गुणों का सर्वदा स्मरण करते हैं, और ध्यान में रक्खें कि वीर्य ही देह में प्राणों की रक्षा करने वाला है चित्त को चंचल न होने दें, यदि पढे हों तो ज्ञान युक्त पुस्तकों को पढें, प्रातः सायं टहलें, परन्तु व्यर्थ स्थान में न ठहरें, कुरोगियों से बात न करें, शीघ्र पचने वाला भोजन करें; काम वासना की इच्छा कदापि न करें, इससे बढकर वीर्य रक्षा का दूसरा उपाय नहीं है

नारी भेद—१ पद्मिनी, २ चित्रिणी, ३ शंखिनी, ४ हस्तिनी, ये चार प्रकार की स्त्रियां होती हैं, ॥

पुरुष भेद—१ शश, २ मृग, ३ वृष, ४ अश्व, ये चार प्रकार के पुरुष होते हैं, ।

पद्मिनी लक्षण—सवैया—कंज से लोचन अंग सबे, मकरन्द सी सुवास रहै तन छाई । चन्द सो आनन, कुन्दन सो तन बैन की भूमि सदा सुखदाई॥ श्वेत दुकूल रुचै सुर पूजन है कविराज सुबुद्धि सुहाई । रूपसि या सो हिया हुलसै लखि ऐसी तिया अति पुण्य सों पाई १॥

कमल समान नेत्रों वाली, सुन्दर अंगो वाली, सुडौल, गजके समान मन्द गति वाली, सुगन्धित और कोमल शरीर वाली, मृदु वचन बोलने वाली चन्द्रमा के समान गोरे मुखवाली बुद्धिमती, सघन स्तनों वाली, गुरु देवताओं की पूजा में तत्पर रहनेवाली सफेद वस्त्र धारण करनेमें रुचिवाली, थोड़ा भोजन करनेवाली, बड़े केशों वाली, प्रसन्न रहने वाली, सुशीला, दूसरे का हित चाहने वाली, ये लक्षण पद्मिनी स्त्री के जानना चाहिये, ।

चित्रिणी लक्षण—सवैया—ऊँचे उरोजविलोचन चंचल लोक की लीक नजात है जानी । कारे महा सटकारे हैं केश निकारे मयूरन की कछुवानी ॥ गन्ध लियो मधुको सथि सुन्दरि मैन के मन्दिर मैन को पानी । मित्रको चित्र लखे कविराज विचित्रिणी चित्रिणी ऐसी बखानी ॥२॥

दो०—पद्मिनी चित्रिणि एकसम, भेद एक तिन माहिं
चित्रिणि तहां हँसौड अति, वह हँसौड बहुनाहिं

कठोर और घने कुचों वाली, रति रसको जानने वाली, देखने में मनोहर शरीर वाली, कमल समान नेत्रों वाली, सुन्दर नासिका वाली, सुशीला, कोमलांगी, अद्भुत सुन्दरता से युक्त मुखवाली, न

बहुत छोटी, न लंबी चिकने शरीर और विचित्र गुणोंवाली, दया और क्षमावाली, देवताओं की पूजा में तत्पर रहनेवाली, गुरुजनों और सत्पुरुषों का यथोचित सत्कार करनेवाली, ये लक्षण चित्रिणी स्त्री के जानना चाहिये. पद्मिनी चित्रिणी के लक्षण एक समान हैं भेद इतना है कि चित्रिणी बहुत हँसोड होती है पद्मिनी बहुत हँसोड नहीं होती,

शंखिनी लक्षण—सवैया—सूखि रह्यो तन मांस ने है. निकसीसी परै न सखी न खरी है। रोस बड़ौ कुच ओछन सों कछु पीपरि के फल हाड परी है॥ सारी धरे रंगराती मनोज भुनाती विगंधिन भूमि भरी है। शंखिनी सोंकरतार असंखन शंखिनी सों करतार करी है. ॥ ३ ।,

बड़े बड़े नेत्रों वाली सर्वांग सुन्दरी, हाव भाव कटाक्षादि में रसीली, गुणवती, शीलवती, सुशोभित कंठवाली. काम. केलि में चतुरा, और लंबी ये लक्षण शंखिनी स्त्री के जानना ॥

हस्तिनी लक्षण—ईक्षण हैं लघु तीक्षण केश सुवेश नये कटु गन्ध सदाई। कान दये कर कान सुनै सुनि कानन शेष अनंद सुहाई॥ मोटी महा कविराज कहा कहौं चाल चलै नित मन्द सुहाई।

और निहुई सब छोडिदई करि नीकलई करि नीकी निकाई ॥ ४ ॥ शुशीला, कामको अत्यन्त अभिलाशा वाली, रति केलि में अलिलीन, मोटे और नीचे नितम्ब वाली, मोटी अंगुलियों वाली, मोटे होठों वाली, मोटे अथवा वडे कुचों वाली, बहुतबात करने वाली॥ ये लक्षण हस्तिनी स्त्री के जानना॥ पद्मिनी में कमल की सी सुगन्ध चित्रणी में शहत की सी गन्ध, शंखिनी में क्षार की सी गंध, हस्तिनी में मदिरा कीसी गंध होती है, ॥

शशकपुरुष लक्षण

पद्य शशक शरीर शुभअतिकोमलीमलदयाअतिभारी
...न्त चित्त गम्भीर साधु शुभ लक्षण शुभ आचारी
सत्य वचन रुचि गुणी दयाकर, प्रियवादी प्रणवारी।
पूजारत सत मत उद्योगी, काम स्वल्प अति भारी॥
परतिया त्यागी सदा जो सत्य वचन भाषत रहता।
शशक पुरुष संसार महं, सत जीवन को सुख लहत॥

शशक संज्ञा वाला पुरुष सुन्दर कोमल शरीर, शुभलक्षण युक्त न बहुत छोटा,न लंबा, गुरु ब्राह्मण और साधु सज्जनों का भक्त, परोपकारी, दयालु, मधुरभाषी, सत्यवादी, आदर सत्कार करने में निपुण, परतिय त्यागी, देव पूजक और गुणी होता है॥

मृग पुरुष लक्षण पद्य—

मृगके दृग मृग सम सुन्दर अति, कोमल कनक शरीरा।
सम भुज बदन हास्य मुख दीरघ दया चित्त मति धीरा॥
नृत्य मान प्रिय रुचि अति जाकी, गिठबोला अति प्यारा।
कृष्ण खेल रत चित अति प्रेमी, नारि सुरत सतमारा॥
श्रद्धा वचन गुरू प्रण पालन मित्र सनेह दुलारा।
मृग के लक्षण कहे प्रेमयुत, कोक कला आधारा॥२॥

मृग संज्ञा वाला पुरुष विशाल नयन, मधुरभाषी, सुन्दर देह चंचल बुद्धि, प्रसन्न वदन, परोपकारी सत्यवादी, बलवान पद्य गंधवाला बहु भोजी, गान नृत्य प्रिय, देव ब्राह्मणादि भक्त, प्रीतिवान् और गुणी होता है।

वृषभ पुरुष लक्षण।

दो०—पूत गन्ध तन जासुके, युग पग होवै छोट।
लाज हीन तिय प्रिय पुरुष वृषभ सुतनु को मोट॥१
तिय लखि जाके चित्त में, उमगत प्रेम अधीर।
मतवारौ कामी अधिक, परतियगति गम्भीर॥२।
पाप कर्म निर्भय करत, स्वल्पनीदसों सुख लेहत।
वृषभ पुरुष संसार मंह मित्रन सों रत नहिं रहत॥३।

वृषभ संज्ञक पुरुष सब शरीर से सुडौल, शीघ्र काम के लिये चैतन्य, कोमल अंगवाला, दोनों पांव

छोटे, हृष्ट पुष्ट शरीर, लज्जा रहित, पर स्त्री गामी और पाप कर्म में निडर होता है, ।

अश्व पुरुष लक्षण— पद्य—

अश्व पुरुष आलसी महा, निद्रा मतवारो ।
लाजहीन अति खोट, क्रूर कर्षन पन हारो ॥
श्याम वर्ण बुधिहीन, धर्म अरि निपट कुकर्मी।
परतिय लंपट छली, महाकामी हठ धर्मी ॥
तकपरतिय निशदिन रमत, व्याकुलसो अतिहीरहत
क्रूर स्वभाव उतावला, अश्व न यश भूपर लहत

अश्व संज्ञक पुरुष छली, कपटी, क्रूर स्वभाव, परतिय गामी, मायावी' कठोर अंगों वाला, सदा निर्भय रहने वाला, झूठा, झूठे व्यवहार वाला, लंबे शरीर वाला, दरिद्री और औगुणी होता है, ॥

देव आदि पुरुष भेद—१ देव, २ गन्धर्व, ३ यक्ष ४ राक्षस, ५ पिशाच , ये पांच प्रकार के पुरुष देव आदि लक्षणों वाले होते हैं ॥

देव पुरुष लक्षण— पद्य—

सत्व गुणी ज्ञानी दानी अरु सत्य प्रिय बलवाना
सत्य मधुर भाषी शुचि कोमल, सुन्दर रंग समाना ॥
काम क्रोध से रहित कान्ति युत भोजन मधुर प्यारे।
लखी भुजा सुगात्र युक्त लघु नयनकमल अनिआरे।

मृगगति सम चंचल नारायण. भक्त मनोहर रूपा।
घन समान गम्भीर नाद तेहि साधु स्वभाव अनूपा॥
ये लक्षण शुभ होंय मनुजमें जानिय देव समाना।
काम शास्त्र रतिशास्त्रादि देखि सुरनर कोक बखाना। १

गंधर्व पुरुष लक्षण-पद्य-

सतरज गुण युत श्याम रंग अरु चंपक वर्ण समाना।
रूप शील शुचि शब्द मनोहर लागत अतिप्रिय गाना॥
खट्टे अरु मधुरे भोजन में, अति रुचि कोमल वैना।
मित्र भाव मानत सब ही सों, मृगवत सुन्दर नैना॥
ये लक्षण गन्धर्व मनुजके, जानहु सकल सुजाना।
कोकशास्त्र रति शास्त्रआदेलखिपंडितके कबखाना। २

यक्ष पुरुष लक्षण-पद्य-

पुष्ट शरीर दीन रक्षक अरु दया दान गुणधामा।
स्थूलोदर अरु कंठ जंघ युग रक्त वर्ण अभिरामा॥
दृढ मति रक्त नेत्र धनयुत अरु रजतम गुण लखवाना।
सकल अंग सामान्य रंग कछु आंत रव सिंह समाना।
ये लक्षण सब यक्ष मनुज के. जानहु सकल सुजाना।
काम शास्त्र रति शास्त्र अदि लखि पंडितकोकबखाना।

राक्षस पुरुष लक्षण-पद्य—

रक्त श्याम रंग अरु मुख दाढे जासु भयंकर घोरा।
तमोगुणी कामी क्रोधी अरु निरदय चित्त कठोरा॥
लंब स्थूल अंग सब दुगात नेत्र बिडाल समाना।

मद्य पानरत नित सुर मरते मानत द्वेष महाना ॥
ये लक्षण सब राक्षस नरके, जानहु सकल सुजाना ।
काम शास्त्ररति शास्त्र आदिलखि पंडित कोक बखाना

पिशाच पुरुष लक्षण—पद्य—

बहु भोजी बहु पाप कर्म रत क्रोधी दया विहीना ।
क्रूर स्वभाव गन्ध बकरी सम अतिशय वेष मलीना॥
अतिकटु अम्ल वस्तु भोजीअति,शब्दकाकसम ताको
करत रहत बिश्वास घात सो मन मलीन नित जाको॥
ये लक्षण सब पिशाचनरके जानहु सकल सुजाना ।
कामशास्त्र रतिशास्त्र आदि लखि पंडितकोक बखाना

देवी आदि स्त्री भेद व—लक्षण—

१ देवी २ अप्सरा, ३ याक्षिणी, ४ राक्षसी, ५ कृत्या, । देव पुरुष के समान लक्षणों वाली देवी, गन्धर्व पुरुष के समान लक्षणों वाली अप्सरा, यक्ष पुरुष के समान लक्षणों वाली याक्षिणी, राक्षस पुरुष के समान लक्षणों वाली राक्षसी, पिशाच, पुरुष के समान लक्षणों वाली स्त्री कृत्या कहाती है. । कृत्या स्त्री का विशेष लक्षण यह है कि मोटी, क्रोधरूपा, कलह कारिणी. मोटे होंट. छोटी नासिका, श्याम वर्ण, ऊंचा उदर, सूखी कमर, ढीले स्तन, तमोगुणी होती है, ।

संयोग ।

एक लक्षण वाले पुरुष स्त्री का संयोग ठीक होता है, विरुद्ध लक्षण वाले स्त्री पुरुष के संयोग से परस्पर ईर्षा, कलह, द्वेपभाव होने से अच्छाई नहीं होती है. विरुद्ध संयोग ही अनर्थ का हेतु है, भावार्थ यह है कि यदि देव गन्धर्व लक्षण वाले पुरुष का देवी व अप्सरा लक्षण वाली स्त्री के साथ विवाह होता है तो आनन्द से दिन व्यतीत होते है, और यदि देव गंधर्व पुरुष हो और राक्षसी अथवा कृत्या स्त्री हो तो विवाह होने से दुःख होता है, इस कारण समान लक्षण वाले स्त्री पुरुष का विवाह सम्बन्ध करना उचित है, अन्यथा दुःख शोक, कलह उत्पन्न होकर दोनोंका जन्म निष्फल जानना चाहिये, ।

वात प्रकृति परुष लक्षण—

दो०—कृशतन मोटे केश अति, सूखा होय शरीर ।
चंचल वाचाली घना, वात मनुज मतिधीर ॥ १

पित्त प्रकृति पुरुष लक्षण—

तरुणाइ में श्वेत हों, केश बुद्धि गम्भीर ।
क्रोधी प्रस्वदी महा, पित्त मनुज अति वीर २

कफ प्रकृति पुरुष लक्षण—

दोहा—चिक्कन केशी स्थूलतनु, बल युत बुद्धिगंभीर।

कफज मनुज लक्षण यही स्वप्न लखै गुनार ॥ ३

बात प्रकृति स्त्री लक्षण —पद्य—

बात प्रकृति वाली नारी का नहिं कोमल कोउ अंग ।
रूखे स्वल्प केश चंचल चित्त, अति प्रलाप बहुरंग ॥
कारी आंख साख नहिं जाकी; भोजन करत अघाई ।
श्याम धूसरा अंग मात कर, सुरत चित्त अधिकाई ॥
स्वप्न गगन चर बातें रूखी करै प्रीति नाह धारै ।
बात प्रकृति नारि के लक्षण, ऐसे कोक उचारै ॥ १ ॥

पित्त प्रकृति स्त्री लक्षण-पद्य—

गोरा रंग अँग उजलासा लोचन चंचल स्यानी ।
क्षणमें होय प्रसन्न क्षण रु में, रूठि रहै दीवानी ।
पीन पयोधर कुच कठिनाई रति सों अति हित जाके ।
कृश तनु कछुक स्थूल द्रविणता स्वल्प संगरतताका॥
प्रीति रीतिभल रखत सबन सों,क्रोध स्वभाव सुभारी ।
पित्त प्रकृतिकामिनि इहि भांती कामकला आगारी २

कफ प्रकृति स्त्री लक्षण—पद्य –

कोमल गात दाँत चिकने अति,नख शिख लोचन श्वेत।
माननीय मृदतत्त करै अनुराग सुदृढ कर हेत ।
श्याम रंग मृदु अंग मनोहर,लवण सुछवि अतिभारी।
प्रीति रीतिअनुराग राग चित्त स्वल्प सुरत मतवारी ।
अति हित चित में चाव जासके केलिकाम चतुराई ।

श्रम प्रकृति कफ कामिनि प्यारी, प्रीति करत सुखदाई २

प्रकृति के अनुसार संयोग।

एक ही प्रकार की प्रकृति वाले स्त्री पुरुष का जोडा ठीक होता है, जिनके रूप, रंग, अवस्था में कुछ अन्तर हो, परन्तु स्वभाव और गुण एक ही हो तो जोडा ठीक मिल जाताहै, ॥

पद्मिनी चित्रिणी भेद दोहा –

पद्मिनि की पहिचानि यह नहिं परसों कछु प्रीति ।
बात करत में नहिं हँसै, कोक वचन परतीति १
करै प्रेम पर पुरुपसों, बात करत मुसक्याय ॥
चतुर चित्रणी नारि जग, कह्यो कोक समुझाय॥ २
पद्मिनि चित्राणि नारि को, इतनोइ अन्तर मान ।
चित्राणि हांसि बातैं करै, पद्मिनि हंसै सुजान ॥ ३

शंखिनी हस्तनी भेद – दोहा –

अंग स्थूल सुदुहुन के, अन्तर एतो जान ।
शंखिनिकी पतरी कमर, हस्तिनि मोटी जान ॥१॥
बात करत में हांसिपरत, शंखिनि कहिये ताय ।
हांसि हांसिके बातैं करै, हस्तिनि सोइ कहाय ॥२॥

स्त्री पुरुष का जोडा—पद्मिनी स्त्री, शशक पुरुष का जोडा प्रसन्न चित्त रहता है,। चित्रिणी स्त्री, मृग पुरुष, और शंखिनी स्त्री। वृष पुरुष, तथा

हस्तिनी स्त्री, अश्व संज्ञक पुरुष का जोड़ा प्रसन्नता पूर्वक रहता है; । समान लक्षण वाले स्त्री पुरुष की सन्तान अच्छी होती है, और वेमेल स्त्री पुरुष के संयोग से उत्पन्न सन्तान विद्रुत अंग वाली होती है, ।

पद्मिनी शशक संयोग—पद्मिनी स्त्री, शशक पुरुष के संयोग से उत्पन्न पुत्रसुशीला व धर्मात्मा होता है, और कन्या धर्म में तत्पर व पतिव्रता होतीहै

पद्मिनी मृग संयोग—पद्मिनी स्त्री मृग पुरुष के संयोग उत्पन्न पुत्र महावली, सहनशील व दृढ़ होता है, । और कन्या अल्प आयु. व धन, धान्य आदि से पूर्ण होती है, ।

पद्मिनी वृष संयोग—पद्मिनी स्त्री वृष पुरुष से उत्पन्न पुत्र वैल के समान मस्त व दुराचारी होता है और कन्या दुराचारिणी व कलंक भागिनी होती है, ।

पद्मिनी अश्व संयोग—पद्मिनी स्त्री अश्व पुरुष से उत्पन्न पुत्र राजयक्ष्मा रोगी व दुःखी होता है और कन्याधर्म में तत्पर व शुद्धि बुद्धि वाली होती है ।

चित्रिणी शशक संयोग—चित्रिणी स्त्री शशक पुरुष से वत्पन्न सुशील व स्वल्प आयुवाला होता

है और कन्या वृद्ध पति वाली व दुःख भोगने वाली होती है,।

चित्रिणी मृग संयोग—चित्रिणी स्त्री मृग पुरुष से उत्पन्न पुत्र रूपवान व धनवान होता है, और कन्या महासुन्दरी व परमशीलवती होती है,।

चित्रिणी वृषभ संयोग—चित्रिणी स्त्री वृषभ पुरुष से उत्पन्न पुत्र अकाल मृत्यु को प्राप्त होता है और कन्या गर्भ में ही मरजाती है,।

चित्रिणी अश्व संयोग—चित्रिणी अश्व पुरुष से उत्पन्न पुत्र अल्पजीवी होता है और कन्या एक नेत्र वाली व श्वेत वर्ण होती है,।

शंखिनी शशक संयोग—शंखिनी स्त्री शशक पुरुष से उत्पन्न पुत्र धर्मात्मा होता है और कन्य दीर्घ आयुवाली व क्रोधवाली होती है।

शंखिनी मृग संयोग—शंखिनी स्त्री मृग पुरुष से उत्पन्न पुत्र दयाशील आदि शुभ गुणों से युक्त होता है, और कन्या बुद्धिमती, सुन्दरी, गुणवती, व पुत्रपौत्रादि को बढानेवाली होती है,।

शंखिनी वृष संयोग—शंखिनी स्त्री वृष पुरुष से उत्पन्न पुत्र बडाबली व विशाल भाल तथा महाबाहु होता है और कन्या पर पुरुष गामिनी व चंचली चित्तवाली होती है,।

शंखिनी अश्व संयोग—शंखिनी स्त्री अश्व पुरुष से उत्पन्न पुत्र जन्मान्ध व दुर्बल होता है, और कन्या पति घातिनी व व्यभिचारिणी होती है, ।

हस्तिनीशशक संयोग—हस्तिनी स्त्री शशक पुरुष से उत्पन्न पुत्र अल्पायु व निर्बल होता है, और कन्या अल्प आयुवाली व रूपवती होतीहै, शशकसे हस्तिनी तृप्त नहीं होती और प्रसन्न नहीं रहती है. यह संयोग ठीक नहीं, ।

हस्तिनी मृग संयोग—हस्तिनी स्त्री मृग पुरुष से उत्पन्न पुत्र पशुवत् आचारण वाला होता है. और कन्या पतिघातिनी व महा व्यभिचारिणी होतीहै

हस्तिनी वृषभ संयोग—हस्तिनी स्त्री वृषभ पुरुष से उत्पन्न पुत्र महाबली योधा बहुरा चारी होताहै और कन्या पर पुरुष गामिनी होती है, ।

हस्तिनी अश्व संयोग—हस्तिनी स्त्री अश्व पुरुष से उत्पन्न पुत्र शूरवीर और महाबलवान होता है और कन्या सदैव पर पुरुष से रमण करने वाली होती है ।

अवस्था स्त्री सोलह वर्ष की तरुणी, पचास वर्ष की प्रौढ़ा तदुपरान्त बृद्धा कहाती हैं, बृद्धासे रमण नहीं करै, बृद्ध पुरुष तरुणी से रमण करै तो तरुण हो जाते हैं, तरुण पुरुष बृद्धासे रमण करै तो

वृद्ध के समान हो जाता है, नर नारियों के शरीर सम्बन्धी लक्षण सामुद्रिक शास्त्र में लिखे हैं, उस में देख कर जान लेना चाहिये. ॥

परस्पर प्रीति--स्त्री पुरुष में परस्पर प्रीति के विना सुख प्राप्त नहीं होता प्रीति चार प्रकार की होती है, १ नैसर्गिकी, २ विषयजा, ३ समा, ४ अभ्यासिकी

विवाह होते ही जो प्रीति स्त्री पुरुष में होजाती है और दिन२ बढ़ती है वह नैसर्गिक प्रीति कहाती है, और भोज्य पदार्थ देने से जो प्रीति होती है वह विषयजा कहाती है. तथा योग्य गुणों के मेल से जो प्रीति होती है वह समा कहाती है एवं गाने बजाने और पूजनादि तथा मैथुनकर्मादि से जो प्रीति होती है वह अभ्यासिकी कहाती है,। पद्मिनी और चित्रिणी स्त्री परम प्रीति और अच्छे वर्ताव से प्रसन्न रहती है, शंखिनी स्त्री उत्तम वस्त्र भूषण तथा नवीन२ वस्तु लाकर देने से प्रसन्न रहती है और हस्तिनी स्त्री भाँति २ के भोजन व उत्तम वस्त्र भूषणों से प्रसन्न रहती है, भाग्याधीन जैसी स्त्री से संयोग्य होजाय उसको प्रसन्न रखकर परस्पर प्रीति बनाये रक्खे,।

काम देव का वास--पं० कोकाराम जीने कामका वास कृष्ण पक्ष और शुक्ल पक्ष भेद से तिथ्यनुसार

वर्णन किया है, कृष्णपक्ष में ऊपर के अंगों से नीचे को उतरता है और शुक्ल पक्षमें नीचे के अँगों से ऊपर को चढता है, । यहां तिथि जानने में अनेक मत हैं परन्तु जिसदिन स्त्री रजस्वला हो उस दिन कृष्ण पक्षकी प्रतिपदा मानने में बहुमत हैं. जिस तिथि में जहां काम का बास हो उस अंग के स्पर्श टगहन, मर्दन, चुम्बन आदिश कामदेव चैतन्य होता है, । कृष्ण प्रतिपदा और शुक्ल पूर्णिमाको काम का मस्तक में जानना, । कृ० द्वितीया, शु० चतुर्दशी को नेत्रों में, । कृ० तृतीया, शु० त्रयो-दशी को नीचे के होठों में, । कृ० चतुर्थी, शु० द्वादशी को कपोलों में, । कृ० पंचमी, शु० एका दशी को कंठ में, । कृ० षष्ठी, शु० दशमी को बगल में, । कृ० सप्तमी, शु० नवमी को कुचों में, । कृष्ण शु० अष्टमी को हृदय पर काम का बास जानना, । कृ० नवमी, शु० सप्तमी को नाभि में । कृष्ण दशमी शुक्ल षष्ठी को कटि में । कृ० एका दशी, शु० पँचमी को योनि में, । कृ० द्वादशी शु० चतुर्थी को दोनों जंघाओं में । कृ० त्रयोदशी शु० तृतिया को पिंडुलियों में, कृ० चतुर्दशी शु० द्वितीया को पांव के तलुओं में, । कृ० अमावास्या

शु० प्रति पदा को बायें पावकी अंगुलियों में काम का वास जानना, ॥

आसन—अनंग रंगका व्यर्थ मैथुन के आसन लिखे हैं प्रायः कामी जन उन आसनों के लिये कोकसार ढूढते हैं, वे आसन, बैठे, तिरछे, ऊपर, नीचे होकर टेढी बैंढी रीतिसे मैथुन करना बतलाते हैं परन्तु उन आसनों के अनुसार मैथुन करने में प्राण जाने का सन्देह है तथा काम ध्वज और योनि में रोग होजाने का पूरा भय है, ये आसन आसुरी हैं, सृष्टि के विरुद्ध नियम के विरुद्ध. सभ्यता के विरुद्ध हैं, इसीसे सरकार ने उन आसनों का प्रसिद्ध करना बन्द कर दिया है, ॥

गर्भाधान विधि—प्राचीन ऋषि महात्माओं का बचन है कि वर्ष भरमें केवल एक बार अपनी स्त्री में सन्तानोत्पति निमित्त मैथुन द्वारा गर्भाधान करें, जिसदिन स्त्री रजस्वला होती है उस दिनसे सोलह दिन तक रज रहता है, इस कारण सोलह दिनतक गर्भाधान हो सकता है, जैसे दिन के होनेपर कमल बंद हो जाता है उसी प्रकार सोलह दिन व्यतीत होजाने पर स्त्री के गर्भाशयका मुख बंद हो जाता है, । इस कारण रजस्वला होने के दिनसे पहले

तीन दिन और ग्यारहवां तेरहवां दिन छोडकर ग्यारह दिन गर्भाधान करे, पुत्रकी कामना हो तो ४।६।८।१०।१२।१४।१६ इन सम दिनों में गर्भाधान करे, और कन्या की इच्छा हो तो ५।७।६।११ १३।१५ इन विषम दिनों में गर्भाधान करे, । रजस्वला दिनसे पांचवें दिन गर्भाधान से सौभाग्यवती कन्या, छटे दिन अपने समान पुत्र, सातवें दिन सुशीला कन्या, आठवें दिन बलवान् पुत्र, नवेदिन भाग्यवती कन्या, दशवें दिन बुद्धिमान्पुत्र, ग्यारह में दिन अधर्मिणी कन्या, बारहवें दिन पुरुषार्थी पुत्र, तेरहवेंदिन महा पापिनी कन्या,चौदहवें दिन सुशील और धर्मात्मा पुत्र, पँद्रहवें दिन पतिव्रता और साध्वी कन्या सोलहवें दिन गम्भीर बुद्धि वाला पुत्र उतपन्न होवै है, । शेश चोदह दिनमें गर्भाधान करना वृथा है, १४ दिन ऊपर भूमिमें बीज बोने के समान वृथा है, ।

इच्छा के अनुसार संतान उत्पन्न करना—प्रायः लोगों का कथन है कि इच्छा नुसार संतान कैसे उत्पन्न हो सकती है, यह तो दैवी गति है परंतु यह बात नहीं है, अपने ही आधीन है, इसमें अनेका नेक प्रमाण हैं उनको यहां विस्तार भयके

कारण नहीं लिखा, । रजस्वला स्त्री स्नान करके जैसे पुरुष को देखती है, वैसा ही बालक उसकी इच्छानुसार उत्पन्न होता है, और गर्भवती स्त्री जैसे पुरुष का ध्यान करती है वैसी ही सन्तान होती है। रजस्वला दिनसे विषम दिनों कन्या और सम दिनों में पुत्रका होना तो अपने ही आधीन है, । रति के समय स्त्री बायें करवट होतो पुत्र, तथा वीर्य अधिक होने से पुत्र और रजअधिक होने से कन्या की उत्पत्ति होती है, । जोगोरे रंग पुष्ट पराक्रमी व सुन्दर पुत्र की कामना हो तो स्नान के दिन से स्त्री सातदिन जौके मन्थ में शहत डाल सफेद गाय के दूध के साथ सेवन करे, संध्याकाल में बहुत सफेद बैल अथवा घोडा का दर्शन करे, । यदि धर्मात्मा पुत्र की इच्छा होते हरिश्चन्द्र व युधिष्ठिर आदि के चरित्र सुनै, । यदि आज्ञाकारी व वीर पुत्र की कामना होतो महाभारत आदि की कथा सुनै, । यदि रसिक पुत्र की कामना होतो कृष्ण चरित्र सुनै, पढै, ध्यान करै, ॥ विशेष देखना समझना हो तो लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस की छपी हुई कोकसार वैद्यक को देखो,। कोकसार सम्बंधी अन्य अनेक बातें और औषधियाँ इस ग्रन्थ में जहाँ तहाँ लिखी हैं वहां देख लेना चाहिये, जिससे आवश्यक बातों का ज्ञान होकर परमसुख प्राप्त होवै, ॥

दो० — नारायन धरि ध्यान उर, सीताराम सुधार ।
कोकसार को सार लिखि, कियो पूर्ण अधिकार ॥१॥

इतश्री बृहद्रसराज महोदधो द्वितीय भागे कोकसार वर्णनो-
नाम चतुर्थोऽधिकार ॥४॥ शुभमस्तु

दूसरा भाग समाप्त ।